❋ ग्रन्थ परिचय ❋

श्री गुणचन्द्र रचित ११ ००।हजार श्लोकों में प्राकृत भाषा में बनाया हुआ और श्री भावार्य तथा कल्प सूत्र प्रमुख सूत्रों में विस्तार है। उन्हीं से यहां २७ भव पूर्व सहित रचना युक्त इतिहास करीब १४ हजार ग्रन्थ हिन्दी में इतिहास मुख्य है श्री सूर्य वंशी ज्ञात पुत्र श्री वर्द्धमान द्वितीय नाम श्री महावीर प्रभु ने घोर तपश्चर्य, कर केवल ज्ञान केवल दर्शन प्राप्त किया तथा यज्ञ में य होमादि में पशुओं का बलिदान की हिंसा के निरोध उपदेश दाता और इन्द्र भूति प्रमुख चार वेद चौदह वि पारगामी ब्राह्मणों को दिक्षित कर अहिंसा का झंडा लहरा- धर्म में जाति निर्विवाद धन का प्रवचन कहे। जिस से चा- वर्ण पशु तक धर्माधिकारी बनाकर मोक्ष पथ गामी बनाये और आप बहत्तर वर्ष सर्वायु पूर्ण कर मोक्ष को प्राप्त हु

निवेदक—भवदीय हृहीतेच्छु
मुनी ऋषि राम

शास्त्र प्राप्ति स्थान —

ला: कालूराम विश्वनाथ — रमेचन्द्र बाबूराम
कमोच राव ४० भाव जि हिसार
रोहत,

प्रस्तावना

शैली गुण विस्तार की दृष्टि से काव्य के अनेक भेद हो जाते हैं। सब से प्रथम इन्द्रियों के आधार पर इसके दो भेद श्रव्य काव्य और दृश्य काव्य। दृश्य काव्य अभिनय को देख कर किया जाता है आँखों से। और श्रव्य काव्य कानों से सुनकर आनन्द लेता है। अभिनेता काव्य का अभिनय रचना हाव भाव आंगिक चेष्टाओं के द्वारा उसका भाव दिखा देता है। दर्शकों के भाव देख कर इस कारण शिक्षित अशिक्षित दोनों को आनन्द उपजा जाता है। श्रव्य काव्य शिक्षितों को ही आनन्द उपजाता है। जो शब्द के मर्म को समझते हैं। उन्हें ही आनन्द उपजाता है। हिन्दी में ज्यादातर नाटक का प्रचलन है। नाटक जीवन की कहानी आदि को नृत्य के रूप में गायन द्वारा तथा चेष्टायें कर उसका भाव दिखाना। भाषा द्वारा नाटक के तीन भेद—नाटक सम्पूर्ण जीवन की झाकी (१)। एकाकी नाटक एक अंश को लेकर (२)। हमन वेश भूषा कथानक द्वारा हास्य रस उत्पन्न करने वाला (३)। शैली (रचना) रूप काव्य के तीन भेद— पद्य (१), गद्य (२), चम्पू (३)। और चमत्कार रूप में तीन भेद— उत्तम (१), मध्यम (२), कनिष्ट (३)। श्रव्य काव्य अर्थ के क्रम से २ भेद—प्रबन्ध काव्य (१) और मुक्तक काव्य (२)। प्रबन्ध काव्य की रचना दो प्रकार से की जाती है— महा काव्य (१)। तथा खण्ड काव्य (२)। महाकाव्य सम्पूर्ण जीवन का चित्रण होता है। और खण्ड काव्य किसी जीवन के अंश का भाव दिखाया जाता है। अनेक सर्गो में जीवन इतिहास तथा कथा [illegible] प्रकृति वर्णन आदि शृंगार शान्त वीर रस प्रधान होते हैं। [illegible] की नव ही रस होते हैं। महापुरुषों का वंश आदि वर्णन होता है। मुक्तक काव्य में कोई खास विस्तार नहीं होता। कथानक क्रमबद्ध नहीं होता। अपने आप रचना पदादि रचना नहीं हो अपने स्वतन्त्र

विचारों से रचे। तथा निबन्ध के दा भेद— शैली (१) तथा विचार (२)। तथा निबन्ध सात प्रकार—वर्णनात्मक—स्मार्क तथा आविष्कार आदि वर्णन हो (१)। विचारात्मक—किसी वस्तु गुण औगुण पर विचार करे तथा मरन आदि करने पर (२)। आलोचनात्मक—गुण औगुण किसी मनुष्य का कार्यादि पर विवेचन कर (३)। इति वृत्तात्मक—महापुरुषों की जीवन झाँकी प्रस्तुत किया जाय (४)। कथात्मक—कहानी रूप में लिखा जाय (५)। तुलनात्मक—किसी पुरुष या वाक्यों की तुलना किया जाय (६)। भावात्मक—गुण औगुण महिमा पूजा। हिंसा आदि की निन्दा भावपूर्ण किया जाय (७)। काव्य के मूल भूत शब्द तथा अर्थ रूप दो भेद होते हैं। शब्दात्मक सहायक शब्द में अर्थ बहुत (१)—भावपूर्ण भरा हुआ हो। शब्द में वह मधुरता जो आनन्द देता है। भक्ति प्रेमादि भाव हो। शब्दालंकार शब्द की सुन्दरता का नाम है। अर्थालंकार भाव परिपूर्ण हो वह अर्थालंकार है जिसमें जो रस वर्णन करें उसको पूर्ण समझाया हुआ हो। अलंकार को निम्न भागों में बाटा जाता है—(१) उपमालंकार—एक की एक की उपमा जैसे स्त्री का चन्द्र बदनी या आदि। यह साम्य मूलक अलंकार है। उपमा रूपक उत्प्रेक्षा आदि। (२) विरोध मूलक—जहाँ विरोधक वस्तु का वर्णन हो। जैसे विरोध विभावना असंगति विषम। (३) शृंखला मूलक—जहाँ वस्तु का वर्णन क्रम से हो। जैसे कारण माला एकावली माला विषक सार, (४) अन्य संसर्ग मूलक—जहाँ किसी दूसरी वस्तु से संसर्ग चमत्कार का वर्णन हो। जैसे द्विगुण काव्य लिंग मीलित आदि। (५) गूढार्थ प्रतीति मूलक—जहाँ व्यंगयार्थ की प्रतीत कराई जाती है। जैसे व्याजाकित वक्राकित आदि। छन्द मानो भाषा के पुत्र हैं। छन्द और भाषा समकालीन ही कहे जाते हैं। अलंकार भाषा रूपी सुन्दरी का शृंगार समझा जाता है। प्राचीन काल से प्रचलित हिन्दी भाषा छन्द—दोहा सोरठा दोहा चौपाई, गीतिका छन्द कुण्डलियाँ छप्पय

इत्यादि मात्रा छन्द, मनहर कवित, इन्दव छन्द सवैया, पधरी, कइरवा। त्रिभगी, दुमिला, त्रोटक, आदि कतिपय वर्ण छन्द और सस्कृत में शिखरणी, मालिनी, द्रुत विलम्बीत, सार्दुल हैं। विक्रीड़ित, हिरणी, स्रग्धरा, वसन्त तिलका, रथोद्धता। इत्यादिन्द्र वज्रा, उपेन्द्र वज्रा, स्रगविणी, अनुष्टप आदि सैंकड़ो प्रकार हैं। मोक्तिक दाम, नाराच भुजग प्रयात आदि अनेक भेद हिन्दी भाषा, सस्कृत भाषा दोनो मे होते है। वैसे तो हिन्दी मे सर्व छन्द रचे जाते हैं। प्राकृत भाषा में अनुष्टप छन्द, आर्य छन्द, वेतालीक छन्द कई प्रकार के होते है। ऐसे ही प्राय अर्धमागधी मे भी होते हैं।

वर्तमान कवि प्राय गीतों में ही रचते हैं। परन्तु फिर भी चार प्रकार से लिखते हैं। उभय छन्द, स्वछन्द, मुक्तक छन्द, मीलीत छन्द। उभय छन्द—मात्रा तथा वर्णों की सख्या होती है। साथ में यति अनुप्रास भी होता है। स्वछन्द—मात्रा, वर्ण गण, चौक आदि प्राय नहीं सम है। मुक्तक छन्द- वाक्य रचना चलती है \ चरण के मध्य मे ही वाक्य पूर्ण हो जाते हैं। तो वहीं पूर्ण विराम लगा दिया जाता है। यह छन्द केवल मात्राओ के सहारे चलता है। मिलीन छन्द —किसी छन्द के चार चरण की बजाय छ चरण हो। मिलीनपाद छन्द कहा जाता है।

वर्धमान प्रबन्ध में गायन तथा छन्द आदि बनाये हुये हैं। नवरस व्याख्या है। पर इसमें दो रस प्राय की व्याख्या है—वीर रस तपस्चर्या में, और शात रस दीक्षाचर्या मे। और यह निबन्ध अर्धमागधी शुत्रों से तथा प्राकृत वर्धमान प्रबन्ध से हिन्दी मे प्राय अनुवाद रूप रचा गया है। कतीपय शब्द खास सस्कृत में ही दिये हैं। और कतिपय शब्द प्राकृत के भी रख दिये हैं। कतिपय शब्द राजस्थानी भाषा के भी रख दिये हैं। कई शब्द हरियाणा देश की भाषा के भी है। हरियाणा देश वर्तमान में पजाब प्रात के

७ जिल्दों में विभक्त है। शब्द का अनुवाद करने में दृष्टि भ्रम से यदि भूल रही हो तो सज्जन मन क्षमा करें और शब्द सुधार कर अध्ययन करें।

मैंने भक्ति वश ही यह महावीर भगवान का जीवन इतिहास रचा है। और छपाने के प्रूफ में यदि छपाई कोई अशुद्धी रही हो वह ध्यान देकर शुद्ध पढ़े।

भवदीय—
हितेच्छु मुनी रिषीराम

भगवत श्री महावीर स्वामी जी के २७ भवों के नाम

१—नयसार २—प्रथम कल्प ३—मिरीची ४—ब्रह्म कल्प ५—कौशिक ६—स्वर्ग लोक ७—पुष्प मित्र ८—सुधर्म स्वर्ग ९—अग्नि द्योति १०—ईशान कल्प ११—अग्निभूति १२—तिजै कल्प १३—भारद्वाज विप्र १४—महेन्द्र कल्प १५—स्थावर, १६—ब्रह्म कल्प १७—विश्वभूति १८—महा शुक्र १९—त्रिपृष्ट वासु देव २०—सप्तम नरक फिर शेर फिर नरक फिर संसार भ्रमण फिर शेर, २१—प्रथम स्वर्ग २२—कनकोज्वल कुमर, २३—लांतक स्वर्ग २४—प्रिय मित्र चक्री, २५—महा शुक्र कल्प २६—नन्दन नृप २७—प्राणत कल्प २८—श्री महावीर स्वामी।

भूमिका

भगवान् श्री वर्धमान द्वितीय प्रसिद्ध नाम महावीर विक्रम सम्वत् २५४२ वर्ष पहिले जन्म हो चुका था। आपका ७२ (बहत्तर) हायन का आयु था। चारसौ सत्तर वर्ष विक्रम सम्वत से पहिले निर्वाण गमन करा था। ई० सन् पाच सौ निनानवे वर्ष पहिले जयन्ती देव मनुष्यों ने मनाई थी। आप जन्म से ही अहिंसा के पक्षपाती थे। धर्म में जातिवाद के निषेदक थे। धर्म को अपनावे वही धर्म का अधिकारी है। क्षत्रिय, वैश्य, ब्राह्मण तथा शूद्र चारो वर्ण दीक्षा शिक्षा धारण योग्य हो वह धार सकतें हैं। नवकार, मन्त्र आदि जाप करके लाभ उठा सकते हैं। पुरुष स्त्री का भी कोई प्रश्न नहीं। सन्यास ब्राह्मण ही धारें। और गायत्री मन्त्र शुद्र और स्त्री को जपने का निषेध करते हैं। ऐसा पक्षपात भगवत् महावीर ने नहीं फरमाया और अहिंसा मय प्रवचन व्यक्त किये।

यत धम्मोमगल मुक्किठ्ठ, अहिसा सजमो तवो। धर्म मगल उत्कृष्ट है। अहिसा प्रथम धर्म है। वही सयम तप है। तथा एव खुनाणिणा सार, जर्हिसइ किंचण, निश्चय ज्ञान पाय का सार यही है। जो किंचित हिंसा नहीं करता तथा यत सव्वे जीवावि इच्छन्ति, जीविय न मरीजियो—सर्व जीव जीना ही चाहते है। मरना नहीं चाहते।

यत अहिंस सच्चच अतेणगच, ततो अबभ च अपरि ग्गहच, यह पच महाव्रत रूप धर्म भगवत ने फरमाया जिसमें अहिंसा मुख्य प्रथम धर्म कहा तथा यत दानाण सेठ्ठ अभयप्पाण। सर्व दानोमय श्रेष्ठ अभयदान कहा। अहिसा के साठ नाम प्रभु महावीर ने कहे। अहिंसा, दया, निवृति, अभय, शिव, पुष्टि, समाधि, रिधी को देने वाली इस वास्ते रिधि। वृद्धि आत्मगुण लक्ष्मी की वृद्धिकारी तथा सुख सम्पति की वृद्धिकारक, कल्याण, मगल,

प्रमोद, विभूति रक्षा यत्ना आश्वास विश्राम पवित्र इत्यादि (पच्चीसि) नाम कहे। प्रथम सम्वर द्वार प्रश्न व्याकरण सूत्र में। धर्म का उद्देश्य सद्भावना और प्रेम बढ़ाना।

सन् १६५७, नवम्बर तारीख ११ नव भारत दिल्ली में सोमवार को विश्व धर्म सम्मेलन के प्रतिनिधियों में श्री ढेबर का भाषण— दुनिया को धर्म की बहुत आवश्यकता है। परन्तु ऐसे धर्म की जिसरों झगड़े न बढ़े और जिसे हम पचा सकें। वास्तव में धर्म का उद्देश्य तो सद्भावना और प्रेम का बढ़ाना तथा मानव का उन्नत बनाना है। लाल किले के ऐतिहासिक दिवान खान में आम सभा में भाषण देते हुए कांग्रेस के अध्यक्ष श्री उच्छरंग राय नवल ढेबर ने कहे।

श्री ढेबर ने कहा—कि धार्मिक अवसरों पर तो वही कुछ बोलने का अधिकार रखते है जिन्होंने कुछ साधना की हो। मैं तो यहां एक शिष्य बनकर कुछ सीखने आया हूँ। आपने आगे कहा—कि धर्म राजनीति अथवा विज्ञान म कोई विरोध नहीं ऐसा मैं नहीं मानता। आपने कहा—कि राष्ट्रपिता महात्मा गान्धी मे हमें बताया कि धर्म ऐसा हो जिसे जनता अपने जीवन में उतार सके। अहिंसा सत्य परोपकार आदि ऐसे मूल मूत सिद्धांत हैं। जिन्हें जनता आसानी से अपना सकती है। श्री ढेबर ने कहा—धर्म यदि नीचे गिरे आदमी को नहीं उठा सकता। तो उसे धर्म नहीं माना जा सकता।

प्रवचनकार—भगवान महावीर देव न दा पदों में ही रहस्य बत लाया था। ईसवी सन् पांच सौ अठसठ (५६८) वर्ष पहिले उपदेश में। तव सव्वहिं भूयहिं दयाणु कम्पी खन्ति खमे संजम बंभयारी।

सर्व भूत जीवों की दया अनुकम्पा भाव रखें और क्षमा आपसे दुर्वचन आदि कष्टों को सहें। अपने इन्द्रीय कषाय को संयम में रख कर वस करें और ब्रह्मचारी बनें।

सम्मिस्स भाग तस्सभावराय, दंस करे समणा महायाया

समस्त लोक म त्रासथावर प्राणीयों का क्षेम करने पाले श्रमण

तपस्वी माहन किसी को मत हणो। ऐसा उपदेश है। अर्थात् हिलते चलते तथा स्थिर रहने वाले जीवों को नहीं सतावें। ऐसे प्रवचन हैं। ऐसे महावीर भगवन्त ने उपदेश दिया और आपको हनने वाले सुर मनुष्य (त्रियंच) पशु आदि, शक्तिवान होते हुये भी किसी को वापिस मारने की मन मे भी चिन्तवना न करी, ऐसा दर्शन इस चरित्र में जगह २ है। जो भगवान महावीर देव ने सर्व सुखों का निधि अहिंसा प्रश्न व्याकरण तथा आचारंग आदि सूत्रो मे दिखाया है। आज वर्तमान में कांग्रेस के नेता राष्ट्रपिता महात्मा गांधी अहिंसा द्वारा आजादी कराने वाले उनके शिष्य वर्तमान मे सर्वोदय भूदान यज्ञ के नेता सन्त विनोबा भावे द्वारा सतत सेवा की प्रेरणा। दिल्ली, ६ मार्च, १६५६ नवभारत से राजस्थान गगवाना मे उद्गार। आचार्य विनोवा भावे ने सम्मेलन में अपने महत्वपूर्ण भाषण के दौरान में कहा कि अहिंसा में शांति और रक्षण दोनों ही शक्तिया हैं। हिंसा सिद्धांतत. संहार का प्रतीक है। एकाग्रता के साथ हमें लक्ष्य पथ पर अग्रसर होते रहना है। एकाग्रता मे समग्रता के स्वय ही दर्शन हो जाते हैं। शान्ति, सैनिक दया और विवेक के साथ साम्य युग को लाने में शक्ति लगायेंगे। सतत सेवा तो शांति सैनिकों का आधार होगा ही। अहिंसा में शक्ति भरी पड़ी है सन्त विनोबा भावे ने कहा कि शिक्षण प्रशिक्षण भक्तिमय संगीत निरंतर सेवा व्यवस्था शास्त्र व अनुशासन और क्षोभ रहित चिन्तन शांति सैनिकों के लिये आवश्यक है। जिससे गुण और संख्या दोनों में ही व्यापकता आ जायगी।

ग्रन्थकारक। भगवान महावीर ने कहा--अहिंसा भगवती कैसी है? भयवान को कोई सरण प्रतिष्ट करे।१। पक्षी को जैसे गगन आधार।२। प्यासातुर को जल।३। क्षुधातुर को अशन।४। समुद्र में यान पात्र।५। चतुष्पद को आश्रम स्थान।६। रोगी को औषधि।७। अटवी में भूले को मनुष्यों को साथ आधार है।८। ऐसे प्राणियों को श्रेष्टतर अहिंसा भगवति कही। १८ व्याकरण सूत्र में।

दिल्ली नवम्बर तारीख सात १९५८, नवभारत तारीख १७। हमने हिंसा के द्वारा बहुत युद्ध होते देखा है। अहिंसा के मार्ग परम्परा से भी इतिहास प्रसिद्ध घटनायें हुई हैं। लेकिन पहिले से अधिक आज हमें अहिंसा की ओर जाना है। यदि हमारा यह दृढ़ संकल्प रहा तो विश्व शांति का मार्ग सुगम हो जायगा। उक्त शब्द भारत सरकार के वित्त मन्त्री श्री मुरार जी भाई ने आज प्रातः काल दिल्ली टाउन हाल में कहे। आपने कहा हम दुनिया को अहिंसा की बात कहते हैं। लेकिन हम अपने व्यवहार में अहिंसा को प्राथमिकता नहीं देते।

अहिंसा के बारे में बोलने का अधिकारी वही है जिसने अहिंसा की साधना की है। उसे जीवन में उतारना है। सच्च तो यह है कि अहिंसा का प्रचार यही कर सकते हैं।

सम्पादक—भगवत का वक्तव्य

पुरीसा तममेव तुम मित्तं किंबहिया मित्त मिच्छसी।

आचारंग सूत्र स्क० ३ ॥१॥ अध्याय १ उद्देशक १

हे पुरुष तू ही तुम्हारा मित्र है। क्या बाहिर मित्रों को चाहता है।

अहिंसा भारतीय संस्कृति प्रधान व अंग भारत के प्रथम उपराष्ट्रपति प्रो० एम कृष्णामूर्ति ने अहिंसा पर अपने विचार व्यक्त करते हुये कहा—भारतीय संस्कृति में अहिंसा को सदैव शीर्ष स्थान दिया। भारतीय आचार विचार में अहिंसा की आधार साहित्य प्रमुख होते हुये भी व्यवहार में इतनी प्रबल नहीं रही। लेकिन उसकी प्रमुखता में कभी संदिग्ध नहीं रही।

१७ नवम्बर १९५७ नवभारत।

दिल्ली शनिवार, आज प्रातः काल साढ़े सात बजे श्री जैन मिशन के तत्वावधान में—इ मर्केल के श्री अल्बर्ट रेख ने कहा—कि भारत अहिंसा और शाकाहार का आध्य मराव है। यहां की पावन भूमि से अहिंसा और मूक पशु पक्षियों के प्रति दया रखने की प्रवृत्ति भूमण्डल पर प्रसारित हुई है। हमें आशा है। यह देश सदैव

की भांति अपना नेतृत्व करता रहेगा। भारत के राष्ट्रपिता स्वयं महात्मा गान्धी की स्वरचित पुस्तक पढ़कर मैं १४ वर्ष से शाकाहारी बना हूँ। विश्व जैन मिशन के साहित्यय अध्ययन से अहिंसा और शाकाहार के प्रचार का सर्वोत्तम मानता हूँ। शाकाहारी हुये बिना निजका समाज का और देश का कल्याण हो नहीं। विश्व को शाकाहारी बनाने की बड़ी आवश्यकता है। उपर्युक्त मारमकि शब्दों को अमरीका के प्रसिद्ध पत्रकार उपन्यास लेखक श्री वुडुलेण्ड कालहार ने व्यक्त करते हुये कहा—कि अभी जो मुझे विश्व जैन मिशन ने सहायिक ग्रन्थ भेंट किये हैं। उनहे मैं अमरीकी विश्व विद्यालय का भेंट करूंगा।

भगवान बुद्ध और महावीर दोनों ही समकालीन थे। दोनो ही अहिंसा और-साकाहार के पवर्त्तक थे। कम्बोडिया के मन्दिरो में दोनों का एक साथ पूजा होती है। मानव का वास्तविक खाना साकाहार है। मानसाहार नहीं। कम्बोडिया के बौद्ध प्रतिनिधि श्री धर्मवीर मे अपने भाषण में इन शब्दों को कहा।

ब्रह्मा क प्रतिनिधि श्री हिलल ने कहा—कि ब्रह्मा के स्वतन्त्रता दिवस के साथ साथ महावीर दिवस, बुद्ध दिवस और कृष्ण दिवस मनाता है। क्योंकि इन्हीं तीनों ने जीव दया और साकाहार का उपदेश दिया है। मेरे देश में कानून के तौर से कसाई खाने बन्द हो चुके हैं। शताब्दियों से साकाहार को अपनाया जा रहा है। विश्व में शाकाहार की प्रवृति चेवे। इस उद्‌देश्य से हम यहा आये हैं।

पाकिस्तान के व्योवृद्ध प्रतिनिधि श्री महमुद ने बतलाया कि विश्व में सुख शाती का प्रमुख कारण शाकाहार ही है। शाकाहारी हुये बिना हम अपने जीवन में कुछ भी सफलता प्राप्त नहीं कर सकते। हर्ष है कि विश्व इस ओर झुका बढ़ता जा रहा है।

विषय अनुक्रमणिका

ॐ अर्हं श्री महावीर गौतमाय नम.

भगवन्त श्री महावीर प्रबन्ध

ॐ अर्हं श्री चिंतामणि पार्श्वनाथाय नम'

मम चिंता चूरय २ मनो वांछित पूरय २ ह्र स्वाहा

द्रुत विलम्बित छंद। प्रवर कुण्ड नराधिप नन्दन, चरमहव्रतपचचिकासक्रम

कृत सुरासुरमोक्ष महोत्सव, चरमतीर्थ पति सुतरा स्तवै

दोहा —सुख संपति दायक सदा, नायक तीर्थचार।

वायक अपूर्व वचध्वनी, पार्श्व हृदय धार ॥ १ ॥

जक्ताधार जगद् गुरु, त्रिशला नन्दन वीर।

मन वचन काया करी, प्रणमुंधर धीर ॥ २ ॥

वीर चरित्र दधिक्षीर सम, पीवे भर भर घूट।

हृदय दाह मिटाय कर, शिव सुख लहे अटूट ॥ ३ ॥

तुच्छ बुद्धि कर किम लहु, रत्नाकर नो पार।

फिर भी आशा पूर्ण, करूं कुछ गुण विस्तार ॥ ४ ॥

महा विदेह क्षेत्रे वप्राविजये नगर गुणे शोभित जयन्ति नामे नगरी थी। वहा पर नरेन्द्र गुणपरिपूर्ण शत्रु मर्दन नाम का राजा था। उस महिपति के ग्राम रक्षक क्षिती प्रतीष्टान नामे ग्राम मे नय सार नामे सरल स्वभावी विनयादि गुणोपपेत दया रस सहित परछिद्र देखने में अचक्षु साधु जन का सेवक था।

एक समय शत्रुमर्दन राजा ने नयसार को सुन्दर भवन बनाने के लिये अनेक वार्धिक तथा सेवक सकटों सहित लकड़ी लेने के लिये वन में भेजा।

के पारगामी धर्म देशना कहने लगे—

अहो महानुभाव मानुष्यत्त्व कुशल बुद्धि पन यह पाकर धर्म के विना धनुर्विद्या रहित बाण को छोड़ता हुआ राहवेध करने में कोई लाभ नहीं जैसे स्वर्ग और अपवर्ग रूप फल देने वाला धर्म कल्पवृक्ष ही है। इस वृक्ष का मूल सम्यक्त्त्व है मिथ्यात रूप पंक पटल से अविलुप्त ज्ञान रूप नयन को खोलने वाला सम्यक्तव ही मनुष्य के मुख्य है। करुणा पर बुद्धिवत युक्त अयुक्त कार्य उपदिष्ट करते हुए भी तुच्छ मति नहीं ग्रहण करे अज्ञानावृत गुरू के उपदेश से कार्य न करे वह जैसे औरों के लिये कूप खोदने वाला खुद ही डूब जावे। मिथ्यात्त्व के उदय से राग द्वेष युक्त अदेव को सुदेव माने। कुगुरू को सुगुरू कर ग्रहे जैसे सुवर्ण की बुद्धि से लेष्टु को ग्रहे। अठारह दोष रहित देव। पाच याम अर्थात् पाच महाव्रतधारी गुरू अहिंसा सत्य अस्तेय अमिथुन अपरिग्रह उक्त पाच याम ग्रहे दान शील तप भाव यह चार प्रकार के धर्म ग्रहे। यदि सम्यक्तव रूप कुठार लेकर भव तरू रूप वृक्ष छेदे ऐसे नयसार ने गुरू उपदेश सुनकर हाथ जोड़कर गुरू चरणाविंद में सिर झुका कर कहने लगा हे दयानिधे ऐसे अमूल्योपदेश से मेरे अन्तर हृदय में प्रका। हुआ आज से सम्यक्तव धर्म का ग्रहण किया। धर्म ग्रहण कर गुरू को पचाङ्ग नमस्कार कर सकटों को काष्ठ से भर कर नगर में प्रवेश कर राजा को प्रणाम कर कहा भवन योग्य दारु तय्यार है। अब प्रतिदिह जीवादि नव तत्त्व के ज्ञान से धर्माधर्म न्याय अन्याय को जान कर जूवादि सप्त व्यस्न रहीत प्रतिदिन राग द्वेष रहित पुरुषों का बताया हुआ ऐसा रास्ता वह जिन धर्म का अभ्यास करता हुआ मुनिजनों की आहार आदि योग्य सेवा करता हुआ जीव दया पालन कर तो साधर्मी जनों का बहु मान कर जिन शासन की प्रभावना करता हुआ काल बिता रहा है। अनुक्रमे क्षणभगुर शरीर को छोड़ कर सम्यक प्रकार कर सम्यक्तव आराधन कर पच नमस्कार मन्त्र स्मर्ण करके सोधर्म स्वर्ग में उत्पन्न हुआ। देवलोक के सुख भोग रहा है और पिछले जन्म को याद कर सम्यक्तव धर्म को प्राप्त कर जिनेन्द्रादि की सेवा कर जन्म का लाभ उठा रहा है। इति श्री वर्धमान चरित्रे नयसार १ तथा प्रथम [illegible] समाप्त

उस महा अटवी में साधु मार्ग भ्रसम्य भूख प्यास से पीड़ित कोमल पद तल भलते हुए स्वेद से शरीर भरन के समान भरता हुआ मुखारविन्द परि मिलित पद्मा के समान युग प्रमाण भूमी जोवते हुये ऐसे समुह सैन तपोधन को आते हुए देखकर नयसार ससंभ्रम मुनि के पास गया अत्यन्त करुणा रस से हृदय परिपूरित भावयमी के चरणों का नमस्कार किया और पूछता हुआ हे भगवम् ऐसे विजन घोर वन का विहार कैसे स्वीकार किया। अनागार कहने लगे हे भद्र एक साथ अर्थात् जनसमूह सम विहार करते एक जगह स्थित हुए। हम ग्राम में भोजन पाणी लेने गये साथ वाले प छे से हमें छोड़ कर चल दिये। हमें पीछे आप साथ वालों के पीछे चले। मार्ग भ्रष्ट होकर इस महा अटवी में पड़े। ग्राम रक्षक कहने लगा कैसे करुणाहीन विश्वासघाती दुराचारी कुलकलंकी पाप भार बढ़ाने वाले साथ वाहक ऐसे धर्मा मा निम्र न्थ को छोड़ कर चले गये।

हे भिक्षु आयो मेरे साथ मेरे स्थान पर पधारने की कृपा करो। ऐसे कहने पर धनुष्यमात्र भूमी देखते हुए नयसार के स्थान गये। प्रत्यक्ष धर्म निधि के तुल्य पुरुष उस साधु के दर्शन कर विश्र श्रद्धा से धर्म प्रेम उत्पन्न हुआ। विपुल असन पान विधि पूर्वक मामचिन्तक ने मुनियों को प्रतिलाभित किये। भक्त पान को ग्रहण करके वहां से प्रतिनिवर्त होकर जीव रक्षा करते हुए शुद्ध भूमी में जाकर ईर्या पथिक प्रतिक्रमण कर भक्त पाणी को देख कर भगवान की स्तुति कर विधियुक्त आलोचना कर स्वाध्याय तथा शुभ ध्यान कर राग द्वेप रहित मुनियों ने आहार किया।

ग्राम चिन्तक म अपने को दान देकर कृतार्थ मानता हुआ साधु समीप जीम कर आया और कहने लगा हे मुने आओ आप जहां ग्राम नगर में जाना चाहो वहां का आप को रास्ता दिखलाऊं। साधु भी उस के साथ चले। उन साधुओं में से एक मुनि चपलबुद्धि धन्य मैं जाना यह भद्रालु धर्म योग्य है इस का अवश्य धर्म का स्वरूप कहूं। ऐसे विचार कर उस ग्रामचिन्तक को कहने लगे हे महा भाग्य तुझे हम धर्म शिक्षा देना चाहते हैं। ग्रामरक्षक ने कहा हे भदंत जो कुछ भी मुझे अनुशासित करना चाहते हो आप का शिष्य समझ कर कहो। तब साधु भी धर्म शास्त्र

के पारगामी धर्म देशना कहने लगे—

अहो महानुभाव मानुष्यत्व कुशल बुद्धि पन यह पाकर धर्म के विना धनुर्विद्या रहित बाण को छोड़ता हुआ राहवेध करने में कोई लाभ नहीं जैसे स्वर्ग और अपवर्ग रूप फल देने वाला धर्म कल्पवृक्ष ही है। इस वृक्ष का मूल सम्यक्त्व है मिथ्यात रूप पक पटल से अविलुप्त ज्ञान रूप नयन को खोलने वाला सम्यक्तव ही मनुष्य के मुख्य है। करुणा पर बुद्धिवत युक्त अयुक्त कार्य उपदिष्ट करते हुए भी तुच्छ मति नहीं ग्रहण करें अज्ञा-नावृत गुरू के उपदेश से कार्य न करे वह जैसे औरों के लिये कूप खोदने वाला खुद ही डूब जावे। मिथ्यात्त्व के उदय से राग द्वेष युक्त अदेव को सुदेव माने। कुगुरू को सुगुरू कर ग्रहै जैसे सुवर्ण की बुद्धि से लेष्टु को ग्रहै। अठारह दोष रहित देव। पाच याम अर्थात् पाच महाव्रतधारी गुरू अहिंसा सत्य अस्तेय अमिथुन अपरिग्रह उक्त पाच याम ग्रहै दान शील तप भाव यह चार प्रकार के धर्म ग्रहै। यदि सम्यक्तव रूप कुठार लेकर भव तरू रूप वृक्ष छेदे ऐसे नयसार ने गुरू उपदेश सुनकर हाथ जोड़कर गुरू चरणाविंद में सिर झुका कर कहने लगा हे दयानिधे ऐसे अमूल्योपदेश से मेरे अन्तर हृदय में प्रका। हुआ आज से सम्यक्तव धर्म का ग्रहण किया। धर्म ग्रहण कर गुरू को पंचाङ्ग नमस्कार कर सकटों को काष्ठ से भर कर नगर में प्रवेश कर राजा को प्रणाम कर कहा भवन योग्य दारु तय्यार है। अब प्रतिदिह जीवादि नव तत्त्व के ज्ञान से धर्माधर्म न्याय अन्याय को जान कर जूवादि मप्त व्यस्न रहीत प्रतिदिन राग द्वेष रहित पुरुषों का बताया हुआ ऐसा रास्ता वह जिन धर्म का अभ्यास करता हुआ मुनिजनों की आहार आदि योग्य सेवा करता हुआ जीव दया पालन कर तो साधर्मी जनों का वहु मान कर जिन शाशान की प्रभावना करता हुआ काल विता रहा है। अनुक्रमे क्षणभगुर शरीर को छोड़ कर सम्यक प्रकार कर सम्यक्तव आराधन कर पच नमस्कार मन्त्र स्मर्ण करके सोधर्म स्वर्ग में उत्पन्न हुआ। देवलोक के सुख भोग रहा है और पिछले जन्म को याद कर सम्यस्तव धर्म को प्राप्त कर जिनेन्द्रादि की सेवा कर जन्म का लाभ उठा रहा है। इति श्री वर्धमान चरित्रे नयमार १ तुथा प्रथम स्वर्ग गमन रूप २ प्रथम प्रस्ताव समाप्त

दूजे प्रस्ताव में वनिता नगरी ऋषभदेव भगवान प्रथम तीर्थंकर का जन्म उन के सुमंगला सुनन्दा नामे दोनों ऋषभदेव की अग्रमहेषी भरतादि शत पुत्र तथा ब्राह्मी सुन्दरी दो पुत्री का जन्मादि का विस्तार तथा भरतादि को राज्य देकर दीक्षा ग्रहण कर केवल ज्ञान प्राप्त कर भरतादिक को उपदेश दिया भरत चक्री सम्यक्त्व सहित भगवत सेवा में अनुरक्त भरत चक्री पुत्र पुण्डरीकादिक का दीक्षादि वर्णन जम्बु द्वीप प्रज्ञप्ति तथा ऋषभ चरित्र तथा पुण्डरीक चरित्र से जानना।

सुधर्म स्वर्ग से देव भव पूर्ण कर भरत चक्रवर्ती की वर्मा रानी की कुक्ष में सूर्य मिरीच अर्थात् किरणों का जाल प्रसारण करता हुआ प्रवेश किया अनुक्रमे सवानो मास से जन्म हुआ स्वप्नानुसार मरीची नाम दिया। अनुक्रमेण मरीचि कुमार युवक हुआ। एक दिन ऋषभदेव भगवान विनीता अयोध्या नगर पधारे। अशोकादि अष्ट महा प्रति हार्य की विभूती देख कर तथा लोकालोक स्वरूप भूत वर्तमान भविष्यत का ज्ञानमय योजन गामिनी वाणी सुन कर विषयों से विरक्त होकर दीक्षा ग्रहण की। पीछे पंच सुमति तीन गुप्ती पंच महा व्रत की रक्षा में जिस का हृदय है शरीर से भी निरापेक्ष है। रत्नों का व्यापारी के समान गुण रत्नों का संचय करने वाला साधु की चोरासी उपमा जो अनुयोग द्वार सूत्र में वर्णन है ऐसे गुण युक्त स्थविरों के पास शास्त्राभ्यास कर एकादशांगी सूत्र पीटक का जानकार हुआ। ऋषभदेव स्वामी के साथ विचरण कर रहा है।

इस अवसर में भरत चक्रवर्ती के चक्र रत्न आयुध शाला में प्रकट हुआ। उस के हजार वर्ष उत्सव किये बाद में चक्र आयुध शाला से निकल कर चला भरत चक्री का देश साधन राजाओं को आज्ञा मनाना तथा अठ्ठानवे भाईयों पर चढ़कर जाना और अठाणवें भ्रात ऋषभदेव भगवान के पास दीक्षा ग्रहण करना और बाहूबली पर चढ़ाई करना और इन्द्र के आग्रह से पांच प्रकार के युद्ध में भरत का हारना और बाहूबली जी को शुद्ध विचार आना अपनी मुष्टी अपने सिर पर रख कर लोच कर स्वयमेव दीक्षा ग्रहण करना अठाणवें भाईयों को छोटे जानकर दीक्षा में बड़े हैं। उन को नमस्कार न करने के कारण बारह मास वन में एकासन कायोत्सर्ग

मुद्रा मे खड़े रहते हुये भी केवल ज्ञान नहीं पाना। आदि नाथ प्रभु ने ब्राह्मी सुन्दरी को समझाने के लिये वन मे भेज कर प्रतिबोध दिलाना अठानवें भाईयों को वन्दन करने का धार कर ऋषभदेव स्वामी के पास आने के लिये एक पद आगे रखते ही क्षपक श्रेणी चढकर केवल ज्ञान बाहूबली जी प्राप्त हुये। विवरण जम्बु द्वीप प्रग्यप्ति से तथा ऋषभचरित्र त्रिशष्टी शिला का पुरुष चरित्र से जानना।

और भरत चक्री पट पट्टाधिप होकर राज्य करने लगे आदि मे भरत चक्री हुये इस से भारत कहलाया तथा भरत नाम का देवता भारत का स्वामी है जिस से भारतवर्ष कहलाता है।

अब मरीची दश प्रकार समाचारी समाचरता सिद्धान्तानुसार अष्टा दशा सहस्र शीलागरथ के गुण युक्त सयम पालन करते अनेक वर्षों के बाद ग्रीष्म समय महाताप से शरीर शोपित होने पर ज्वाला के समान हवा के झोले लगने पर और अस्नान के कारण मल मलिन तनु प्रस्वेद झरने से कष्ट मानने लगा चारित्रावर्णी कर्म के दोप से अन्तो कोटा कोटी सागर ससार पर भ्रमण करना वाकी है जिस से सयम अत्यन्त दृढ़ होते हुये भी गुरुकुल वास मे बसते छठ अष्टमादि तप करते भी शुत्रार्थ जानकार होते हुये भी प्यास वस तथा मैल परिसह के कारण चारीत्र से मन विचलित हुआ।

अहो कर्म गति विचित्र है जो मोहरिपु के चक्रव्युह में फस कर अपने शुद्ध सयम जीवन से हाथ धो बैठे। मरीची ने मन में विचार किया कि भरतचक्री का पुत्र होकर भी मैं चारित्र से विचलित हुआ और उन्हों ने समस्त भारतवर्ष अपनी भुजा से बस किया मैं वीर पुत्र होकर कायर बन रहा हु मुझे चारीत्र छोड़ कर गृहवास अंगीकार करने में बड़ी लज्जा आती है अब क्या करना चाहिये ऐसा विचार करने पर यह विचार उत्पन्न हुआ कि भगवान के साधु मन वचन काया अशुभ व्यापार तीन दण्ड से अपनी आत्मा की रक्षा करते हैं मैं तीन दण्ड धारण करूं बाह्य चिन्ह से प्रयत्न करूं दु चरीत्र के कारण मुनी मन इन्द्रीय कषाय सिर लुचन करते हैं मैं भाव मुन्ड नहीं होने के कारण सिर मिखा धारण करू

दूजे प्रस्ताव में वनिता नगरी ऋषभदेव भगवान प्रथम तीर्थंकर का जन्म उन के सुमंगला सुनन्दा नामे दोनों ऋषभदेव की धममर्दपी भरतादि शत पुत्र तथा ब्राह्मी सुन्दरी दो पुत्री का जन्मादि का विस्तार तथा भरतादिक को राज्य देकर दीक्षा ग्रहण कर केवल ज्ञान प्राप्त कर भरतादिक को उपदेश दिया भरत चक्री सपरिवार सहित भगवत सेवा में अनुरक्त भरत चक्री पुत्र पुण्डरीकादिक का दीक्षादि पर्यन्त जम्बु द्वीप प्रज्ञप्ति तथा ऋषभ चरित्र तथा पुण्डरीक चरित्र से जानना।

सुधर्म स्वर्ग से देव भव पूर्ण कर भरत चक्रवर्ती की वर्मा रानी की कुक्ष में सूर्य बिरोध अर्थात् किरणों का जाल प्रसारण करता हुआ प्रवेश किया अनुक्रमे सवानो मास से जन्म हुआ स्वप्नानुसारे मरीची नाम दिया। अनुक्रमेण मरीची बड़ा कुमार हुआ। एक दिन ऋषभदेव भगवान विनीता अयोध्या नगर पधारे। अशोकादि अष्ट महा प्रति हार्य की विभूती देख कर तथा लोकालोक स्वरूप भूत वर्तमान भविष्यत का ज्ञानमय योजन गामिनी वाणी सुन कर विषयों से विरक्त होकर दीक्षा ग्रहण की। पीछे पंच सुमति तीन गुप्ती पंच महा व्रत की रक्षा में जिस का लक्ष्य है शरीर से भी निरापेक्ष है। रत्नों का व्यापारी के समान गुण रत्नों का संचय करने वाला साधु की चोरासी उपमा जो अनुयोग द्वार सूत्र में वर्णन है ऐसे गुण युक्त स्थविरों के पास शास्त्राभ्यास कर एकादशांगी सूत्र पीटक का जानकार हुआ। ऋषभदेव स्वामी के साथ विचरण कर रहा है।

इस अवसर में भरत चक्रवर्ती के चक्र रत्न आयुध शाला में प्रकट हुआ। उस के द्वारा षट खण्ड विजय किये बाद में चक्र आयुध शाला से निकल कर चक्र भरत चक्री का देश साधन राजाओं को आज्ञा मनाना तथा अठ्ठाणवें भाईयों पर चढ़कर आया और अठ्ठाणवें भ्रात ऋषभदेव भगवान के पास दीक्षा ग्रहण करना और बाहुबली पर चढ़ाई करना और इन्द्र के आग्रह से पांच प्रकार के युद्ध में भरत का हारना और बाहुबली जी को शुद्ध विचार आना अपनी मुष्टी अपने सिर पर हाथ कर लोच कर स्वयमेव दीक्षा ग्रहण करना अठ्ठाणवें भाईयों को छोटे जानकर दीक्षा में बड़े हैं। उन को नमस्कार न करने के कारण बारह मास वन में एकासन कायोत्सर्ग

मुद्रा मे खड़े रहते हुये भी केवल ज्ञान नहीं पाना। आदि नाथ प्रभु ने ब्राह्मी सुन्दरी को समझाने के लिये वन मे भेज कर प्रतिबोध दिलाना अठानवें भाईयों को वन्दन करने का धार कर ऋषभदेव स्वामी के पास आने के लिये एक पद आगे रखते ही क्षपक श्रेणी चढ़कर केवल ज्ञान बाहूबली जी प्राप्त हुये। विवरण जम्बु द्वीप प्रग्यप्ति से तथा ऋषभचरित्र त्रिशष्टी शिला का पुरुष चरित्र से जानना।

और भरत चक्री पट खंडाधिप होकर राज्य करने लगे आदि मे भरत चक्री हुये इस से भारत कहलाया तथा भरत नाम का देवता भारत का स्वामी है जिस से भारतवर्ष कहलाता है।

अब मरीची दश प्रकार समाचारी समाचरता सिद्धान्तानुसार अष्टा दशा सहस्र शीलांगरथ के गुण युक्त सयम पालन करते अनेक वर्षों के बाद ग्रीष्म समय महाताप से शरीर शोषित होने पर ज्वाला के समान हवा के झोले लगने पर और अस्नान के कारण मल मलिन तनु प्रस्वेद झरने से कष्ट मानने लगा चारित्रावर्णी कर्म के दोष से अन्तो कोटा कोटी सागर ससार पर भ्रमण करना बाकी है जिस से सयम अत्यन्त दृढ़ होवे हुये भी गुरुकुल वास मे बसते छठ अष्टमादि तप करते भी शुत्रार्थ जानकार होते हुये भी प्यास वस तथा मैल परिसह के कारण चारीत्र से मन विचलित हुआ।

अहो कर्म गति विचित्र है जो मोहरिपु के चक्रव्युह मे फंस कर अपने शुद्ध सयम जीवन से हाथ धो बैठे। मरीची ने मन में विचार किया कि भरतचक्री का पुत्र होकर भी मैं चारित्र से विचलित हुआ और उन्हों ने समस्त भारतवर्ष अपनी भुजा से वस किया मैं वीर पुत्र होकर कायर बन रहा हुं मुझे चारीत्र छोड़ कर गृहवास अंगीकार करने मे बड़ी लज्जा आती है अब क्या करना चाहिये ऐसा विचार करने पर यह विचार उत्पन्न हुआ कि भगवान के साधु मन वचन काया अशुभ व्यापार तीन दण्ड से अपनी आत्मा की रक्षा करते हैं मैं तीन दण्ड धारण करूं बाह्य चिन्ह से प्रयत्न करूं दु'चरीत्र के कारण मुनी मन इन्द्रीय कषाय सिर लुंचन करते हैं मैं भाव मुन्ड नहीं होने के कारण सिर शिखा धारण करूं

मुनी जन त्रिविधे २ हिंसादि पचाश्रय त्यागी हैं मैं पञ्च अनुव्रत धारण करू मुनी जन अकिञ्चन अपरिग्रही है मैं स्वर्ण पवित्री धारण करू जिस से अन्य के समान लोक न समझें। मुनी जन सदाचार शील सुगन्धी अस्त्यिश्व रहते हैं मैं चन्दन के लेप युक्त रहूँ मुनी जन मोह रहित रजाऊ पग रही रहीत तपस्वी हैं मैं शरार पीड़ा से डरता हूँ इस से रजाऊ रहूं मुनीजन सूर्य ताप की रक्षा के लिये छत्र धारण नहीं करते मैं छत्र धारण करू तपोधन मुनी रंग रहीत स्वेत वस्त्र महर्षय नहीं ऐसे मर्यादा सहीत वस्त्र धारते हैं मैं कषाय युक्त हूं इसलिए गेरू रंगे वस्त्र धारण करू जिस से साधारण आदमी भी मुझ निम न्थ न समझे मुनि जन असंख्य जीवों का समुदाय समझ कर अप्रासुक सचित जल नहीं लेते मैं त्रिरादि परिस्थ का मर सर्यादा सहीत जल पीना स्नान करना हस्त पादादि प्रक्षालन करने के लिये ग्रहण करू गा ऐसे स्वबुद्धि कल्पित निम न्थ धर्म के भेष से विपरित मुनि भेष को त्याग कर परिव्राजक धर्म प्रवर्तावे ऋषभदेव भगवान के संग भगवान के प्रवचन का सुनने के लिये ग्रामानुग्राम विचरण कर रहा है। ऐसे मुनि संघ में मुनि वेष से विपरीत नेपथ्य देख कर लोकों को आश्चर्य हुआ और प्रश्न पूछने लगे आप की प्रवृति के विरूद्ध परन्तु मरीचि अपनी अस्थिरता और साधुओं का शुद्ध धर्म अनुप रही न बना रहा है और मेरी आत्मा कषाय से कलुषित इन्द्रीय विषय चारों से प्रसमभन स मेरी आत्मा का बंचित करा रहा हूँ पर यह मुनि धर्म तथा गृहस्थ धर्म महा वैद्य देशित औषधि के समान है तथा चिन्तामणि के समान धर्म अंगीकृत करो मैं तो दुर्गती दुःख रासजी के मग पड़ा हूँ एस भव विरक्त निपुण बुद्धि से भावित आत्मा कर अनेक भव्य जीवों का निम न्थ धर्म तथा अणुव्रत धर्म अंगीकार करा रहा है और संसार दुःख दाह दह के मजाने वाला ऋषभदेव स्वामी के शास्त्रार्थ मल में परिभावित आत्मा साधु की स्तवना अपनी निन्दा स्वबुद्धि परिकल्पित परिव्राजक वेष धरता हुआ ऋषभदेव स्वामी के साथ ग्राम नगरादि में विचरता हुआ काल व्यतीत कर रहा है। अन्यदा भरत चक्री ने अपने ऋषभदेव भगवान के साथ अठानवें भ्रात अष्टापद कैलाश पर आये सुन के पश्चाताप करता

हुआ के भोगों की प्रर्थाना की मुनियों ने उत्तर दिया हे नरपते परित्यक भोगों को स्वीकार करना धीर पुरुषो का काम नहीं विषयो से निरापेक्ष देख कर पाच सो सकट पकवान से भर कर मुनि जनो के साथ सेवा में रह कर निमन्त्रण करने लगे मुनियो ने कहा हे चक्री भारत अधिपते साधुओं को अधाकमी उद्देश्य कर आहार किया हुआ तथा अभिहृत सामने लाया हुआ राजपिण्डादि दोषयुक्त आहार नहीं लेना। ऐसे अनादर के कारण भरत चक्री शोकाकुल हुये कि मेरा उद्धार कैसे होगा सुधर्म स्वर्ग के मालिक शाक्रेन्द्र शोक दूर करने के लिये ऋषभनाथ भगवान से प्रश्न किया भगवन् उग्रह कितने प्रकार है। सर्वज्ञ ने फरमाया हे देवेन्द्र पच विधे है देवेन्द्र उग्रह १ राज उग्रह २ गृहपति उग्रह ३ शय्यातर उग्रह ४ साधर्मी उग्रह ५ दक्षणार्ध जम्बु द्वीप आदि में विचरते वह शक्रेन्द्र की आज्ञा से। उत्तार्ध में विचरें वह साधु ईशनेन्द्र की आज्ञा से १ भरतादिक क्षेत्र में विचरे वह राजा की आज्ञा से जैसे भरत चक्री की २ गृहस्थ की आज्ञा से वस्तु ग्रहे वह गृहपति आज्ञा ३ शय्या दान से तरे वह शय्या तर की ४ सावर्मी गुरु आदिक की आज्ञा से वस्तु ग्रहे वह ५ शक्र ने कहा दक्षणार्ध की मेरी आज्ञा है। भरत चक्री ने खुश होकर कहा भारत में विचरने वाले साधुओं को मेरी आज्ञा है। श्रावकादि को भोजनादि दान भरत चक्री ने शक्र वचन से प्रति दिन दिया यह भी उपग्रह गुण सहायता है भगवान वृषभदेव अन्यत्र विचरण कर गये।

भरत चक्री ने जिन स्तुति गृह कराया वहा पर जिस में गृह त्यजा तथा गृह कर्म करे ऐसे श्रावक जन प्रतिदिन भगवत स्तुति कर (ॐ नमो भगवते ऋषभदेवाय) ऐसे मन्त्र पढ कर तथा स्तुति कर कीर्तन कर रहे हैं जैसे (ॐ ऋषभजिन भज वृषभजिन, भज मरु देवी के आदिजन) जन्म धन्यवाद मानते हैं और जो ऋषभदेव भगवान ने दस प्रकार कल्प वृक्षों ने भोजनादि दान देना बन्द करने के बाद चार वर्ण स्थापन किये थे जिन जिन मनुष्यों मे जैसी २ कार्य की क्षमता थी रक्षा करने में सामर्थ्य थे उन्हें क्षत्रीय वर्ण में एकत्र किये १ जो विद्या ग्रहण करने में तथा विद्या दान देने में सामर्थ्य थे उन्हों को ब्राह्मण वर्ण मे स्थापित किये गये २ जो व्यापार

पदार्थ आदि को संग्रह कर उन को व्यापार द्वारा तरक्की कर सके तथा वस्तु की रक्षा कर चारों वर्णों को देकर न्याय के साथ दाम कमाय और दया दान की बुद्धि भावों को वैश्य वर्ण में किये ३ जो वस्तु को कर्षणी कर्मादि कर खाद्यादि पदार्थ निपजावे उन को शूद्र वर्ण में कार्य करने योग्य बनाये ४ जैसे किसान वाणिक लोहार कुम्भकार आदि कर्म कर क्योंकि उस समय में मनुष्य बहुत कम संख्या में थे एक स्त्री पुरुष से जन्म भर में एक पुत्र पुत्री का युगल जन्मता था ऋषभदेव ने ७२ कला पुरुष की तथा ६४ कला स्त्रीयों की सिक्षा कर मनुष्यों को कर्मक प्रवृत्ति करी थी क्योंकि भावी में सन्तान बढ़ती जान कर उन ही विद्या से भरत चक्रवर्ती ऋषभदेव के जो प्रथम पुत्र थे उन्हों ने चतुर्मुख रच कर चार वेद रचे थे उन्हों में गर्भादि सोलह संस्कार के मन्त्र थे यह चार वेद और सोलह संस्कार ब्राह्मणों को सिखा कर कुलगुरु विद्या गुरु के रूप में स्थापन करे थे यह तीनों वर्णों को विद्यादान तथा कलाभ्यास कराते थे तथा गर्भादि मरण पर्यन्त के सोलह संस्कार मन्त्रों द्वारा गृह शान्ति कर्म करते थे इस वास्ते इन को गुरु मान तीन वर्णों म धन वस्त्र भोजनादि दान करते थे इस कारण से अनुयोग द्वार सूत्र में ब्राह्मणों को वृद्ध श्रावक कहे हैं ऋषभ देव तथा भरत चक्रवर्ती के रचे हुये वेद भर्तरूप वर्ण सुबुद्धि नाम नोधा भगवान तक चालू रहे ऐसे विजया नन्द सूरी जो कि आत्मा राम जी कृत तत्त्व निर्णय प्रासाद में लिखा है। बाद में ब्राह्मणों ने स्वच्छन्द मति से वेद शास्त्र रच कर यज्ञ होम में अनेक पशु वध करने के मन्त्र बना कर हिंसा की प्रवृत्ति की बहुत से मन्त्र आज वेदादि में मौजूद हैं भागवत पुराण में कई जगह पशु वध यज्ञ का खण्डन भी किया है तथा उत्तराध्येन सूत्र में अध्ययन २५ में कहा है पशुबद्धा सव्वेवेया इत्यादि।

जैन सिद्धान्त सृष्टि सूत्र अनादि से मानते हैं और अन्य ईसाई इस काल सृष्टि को विष्णु १ ब्रह्मा २ खुदा ३ द्वारा रची गई पुराण १ बाइबल २ कुरान ३ में लिखते हैं। पर जैन शास्त्र अनुसार वृद्धि हानिरूपी सृष्टि को मानते हैं शक्तिमान पुरुष सृष्टि में जन्म लेते रहते हैं यह अपनी इच्छानुसार वृद्धि हानी की प्रवृत्ति करते रहते हैं इस ही कारण से दशमा भगवान

थ जी से लेकर सोलहवां शान्ति नाथ भगवान तक भगवती सूत्र न्तर में कालिक सूत्र और दृष्टी वाद बारहवा अङ्ग विच्छेद वही ब्राह्मणों के रचे हुये वेद चले आ रहे हैं ऋग वेद में भी ाह विश्वामित्रादि ऋषियों के अलग २ मन्त्र कहे है और शुक्र य-को ता याज्ञ वल्क रचित वर्तमान मे भी वैष्णव शास्त्रानुसार वेद मानते हैं।

ाह वृद्ध श्रावकादि छ मास वेद परावर्त करते थे परिज्ञान के निमित्त चक्री अपना कागणी रत्न से तीन लीक खींच देते थे जिस मे गर्भ मे सदा प्रकाश रहता था। जन साधारण भगवान का कीर्तन स्वध्याय के लाभ उठाते थे। एकदा प्रस्तावे भगवान अष्टापद पर्वत पर पधारे ादि अष्ट प्रकार विभूति सहित वहां पर इन्द्रादि अनेक देवगण भी े हुये थे। गणधर आदि साधु साध्वी श्रावकश्राविका साधारण मनुष्य म-ष्यणी सभा बेठे थे उस समय भरत चक्री ने ऋषभदेव भगवान से वन्दना मस्कार कर विधि पूर्वक प्रश्न किया कि भगवन् जैसे आप धर्म तीर्थ कर स वक्त हो ऐसा कोई जीव आप के समोशरण तथा समोशरण के बाहिर कोई तीर्थ कर चक्रवर्ती वासुदेव होने वाला है। भगवान ने फर्माया हे भरत मेरे पिछे इस भारत मे तेईस तीर्थङ्कर तेरे विना एकादश चक्रो नो वासुदेव नो बलदेव नो प्रतिवासुदेव होंगे जिन्हों में तेरा पुत्र मरीची परि-व्राजक वेष में है वह इस ही भारत मे त्रिपृष्ट नाम से प्रथम वासुदेव हो गा और इस ही भारतवर्ष में चतुर्विंशतिम् अन्तिम तीर्थङ्कर वर्धमान म-हावीर स्वामी नाम से प्रसिद्ध होंगे वह महावीर भगवान तीन वर्ष सार्ध-अष्ट मास चतुर्थ आरे के बाकी रहने पर मोक्ष गमन करेगें।

ऐसे श्री मुख्य ऋषभ नाथ प्रभु के वचन सुन कर भरत चक्री जगह २ मुनि जनो को नमस्कार करता हुआ अपना पुत्र मरीची रह रहा है वहा पधार कर कुछ दूरी पर स्नेह परिपूरित हर्ष से रोमाञ्चित हुये दोनों कर मिला कर त्रिप्रदक्षणा कर भूमी तल पर अपना नत मस्तक कर प्रणाम कि-या और कहने लगे हे वत्स तू प्रवर लक्षणोपपेत निधान भूत सुकृतार्थ स-र्व पुत्रों मे एक तू ही है। यह इक्ष्वाकु वंश सर्व वंशों में श्रेष्ठ जिस की स-

'ीतल नाथ जी से लेकर सोलहवा शान्ति नाथ भगवान तक भगवती मूत्र मे सप्त अन्तर में कालिक सूत्र और दृष्टी वाद् बारहवा अङ्ग विच्छेद माना है यही ब्राह्मणों के रचे हुये वेद चले आ रहे हैं ऋग वेद में भी कई जगह विश्वामित्रादि ऋषियों के अलग २ मन्त्र कहे हैं और शुल्क यजुर्वेद को तो याज्ञ वल्क रचित वर्तमान मे भी वेष्णव शास्त्रानुसार वेद वेत्ता मानते हैं।

वह वृद्ध श्रावकादि छ मास वेद परावर्त करते थे परिज्ञान के निमित्त भरत चक्री अपना कागणी रत्न से तीन लीक खींच देते थे जिस में गर्भ गृह में सदा प्रकाश रहता था। जन साधारण भगवान का कीर्तन स्वध्याय कर के लाभ उठाते थे। एकदा प्रस्तावे भगवान अष्टापद पर्वत पर पधारे छत्रादि अष्ट प्रकार विभूति सहित वहा पर इन्द्रादि अनेक देवगण भी बैठे हुये थे। गणधर आदि साधु साधवी श्रावकश्राविका साधारण मनुष्य मनुष्यणी भी बेठे थे उस समय भरत चक्री ने ऋषभदेव भगवान से वन्दना नमस्कार कर विधि पूर्वक प्रश्न किया कि भगवन् जैसे आप धर्म तीर्थ कर इस वक्त हो ऐसा कोई जीव आप के समोशरण तथा समोशरण के वाहिर कोई तीर्थंकर चक्रवर्ती वासुदेव होने वाला है। भगवान ने फर्माया हे भरत मेरे पिछे इस भारत मे तेईस तीर्थङ्कर तेरे विना एकादश चक्रो नो वासुदेव नो वलदेव नो प्रतिवासुदेव होंगे जिन्हों मे तेरा पुत्र मरीची परिव्राजक वेप मे है वह इस ही भारत में त्रिपृष्ट नाम से प्रथम वासुदेव होगा और इस ही भारतवर्ष में चतुर्विंशतिम् अन्तिम तीर्थङ्कर वर्धमान महावीर स्वामी नाम से प्रसिद्ध होंगे वह महावीर भगवान तीन वर्ष सार्ध-अष्ट मास चतुर्थ आरे के वाकी रहने पर मोक्ष गमन करेगें।

ऐसे श्री मुख ऋषभ नाथ प्रभु के वचन सुन कर भरत चक्री जगह २ मुनि जनो को नमस्कार करता हुआ अपना पुत्र मरीची रह रहा है वहा पधार कर कुछ दूरी पर स्नेह परिपूरित हर्ष से रोमांचित हुये दोनो कर मिला कर त्रिप्रदक्षणा कर भूमी तल पर अपना नत मस्तक कर प्रणाम किया और कहने लगे हे वत्स तू प्रवर लक्षणोपपेत निधान भूत सुकृतार्थ सर्व पुत्रों मे एक तू ही है। यह इक्ष्वाकु वंश सर्व वंशों में श्रेष्ठ जिस की सं-

ज्ञान न तेरी म र्वी पताका लहरा रही है तू भावी प्रथम वासुदेव महावीर है भाको इसी भारत में अन्तिम जिन वर्धमान महावीर स्वामी होगा यह प्रभु ने कहा इस लेरे भावी गुणो को याद कर नमस्कार करता हूँ इस तरह स्तुति कर अपना परिवार सहित चक्रवर्ति पर सवार होकर नगरी में गये।

मरीची भी अपने पिता के कहने पर अपने कुल की उच्चता का अभिमान के वश होकर तीन बार मल्ल की तरह पल पर स्फोट लगा कर पास म बैठे हुये मुनियों को कहने लगा जो कि इस वंश म प्रथम जिनेश ऋषभदेव प्रथम चक्री भरतेस और मैं वासुदेव चक्री तीर्थंकर तीनो पद पाऊ गा धन्य है मेरे वंश कुल जाती का और ऐसा यश है ही नहीं । कुलाभिमान से नीच गोत्र बान्धता है । भगवान ने फर्माया है कुलाभिमान से हीन कुल कर्म उपार्जन करता है यह मरीची ने कमाया।

भगवान ऋषभदेव एक सहस्त्रवर्ष कम एक लक्ष पूर्व केवल ज्ञान युक्त भूमण्डल पर विचर कर अष्टापद पर्वत पर दस हजार मुनि सहीत पादोपगमन संथार किया पोष भक्त का संथारा पूर्ण कर आमवी नक्षत्र चन्द्र मा पूर्व दिन म था तीन वर्ष सार्ध अष्टमास तीजे आरे के बाकी रहे थे। पर्यायज्ञान रह हुये शेष चार कर्म नाम गोत्र वेदनी आयुष का अन्त कर दस हजार साधु वर्ग सहीत जन्म जरा मृ तु रहीत मोक्ष को प्राप्त हुय महा वदी त्रयोदशी के दिन इस समय चतुषष्टी इन्द्रादि देवता त्रिभुवन स्वामी के वियोग से व्याकुल होते हुये और भरतचक्री आक्रन्द शोकाकुल होकर भगवान को नमस्कार कर नन्दन वन से गोशीर्ष बावना चन्दन मंगवा कर पूर्व दिशा म भगवत चिता रची। दक्षिण म गणधरों की चिता रची। अपर दिशा म शेष मुनियों की चिता रच कर दाह संस्कार किया।

(ध्यान चना) जैन शास्त्रा म धार्मिक यह क्रिया में साधुओं के लिये तीन पाठ रहा है जिसमें आर्ग आमतौर पर दाह संस्कार ही लिखा है क्योंकि पाताल स्थान रूके और दही गई नहीं इस कारण से।

भरतराज ने नि ग्रेही मुनि गुफाए म ध्यान करते हुय भगवान

पावे तो उन्हों की क्रिया मनुष्य नहीं करते क्योंकि उन्हों का शरीर मनुष्यों को पता नहीं होता। स्यात् देवतादि दाह संस्कार कर देते है और ग्रामादि मे कोई शिष्ट मनुष्य नहीं होने पर अन्य मुनि खुद ही लेकर एकान्त स्थान पजावादि मे निर्वद्य भूमी मे व्युत्सृजन कर देते है। ऐसा वर्णनन वृहत कल्प सूत्र वृत्ति मे कहा है दाह क्रिया वर्णनन् जम्बु द्वीप प्रग्यप्ति सूत्र मे कहा है।

सर्व इन्द्रादि देवता नन्दीश्वर द्वीप मे अष्टानिक महोत्सव कर सर्व अपने२ स्थान गये अन्तोष्टी क्रिया का विस्तार भी जम्बु द्वीप प्रग्यप्ति सूत्रानुसार जानना।

ओर ऋषभदेव स्वामी का चरित्र भी जम्बु द्वीप प्राग्यप्ति तथा श्री हेम चन्द्र आचार्य विरचित त्रिषष्ठी शला का पुरुष चरित्र से जानना। शक्र वचनों से सुवर्ण रत्नोमय ऋषभदेव प्रभु का स्तूप रचा और शेष अष्ट नवति भाईयों के भी स्तूप रचे और जिन भवन करा कर सुवर्ण रत्नोमय अनावर्ण प्रतिमा स्थापना कर अपनी राज्यश्री विलसते हुए धर्म उत्थान करते हुए पाप भीरुता से भरत चक्री राज्य कार्य कर रहे है।

एक दिन भरत चक्री अपना देव रचित आदर्श भवन मे रत्नोमयी स्नान पीठ पर वैठ कर अपने वस्त्रालकार सर्व उतारे एक अगुली मे मुद्रिका से अगुली शोभित दीख रही है वाकी अग गतप्रभा दीखने लगा वस शरीर को शोभाहीन देख कर अनित्य नाशवान शरीरादि वस्तु जान कर सुक्ल ध्यान में स्थिर होकर ज्ञानावर्णी आदि चार कर्मों का नाश कर केवल ज्ञान केवल दर्शन पाये और राज्य सभा मे जाकर सिंहासनारूढ़ भवविरक्त वाणी से दस हजार राजाओं को ज्ञान देकर दीक्षा ग्रहण करा कर महीतल पर विचरने लगे भरत चक्रवर्ती का जीवन चरित्र का वर्णनन् जम्बु द्वीप प्रग्यप्ति सूत्र तथा त्रपष्ठी शलाका पुरुष चरित्र से जानना।

ईहावसरे मरीची साधु समुदाय के साथ ग्रामानुग्राम विचरते अनेक भव्य जीवों को सत्य उपदेश साधु मार्ग बता कर दीक्षा दिला रहा है। एक दिन मरीची के शरीर मे महा वेदना प्रकट हुई अपने को शिष्य के विना असहाय मानता हुआ साधु लोकों की सेवा से वचित होकर मुनि

उसों पर भरची और द्वेप भाव प्रगट हुआ और मानन लगा कि यह तो मर्द स्वार्थी हैं यह नहीं विचारा कि मैं निम्रन्थ क्रिया विहीन हूं साधु क्या करें। स् इन के नियमानुसार क्यों नहीं रहा भाने नियम विरुद्ध काम पर विचार नहीं करा। भव मैं निरोग्य होने के बाद शिष्य बना कर पर प्राजक धर्म इस की तरकी कर गा। पीछे मरीची रोग रहीत हुआ परि व्राजक धर्म की सामग्री लेकर अलग विचरने लगा। अन्यदा कपिल नाम का राजकुमार मिला इस पहले तो निग्रन्थ धर्म की स्तुति कर निर्मन्थ धर्म के लिये प्रेरीत किया पीछे कपिल कहने लगा परिव्राजक धर्म क्या संसार तरने का रास्ता नहीं है मरीची ने कहा यह भी तो ऐसा ही है कोई त्रुटी नहीं मरीची की अन्यथा भावना हुई पहले दृढ़ता के साथ शुद्ध परुपणा से तथा संयम तप की दलाली से तीर्थ कर नाम कर्म उपार्जन किया जसी ही भव पारावार होने का रास्ता था पर अब अशुद्ध परूपणा तथा साधु मार्ग पर रोग अवस्था में सेवा नहीं करने से द्वेप और कलुषित भाव पतनता पर अस्ताकोटा कोटी सागर भव भ्रमण करने के कर्म उपार्जन किये।

यह या दश आवते बुद्धि व्यवसायर्षः यादशः, सहाया यादशात्मेवा तादशी भ वि तव्यता १ जैसे अपथ्य भोजन करने से रोग उत्पन्न हो पे से ही मरीची ने कुसंगत कर सम्यक्त्व को वमन कर मिथ्यात्व प्राप्त हुआ इस से तो मूल उत्तर गुण रहीत साधु वेष धारी यथा तथ्य परूपणा करने वाला भी तर सके और तार सके शरणागत भव भयवान जीव का पर उन्मार्ग देश नारो तीक्षण खड्‌ग से शरीर छेद जैसे वैसे आत्म गुण का नाश कर गुरू पाप करने वाला जीव भी ऐसा दुःख न पावे जैसे जिन वचना के विपरीत उत्सूत्र परूपणा करने से पावे उस कपिल ने सन्निपात रोग से भ मे भूत प्राणी का औषधी जैसे काम नहीं देव वैसे ही श्रमण धर्म मरीची के कहने पर नहीं रुचा सम्यक धर्म कई भी महा मिथ्यात्व के प्रबल उदय सम्यक ज्ञान दर्शन चारित्र धर्म अंगीकार नहीं किया मरीची ने विचारा इस को यति धर्म नहीं रुच मुझे भी रोगादि अवस्था में सेवा करने के लिये शिष्य की आवश्यकता है ऐसे विचार कर परिव्राजक धर्म ... करवाया स्वमति से रच हुए शास्त्राभ्यास करवाया कपिल मिवा

तथा देवता व स्वामी के समान परोपकारी मरीची को मानता हुआ रत्नों के निधान सम जीव तव्य दातार मान कर ग्रामानुग्राम सेवा करता हुवा मरीची के संग रहने लगा मरीची चारासी लक्ष पूर्व सर्वायु पालन कर त्याग तप आत्म गुण की भावना से पाचवे स्वर्ग ब्रह्म लोक में मृत्यु पाकर देव पने दस सागर की स्थिति मे उत्पन्न हुआ इति त्रितीय मरीची जन्म चतुर्थ ब्रह्म कल्प जन्म समाप्त ।

कपिल भी अनेक सहस्र वर्षों तक भूमण्डल मे विचरण करके आसुरी राज पुत्रादिक को अपना धर्म देकर हजारों वर्षों तक अपने अनुयायी बना कर ब्रह्म देव लोक मे देव ऋद्धि प्राप्त हुआ वह कपिल अपने महजब के पक्ष में ओत प्रोत भरा हुआ ब्रह्म लोक स्वर्ग से आ कर आसुरिक शिष्यादिक को अपने त्यक्त देह मे प्रवेश कर शष्टो तन्त्र आदि अनेक ग्रन्थ उपदिशे अपने महजब के राग के कारण फिर स्वर्ग मे गया ।

अब मरीची पाचवें स्वर्ग देव भव से च्युत होकर कोलाक सन्निवेश मे विप्रकुल मे उत्पन्न हुवा कोशिक नामे वेद विचार ब्राह्मण के षट कर्म में कुशल यसवान हुआ विषय प्रशक्त द्रव्योपार्जन के लिए अनेक कार्य किये प्राणी वध मृषावादादि गुरू पाप से निरापेक्ष हुआ अन्त में त्रिदण्डी पन को स्वीकार किया पर मिथ्यात्व से बुद्धि परा भवमति पन से ८०लाख पूर्व सर्वायु भोग कर मृत्यु पाकर सुलोक से सुख भोग कर फिर कई लघु जन्म सुरनर तिर्यंच के भव में अनेक विवश पने दु ख भोगे फिर थुनाक सन्नीवेश में ब्राह्मणकुल में पुष्प मित्र नाम द्विज हुआ। पुष्प मित्र भव में परिव्राजक दीक्षा ग्रहण कर अनेक प्रकार तपस्या कर धर्म बुद्धि से ७२ लाख पूर्व आयुष पूर्ण कर पचत्व को प्राप्त हुआ और प्रथम सुधर्म स्वर्ग लोक में उत्पन्न हुआ सुधर्म सुरलोक भवक्षय कर अग्निद्योत नामे विप्र होकर चतुषष्ठी लक्ष पूर्ण चिरायु पाकर परिव्राजक दीक्षा पालकर मर कर इसान दूजे कल्प मे देव सुख को पाया त्रिदशपने मध्यम स्थिति भोग कर स्वर्ग भवक्षये मन्दिरा सन्निवेश में सोमिल विप्र की शिव भद्रा ब्राह्मणी कुक्ष से उत्पन्न हुआ अनुक्रमे जन्म हुआ अग्नि भूति नाम दिया तारुन्यावस्था प्राप्त हुआ एकदा प्रस्तावे अनेक जगह फिरता हुआ सूरसेन नामे परिव्राजक वहा पर आया अनेक

नागरिक उसके पास गये।
युक्ति पूर्वक उपदेश सुनाया सु न सुरा हा कर गये दूजे दिन अग्नि भूति प्रमुख अनेक जन आये उचित विनय कर उपविष्ट हुये उनका अनेक तरह निज मतानुसार उपदेश किया रूप हर्ष पाये एक मनुष्य ने प्रश्न किया भगवान् मृग स जन वत् जन नयनानन्दकारी मुख्य प्रताप युक्त हिरणाक्षी की भरने वाले मन्दन वन के रहने वाले देव समान विलास युक्त कामधि के समान आपका पुण्य वंत ऐसी तरुणावस्था में कठिन कष्ट कैसे धार या किया क्या कारण हुआ घन स्त्री परिजन प्रिय गार्हिक क्रिय ऐसा कह मे आगा मैं कोसंबी नगरी में सु दिप भावन हीन दुःखी का हाल इन दशा था एक दिन भीलों का समूह आकर नगर वालों को लूट में भी गृह से निकल कर भागा कारुणिक पुरुष ने मुझे रक्षित किया पर मैं भय से मृत क समान नीचेष्टा रहा डाकू जाने के बाद ग्राम जन अपने २ गृह में आए मैं भी अपने सोध में आकर देखा ता एक दफा के खाने का सामान भी न रहा मैं निराश हो कर विचारा अहो कर्म गति अश्व आरोही जन पर सेवक पुरुषों के साथ विचरता था आज अकेला ही निःसहाय पैदल फिर ता हूँ और जो मैं भाई मित्रों को पालन करता था तथा अनेक असहायों भोजन वस्त्रादि देता था क्या आज मैं सहायता के लिए औरों से प्रा र्थना करू क्या दुर्भाग्य वश लोका को दुर पश्यगोद्युनू ऐसा विचार कर स्वस्थान को छोड़कर बसार दिशा में एक सन्निवेश में जाकर भिक्षा से प्राण वृति करी कुछ काल वहां रहते एक त्रिदण्डी मिला मैं उस के चरणा म पड कर गद गद हो उठा उस मुझ को पूछा मैंने मेरी व्यतिकर सुना दी मेरी दु ख भरी गिरा सुन कर त्रिदण्डी ने मुझे कहा पुत्र लक्ष्मी अनित्य है यह किसी की सहचारी नहीं होती लक्ष्मी उत्तम स्वय अपने कैमल की भी की भी दिनकर उदय पर खिलाती है सूर्य अस्त होने पर उस की शोभा मिटा देती है इस लिये शोक त्याग धैर्यता भज धर्म ही असहाय के सहाय है विवेक से उसका करना साथी यनाओ मैं मधुर वचनों से संतुष्ट हो सम्याम धर्म धारण करो ऐसी अनित्य सम्पत्ति का स्वरूप सुन कर अग्नि भूति मरीची जीव से कहा भगवान मैं भी वैराग्य प्राप्त हुआ मुझे परिव्राजक दीक्षा भी

उसने त्रिदण्डी बनाया वहा छप्पन लाखपूर्व तपस्या कर सनत कुमार तीजे कल्पे उत्पन्न हुआ।

इति कौशिक जन्म १, सुरलोक २ पुष्प मित्र ३ सुधर्म कल्प ४, अग्निद्योत द्विज ५ फिर ईसान कल्प ६, फिर अग्नि भूति विप्र ७ फिर तीजे कल्प एवम ८ जन्म चरित्र सर्व द्वादश जन्म समाप्त ।

अग्नि भूति जीव शनत कुमार कल्प से देव भव पूर्ण कर द्विज कुल मे जन्म हुआ नाम भारध्वज रखा अनुक्रमे कुमार्ग देशनानुसार वृद्ध अवस्था में परिव्राजक दीक्षा ग्रहण कर चवालिस लक्ष पूर्व पूर्णायुभाग कर महेन्द्र कल्पे पचत्व पा कर देव हुआ फिर आयु क्षय मनुष्य तिर्यंच नरक कुदेव में भ्रमण कर राज गृह नगरे कपिल विप्र की कान्ति मति ब्राह्मणी की कुक्ष से पुत्र पने जन्म लिया इस का स्थावर नाम दिया सत्वता तथा गात्र से कुमारावस्था व्यतीत होने पर जन्म जरा व्याधि से दु खा वह पीड़ित लोक देख कर कृतगामी वन कर धर्म मति हुई पर मिथ्यात्व मति से मूढ कभी भी त्रिप्त नहीं हुआ जिनेन्द्र देव तथा मुनिराजा से दुष्कर चरित्र तप निर्वाण मार्ग को । अन्य तीर्थीयां से ही जिसका प्रेम है ऐसे रहते हुये अन्यदा त्रिदण्डी श्रमण को देखा चपटी नाशिका भग्नोष्टपुट पुलित दर्शनवंत अर्थात् आखें बैठी हुई तो भी अभि गृह मिथ्यामति के कारण जैसे कुमुदकज चन्द दर्शन से पद्म कमल सूर्य दर्शन से विकस्मित हो ऐसे देख कर नयन नलिन विकसित प्रमोद भर हुए अति दुर्लभ वल्लभ के मिलने पर हो । जैसे प्रति जन्म मे परिव्राजक दीक्षा ग्रहण के अनुभव से इसके चरणों को नमस्कार कर सर्व विधि से आदर करता हुआ धर्म का स्वरूप पूछा ।

त्रिदण्डी और सथावर की कथा

योग्य समझ कर त्रिदण्डी ने भी इसे कहा हे भद्र मैं अर्तध्यान के वश विषय पिपासा वश हो कर रहा ऐसे मत रहना । स्थावर ने पूछा भगवान् आप कैसे त्रिपयार्ति वन कर दुखित हुये आप कहो मुझे बड़ा कौतुहल है । हे भद्र सुनो तारुण्य रूप महार्णव को मैं पा कर विषय रूप शलिल धारण कर अज्ञान रूप महा भयानक तरंग युक्त निर्लज्जता रूप जिस का तट

है। विश्वास रूप जिस का दुस्तर आवर्त भ्रमर है पाप विकल्प रूप जिस में पंक है समस्त खोटे प्रपंच रूप मकरादि है अभिमान रूप जिस का महा नाद प्रचण्ड क दर्प रूप वाडव अग्नि है दोषों का घन पटल आतीर्य है ऐसा स्थावर को करने वाली महा भोग शालिनी विलास नयनी समस्त आपदों के समान अपार मार्ग हैं जिस के ऐसी मद सैना अभिधान वाली वेश्या के साथ मोहित होकर परित्यक्त गृहवास कुटम्ब स्वजन सम्बन्धी को छोड़ कर विषय विष घूंट अमृत समझ कर मरता हुआ अपने अमूल्य संयम को खो रहा था। पिता पितामह प्रमुख की विधि से श्रेष्ठ कुसुम तथा प्रवर भूषण तम्बोल प्रवर गन्ध अनुलेपन समर्पित करता हुआ जैसे महा दव से विपिन नष्ट हो ऐसे में व्यसनाभिभूत होकर लक्ष्मी को खा कर निर्धन हुआ वेश्या ने मुझे लातों से पीड़ित किया याचनी पीया हुआ मनुष्य के समान भिक्षु सी बन कर भीमने के बाद अशेष माननन भोगता हुआ रहा फिर बार बार अपमान के कारण उसे छोड़ कर अपने गृह आया वह गृह अनेक छिद्र युक्त अनेक जगह गिरा हुआ था। भाग्यहीन पितृक धन मरघट समान देख कर, फिर विपदा वश होकर देशाटन करता हुआ एक शून्य ग्राम में प्रवेश किया वहां एक भूमि पतित रखा अक्षय देला उस को लेकर अनेक यत्न से निविड़ बन्ध किया हुआ मैं उद्घाटन कर उस की रक्षा मध्यी में एक भोज पत्र में अक्षर पंक्ति लिखी हुई का पठन किया उस में ऐसा लिखा था। अमुकग्राम में अमुक प्रदेश अमुक चिन्ह युक्त जगह रत्न कोटी प्रमाण धन रत्न हैं मैं खुश होकर उस अक्षय तथा उस लेख को गोपित कर सर्व प्रकार से वहां से चलता हुआ उस ही लिखत प्रमाण स्थान में पहुंच गया बहुत प्रमोद प्रशस्त रात्री में दिशाओं को बलि देकर एक हस्त प्रमाण जमीन के प्रदेश को खोदने पर समुत्थित हुये स्फुट फणाटोप भीषण वटी सिखावलम्बी शिखा को धरने वालेभुजग की वायु से अग्नि के अंगारों के समान जाज्वल्यमान दारुण फूंकते हुये पूत्काटोप कर जमीन पर ताड़ते हुये विष और तीव्र रक्त नेत्र का प्रसार करते हुये तथा महा भुजग प्रगट हुये विष घोर सर्प ने मुह से खटखटाट कर मेरा शरीर खोद दिया तीव्रविष महा विष के प्रकोप से जमीन पर पड़ा

त्ती व्यति हुई माने, मझे परि करुणा कर दिन कर भी उदय हुआ था
जनों ने मुझे देख कर विषार्पित जान कर दया भाव से प्रतिकार किया
र तथा विष औषध तथा मन्त्र क्रिया करने से मेरा शरीर निर्विष और
र्पीड़ा हुआ लोकों ने मुझे पूछा । मै भी वीती व्यतिकर सुनाई वहा
छ दिन विश्राम कर फिर एक दिशा मे चला एक दिन चलते हुए को मेरे
मान शीलवत एक पुरुष मुझे मिला सगी होकर रहे एकदिन उसे मुझे एक
स्ताव मे विवर प्रवेश जक्षणी का तथा शाकिनी कल्प वताया अभ्यर्थि-
क्रिया सर्व आदर से यदि तू सहायक बने तो आपे विवर मे प्रवेश
रें अत्यन्त भोगो की लिप्सा से मैंने भी प्रार्थना प्रतिपन्न की तत अखण्ड
याग करते हुए वलया मुख विवर को प्राप्त हुए द्वार पूजा रची उस की
ालकिन योगिनि की सुमहूर्त नक्षत्र मे प्रार्थना का सामान ले कर हस्त
मे प्रदीप धारण कर वहा ऊचे नीचे स्थान को लाघते हुए हलवे हलवे दूर
देश भाग मे गये ।वहा पर विद्युत पु ज के प्रकाश समान एक जक्ष कन्यका
वह कैसे जिस के गण्ड भा । पर कुण्डल की किरणा प्रसर हो रही हैं वि-
स्तृत वदन है नाना प्रकार के मणी रत्नों से वने हुए भूषणो से देह रूप
लता सश्रीक है दोनो मिले हुये अर्थात् समश्रेणी कर दोना पीन स्तन मु-
क्ता हार तथा माला से अवरुद्ध है प्रफुल्लित मनहर कल्प वृक्ष तरुण की
शाखा समान पाताल की पद्मणी रति देवी वत् तथा अप्सरा समान मन
को मोह उपार्जन करे सरोरुज की नाल के समान ललित कर कलित सुन्द-
र अवयव की धरने वाली तीन भुवन मे आश्चर्य भूत रूप देखा ऐसा क-
भी भी रूप नहीं देखा । मदन से पीड़ित प्रसार विभूर हुये हम उस के पास
गये सा बाला हम को देख कर पास मे ही ज्वाला से प्रज्वलायमान कुण्ड
में प्रविष्ट हुई ।

हम भी मुद्गर से हने हुये हो ऐसे विद्रूप वदन से चितवन करने
लगे क्या हमें वापिस आये उस स्थान को पहुँचेगे अथवा उस स्त्री के अङ्ग
के सलग्न लगे हुये पुण्य से पतङ्ग समान हो कर ज्वलन कुण्ड मे आपे पड
केवल दारु दहन में क्षण मात्र समय मे देही को जलावे क्या जीवते हुये
फिर उस भद्रा को देखेंगे इतने मे ही एक हस्तिवत् शरीर गुरु भार धर

ने पाताल धरनी तल को भेदित करता हुआ मदिरल का वाजता हुआ प्रति शब्द हजारों उठते हुये दिशाओं में और कज्जल समान कृष्ण प्रभा के प्रसारन करता हुआ कर में नर सिर की कपाल का धारण कर अमावस की रात्री के समान अन्धकार को उत्पन्न करता हो ऐसा पवन का रग माह मे धूमे का शिखा का मुक्त करता फुंकारन करता हुआ धुम्र के समान कृष्ण केशों का भार धारण किये हुए उस प्रदेश में एक रा क्षस देवता रूढ प्रगट हुआ यह अत्यन्त रोद्रारूप आंखों से देख कर हंसने लगा। अरे इन को पकड़ कर विनय शील समाचारी कायर हरपो क यह पित के तुल्य मेरा शरीर। क्या अपने चित में अपन धैर्यता नहीं मानते जो यहां पर आये हैं यह दुर्विनय का फल मार्गों को छूकर स्वा सोस्वास भी हमारा बन्द हुआ भय मे कांपते प्रज्ञाहीन हम मे मद साथ पकड़ कर बालक बाग को तरह वेग से उस प्रदेश से उठा कर दिये उसका मुख शिखर द्वार के मूल स्थान पर आ कर पड़े जैसे महा निद्रा के आने से यामिनी व्यतीत हो गये रात्री गई और सूर्य उदय हुआ नयन उन्मी लन करके वा विचारने लगे यह स्थान कौन सा है यहां किसने पहुंचा ये कैसे धरनी पर आ कर सोये कहां यह शिखर कहां यह सुन्दरी अथवा स्वप्न माया यत् जान कर भयभीत मति विभ्रमवत ऐसे चिर समय पा कर उस का यथार्थ समझा। यहां से चल कर बना खंड नगर को प्राप्त हुवे। व हां भी एक विद्या सिद्ध शिव सुन्दर नामे मिला उस का अनेक प्रकार प्र थ न कर विनय से आराधित किया उस ने खुश हो कर मैं ने कात्यायनी देवी का मन्त्र दिया उस मन्त्र की आराधना विधि भी कही तब मैं चर्चीका के मन्दिर मे गया विद्या सिद्ध ने उपदिशी ऐसी विधि से मैंने होम किया पर साहस रहित एक तृणा के हिलने पर भी व्याकुल हो कर धूम पने से मन्त्र साधते अकस्मात् काल पिंगलाक्ष बेताल राज से परिवृत एक महा पिशाच अकस्मात प्रगट हुआ महा भयानक उस यक्ष ऐसे पिंगलाक्ष दर्श न उत्पन्न होने पर मरण भय से विधुर हुआ मन्त्र का पद विस्मृत हुआ मैं भाग चला होम के स्था। से पिशाच कहने लगा अरे क्षुद्र मन्त्र दुर्विध से तू हमें वश करना चाहता है उस समय पिशाच ने ऐसे कह कर विगत

शाका अति लम्बे हाथों से घीस कर शिव पुरी ला कर एक मुष्टी ना पर मारी मेरी नाशा चपटी हुई इस वास्ते हे महा भाग्य स्थावर तेरे पुछ ने पर मेरा पूर्व चरित्र तेने कह सुनाया तेने विश्वास न आवे तो मेरे मुख की आकृती को देख इस कारण मैंने सन्यास लिया।

अथ स्थावर कहने लगा भगवान् प्रत्यक्ष दिख रहे हैं भाग विरागता के फल कौन मतिवान प्रतित न करें तुम ने युक्त कार्य किया मैं भी तुम समीप परिव्राजक दीक्षा सम्प्रति ग्रहण करू उस ने स्थावर को त्रिदण्डी दीक्षा दी वह धर्म करने मे दृढ मन से दुष्कर तप किया पर तत्व मति न होने के कारण चौंतिस लक्ष पूर्व सर्वायु पाल कर पर्यन्त में मरण पा कर ब्रह्म लोके भास्वर देव हुआ स्थावर का जीव।

इतिसनत कल्प देव भव। द्वीज भारद्वज भव फिर महेन्द्र कल्प फिर स्थावर इति ब्रह्म कल्प जन्म सम्पुर्ण —

इति श्री मज्जैन वीर मार्गीय मुनी ऋषिरामेण कृतम् हिन्दी भाषायाम् श्री वर्द्धमान चरित्रे द्वितीय प्रस्ताव समाप्त

अब विश्व भूती का जन्म जैसे विता कार्य साधन किये वह ये हैं इस ही जम्बु द्वीप मे भारत वर्ष सिर का सेखर समान जहा प्रति दिन महोत्सव होते हैं नगरो में विख्यात राज गृह नगर मे बलवन्त चक्र मे प्रथम गुणी जनों को वल्लभ है और प्राश्रित लोगों पर समवृतिवन्त प्रनि जन को प्राण प्रिय अपनी भुजा दण्ड पर लीला के साथ भूमि भार धारण करा है विशुध बुद्धि प्रकर्ष कर सोचा है धर्म विचार विश्व नन्दी नामें नरविप हैं मदन रेखा नामा राणी है विशाखनन्दी नामे पुत्र उस। राजा के विशाख भुति युवराज भाई हैं उस के शरीर से अलग हैं पर प्रेम राग से प्रगाढ बन्धे हुये हैं उस युवराज के रूपादी गुण रत्न को धारणे से रोहनगिरि के समान धारणीरानी है। इस अवसर मे मरिची जीव स्थावर ब्रह्म लोक से च्युत हो कर चतुर गती ससार कान्तार में प्रयटन कर अन्तर भावों से तथा विध पुण्य सचय कर धारणी कुख में पुत्र पन में उत्पन्न हुआ शुभ लग्न आदि में प्रसूत हुआ विश्व भुती नाम दिया क्रमता से बाल्य भाव से मुक्त हुआ पिता ने कला ग्रहण करा

रण महा कोप प्राप्त हुई स्नान भोजन शरीरशृंगार को त्यागकर दासी वर्ग को स्व २ स्थानान्तर कर कोप गृह में प्रवेश किया रजनी समय विश्वनन्दी राजा महल मे पधारे मदन रेखा को नहीं देखने पर कंचुकी पुरुष प्रमुख परीजन के पुछने से मालुम हुआ कि रानी कोप गृह में किसी कारण से सूती है राजा सुन कर स्हसभ्रम वहा गये रानी को कोपमे जा ज्वलायमान देख कर पुछा हे प्राण प्रिये यह क्या अवस्था है तुम्हारी क्या कारणहै मुझे मालुम नहीं दासी वर्ग तथा परिवार आज्ञा का अति क्रमणकिया है या शरीर व्यवस्था अच्छी नहीं है मदन रेखा ने कहा और कोई कारणनहीं विशाखनन्दी कुमार को पुप्पकरंडक उद्यान सुप्रत करो राजा ने कहा क्यातेरे लिये कहती है रानीने कहा मेरा कुंवर विशाखनन्दी के लिये नृपने कहा रानी क्या कुल क्रम विरुद्ध कहरही है हमारे राज्य कुल की रीत है आगे कोई राजा राजकुवार वाग मे हो तो दूसरा प्रवेश नहीं करे। इस लिये कदाग्रह छोड़ अन्य कार्य कोई कह तो स्वीकार करूंगा रानी कहने लगी सामान्य प्रार्थना भी स्वीकार नहीं करी तो अन्य प्रार्थना क्या पूरी करोगे। हे नाथ तुम्हारे प्रसाद से इस जीवन में विशाखनन्दी को पुष्प करंडक आराम मे क्रीड़ा करते को देखने से जीव तव्य को सफल गिनु गी हे नर नाथ तुम्हारे समक्ष भी मन के मनोरथ पूरं न होगे यदि तो फिर पीछे तो भोजन प्राप्ती का भी सन्देह है। आप वज्र घडीत हो जो कि एक पुत्र के पराभव दुःख को देख कर सुखे तिष्ट रहे हो बड़ी शोक की बात है ऐसे सलील बचनों से नरेन्द्र के मन मे नदी के तट सम प्रगाढ प्रेम को दो विभाग कर दिये ऐसे बहुत २ कहने पर राजा ने कहा प्राण प्रिये सतप्तमत हो ऐसाकार्य करूंगा शेष बात दूर रही तेरे जीव तव्य को आतृप्ति हो तैसे यों रानी को धैर्य दे कर नरेन्द्र अपने आस्थान सभा मे गए मन्त्री को बुलावा दिया मन्त्री के समक्ष रानी का कोप करना और अपने कुल क्रम की व्यवस्था समग्र व्यतीकर कही मन्त्री ने राजा से कहा देव स्वस्थ रहो मैं देवी को जा कर समझाऊंगा मन्त्री राजा की आज्ञा लेकर देवी पास गया अनेक प्रकार से देवी को शिक्षा दी पर देवी को सद्बुद्धि हुई न अज्ञ सुख माराध्य सुखतर माराध्य विशेष ज्ञ ॥ ज्ञान लव वि-

विदग्ध मद्यापि तं मरं न रंजमति १।

तत्पश्चात् मन्त्री विस्मय मग्न कर राजा पास आकर कहने लगा देवी म रण के लिए निश्चय कर प्रगाढ़ कोप से उद्यत हो रही हैं इस वास्ते यथा तथा उस की बात पूरी करो राजा कहने लगा विरवमूति वसंत क्रीड़ा देवीयों के साथ कर रहा है। इस की अवज्ञा कर विशाल नन्दी को आ ज्ञा देना साध्य नहीं और कुछ मर्यादा का भी भय है। मन्त्री ने राजा से कहा आप का कथन सत्य है परन्तु स्त्री महाग्रह एक तरफ दूर निग्रह है राजा सविसाद कहता हुआ कुछ कम चलती हुई मर्यादा का लोपदुस्तरी तरफ मित्र का मृत्यु इस वक्त में संकट है दोनों तरफ विधि वश आपत काल में निश्चय बन्धु वर्ग का दृढ़ नेह का भी विछेद होगा। राजा स्त्री का मुख्य अमुक्त को नहीं देखते पर भूमि ऊपर आजन्म होवे काल तक फिरता रहेगा इस कारण बड़ा दुःख है। ऐसे राजा के कहने पर राजा के अभि प्राय को जान कर निपुण बुद्धिवंत मंत्री एकान्त स्थान स्थित रहा सम्यक प्रकार विचार कर राजा से कहा हे देव ऐसे करने से कार्य सिद्ध होगा य हा के प्रत्यंत वासी राजा अहंकार कर देश को विद्रव कर रहे हैं ऐसा एक लेख लेखाचार्य त्यार कर तुम ने आकर समर्पे उस लेख को पढ़ा कर युद्ध के लिये प्रयाण करने का सामंत वर्ग को खबर देना तथा विरव भूति का भी पुष्प करंडक बाग में निमंत्रण का पत्र दे देना जिस से वह बाग को छोड़ कर आ जायेगा क्योंकि वह बड़ा वीर है इसे दोनों बात बनी रहेगी। राजा भी इस बात के सन्मुख हुआ राजा ने युद्ध का आदेश दिया और नगर में खलबलि हुई राजा भी प्रस्थान स्थित उद्यम हुआ नगर से। विरवभूति बाग से चल कर नरपिप के चरणारविंद में आकर नमस्कार किया कर मिला कर कहता हुआ हे महीपते वैरी का क्या का रण हुआ राजा ने कहा हे पुत्र अपने सिमांत प्रत्यन्त पुरुषसिंह मंडला धिप राजा पहले तो प्रसाद भाव से आज्ञा को मानता था इससे हे वत्स हमारा यह एक पराभव है अपने पितामह के वाक्य सुन कर कहने लगा रीपु गर्व चढ़ कर हमारी पृथ्वी पर स्वामी पना स्थापना करें हम उस की रक्षा न कर सकें चित्त के उत्साह को मुक्त कर बैठे रहें ऐसे पुत्र को जन्म

देकर समितनी ने व्यर्थ पृथ्वी पर भार बढाया इस लिये हे पितामह मुझे बड़ा दुःख है सामर्थ्य पुत्र निचेष्टा बैठ कर पिता को युद्ध भूमिमें ठेले ऐसे पुत्र को धिक्कार है मुझे आदेश दो भुजा दण्ड से उसे खदेड कर आप की आज्ञा शिरोधारण करवाऊ तो जीवन मेरा सफल गिनुंगा ऐसे प्रणति करने पर राजा ने प्रयाण करने का आपदेश दिया विश्व भूति भी प्रणाम कर सैना के साथ गमन किया अनेक नृपतीगण की भेठ प्रती छता विध्यगिरी समीप एक स्थान में स्कधावार का प्रस्थान किया प्रधान विचक्षण परिवार से विंध्यगिरी को देखने के लिये चला कोतुहल से गिरी को देख रहा है कहीं पर हस्ती सुण्डादण्ड उल्लाल रहे हैं कहीं किन्नरी नाच रही हैं कहीं झरने झरते हैं कहीं पुछा टोप कर शेर उछल रहे हैं विश्व भूति चारण जन का कीर्तन अपना सुनता हुआ और दान देता हुआ निज आवास आकर सेना के साथ प्रयाण किया। अनुक्रमे चलता हुआ सीमा प्रान्त नगर में आकर प्रस्थान किया और वहा का रहने वाला श्रेष्ठी को बुला कर ताम्बुल अपने हाथ से देकर कष्ट का विवरण पुछा श्रेष्ठी ने कहा हे देव आप जैसे भुजा वली की छत्र छाया रहते हमें स्वप्न में भी परचक्रका कष्ट नहीं पर साक्षात में तो होई कैसे यह सर्व असत्य है कुंवर ने भी प्रजा जन को प्रमुदित गाय महीषी बकरी और कर धर यानी कुक्कट प्रचुर धन धान्य समृद्धि वंत ग्राम नगरा दीक को देख कर विस्मय प्राप्त हुआ फिर सेठ ने कहा हे देव जीवित केशरी के नखावली तथा गल केशी को कौन तोड़ सके तथा सर्प की मणी कौन लेसके जहा प्रतिदिन साधु जन विषयों के दोष वताने वाले नित्यउपदेश देते हैं उनकी तन मन भोजन वस्त्र आदि से सेवा भक्ति पूर्वक नर नारी करते हैं गृहवास में रहने वालों ने भोग उपभोग सामग्री व्यापारादिक में लाभ मिलता है यदि कष्ट है तो तरुणी गन के नयनों के चाप बाण मुक्त करने से होता है ऐसे युक्ति पूर्वक वचन विलास कुंवर सुन कर मुस्कराया तम्बोल का दान देकर सेठ को विसर्जन करे और दूत को बुला कर पुरुष सिंह राजा को कहलाया विश्व भूति कुंवर आपके दर्शन करने के लिये उत्सुक है नर सिंह महीपति ने कुंवर को पथ रायण के लिये अपने प्रधान पुरुषों को भेजे राजा के अनुरोध से कुंवर

आ तत्काल स्वेद के प्रवाह से शरीर झरने लगा कुंवर ऐसे विचार कर ने लगा राजा ने अत्यान्त राजा का एक कल्पित प्रपंच रच कर मुझे उद्यान में निकालने का निज बुद्धि से बनाया था। निज पुत्र विशाख नन्दि को क्रिड़ा कराने के लिए अपना अपमान का दूर करने के लिए यह कपट रचा मैंने दूर देशवर्ति ग्राम नगरादि सीमा में स्वस्थ तथा चोर परचक्रादि भय हीन लोको को निज नयनों से देखे यदा युक्त कार्य निज इच्छा से राजा ने आचरन किया परवस होकर हृदय में मायारचि तो फिर ऐसा का क्या विश्वास ऐसे कुछ क्षण विचार कर विश्वनन्दि के सेवक वर्ग को कोपा वेश से होकर तर्जित किये रे रे दुराचार आचरने वाले मैंने इस उद्यान को बिना तजे ही तुम्हारे स्वामि सहित तुम को प्रवेश करने को किसे कहा यह तुम्हारा क्या सदाचार है मेरे प्राक्रम को क्या तुम नहीं जानते जो स्वेच्छा से क्रिड़ा कर रहे हो मेरे हनने पर कोन परित्रान करेगा कहो असहाय हो कर अभिमान से यहा रम रहे हो निज बल दिखाने के लिये कपित्थ वृक्ष की साखा के प्रकृष्ट मुष्टि प्रहार किया उस मुष्टि प्रहार से पास के पर्वत तथा वृक्ष तथा मेदनि भी कापने लगी उस मुष्टि के प्रहार से कपित्थ वृक्ष के फल सकल फल टुट भुमि पर पडे निविड़ वन घन से थे विशाख नन्दि के पुरुषों को दिखा कर के गर्व से कहा रे रे सेवको जैसे वृक्ष के फलो का पाटन किया ऐसे तुम्हारे मुन्डो को गीराऊंगा दुर्विनय शील को दूर-करु उद्यान रमणकोतुहल का फल प्रगट करूं पर तात से लज्जाता हुं निज कुल कलंक से डरता हुं लोकोपवाद से शंकता हुं ऐसे कह कर तत्काल तिव्र कोप वेग उपशान्त हुवा सवेगमार्ग को प्राप्त हुआ ऐसे चितवन करने लगा विषय परवस जन क्या रहिलना को नही देखता और दुष्कर से दु-ष्कर व्यवसाय प्रवर्तता है विवुधजन निंदनिक तुच्छ कार्य विमुक्त मर्या दा क्या नहीं करे विषय प्रशक्त जीव क्या दुर्विनय न करे यदि युवाते से विमुख होकर देखता है जो मनुष्य उसका दुर्गति दुखों में स्वप्न में भी पड़ना कदापि नहीं होता।

चत कुरंग मातंग पतंग भृंगा। मीना हता पञ्च भिरेव पंच ॥

पक मयावेन सवर्व निद्दन्मवे । य संयवे पंच कथ पिययु १

जिस का मन सरद् ऋतु के कामदी पुर्णिमा के चन्द्रवत *किरण के* समान मुख को मन म भी चितवन नहीं करे पंस पच बाण यानी मर्न-गपृत दमने वाले धैर्यवंत का मन विष लित नहीं होता विश्वभूति वि चार रहा है । यौवन रूप तिमिर से विवेक रूप नैन को आच्छादित क-रके गृह में बसता रहा यद्यपि मेरा बुद्ध नष्ट नहीं हुआ सद्धर्म को धारण करू ऐसे तिव्र वैराग विषय विरक्त मयद्रमान से संसार का निश्चय असार मानता हुआ संभूति मुरि के पास गया गुरु कैसे है यति प्रशस्त गुण रत्न के सागर तीन लोक को प्रकाश करने में दिवाकर है सौम्यता कर सम्पूर्ण चन्द्र है जो विशुद्ध सुख अर्थात् मुक्ति सुख दमे मे बेल के बीज हैं और मेरु सिखर समान निश्चल है धर्म में । चतुर विध *संघ के कार्य भार वहन में प्रकाशित है सुरेन्द्र नरेन्द्र को भी शरण करने* वाले दुष्ट काम रूप तम अन्धकार पटल को नाश करने वाले ।

प्राकृत भाराच छंद

तवग्गि दड्ड पावओ विसुद्ध भाव भावओ
सयावि गुत्ति गुत्तओ पसत्थ लेस जुत्तओ १
पर्यंड दंड वज्जिओ, जिणिंद मग्ग रंजिओ ॥
पणट्ट माण कोहओ विमुक्क माय मोहओ २
अणासवोद् कारओ दुतित्थि-सप्प तारओ।
पयुप्प कप्प रुक्खओ पणट्ट सव्व दुक्खओ ३
मुणिंद विंद वंदिओ असेस लोय नंदिओ
अयोग दिग्ग संसओ पणट्ठ सव्व दोसओ ४

अर्थ तप रूप अग्नि से पाप दग्ध किये निर्मल भाव से आत्मा भावित है सदा तीन गुप्ती कर गुप्तवंत प्रशस्त लेश्या युक्त है (१) प्रचंड मन वचन काया अशुभ दण्ड । से आत्मा वर्जित है जिनेंद्र राग द्वेष रहित पुरुषों का बताने मार्ग में रंजित द मनष्ट क्रोध मान दूर किये माया लोभ मोह का (२) मनु यों को ये द्व कारक है कुतिथियों के कुमार्ग को बताने

वाले अपूर्व कल्प वृक्ष समान है आत्मा के शत्रु पक्ष के राग द्वेषादिक को प्रनष्ट किये है (३) मुनिवृंद से वन्दित है अशेष लोकों ने स्तुति की है। अनेकों के अनेक सशय छेद किये हैं सर्वदोषो को प्रनष्ट किये। ऐसे गुरु को देख कर सर्वादर से अपनी आत्मा को कृतार्थ मानता हुआ प्रणाम कर चरण कमल प्रति। गुरू सन्मुख उपविष्ट हुआ गुरू ने भी समस्त शास्त्र पार गामी मधुर रस से भरे हुये पचानन सिंह समान रव अर्थात् वाणी से धर्म देशना दी।

यत नसाजाइ नमाजोणि, नंत ठाण नत कूल
नजाया नमुआ जत्थे, सव्वे जीवा अणतसो १
दुल्लभेखलु माणुसेभवे, चिरकालेणाति सव्व जीवाण
गाढाय विवागकम्मुणा, समय गोयम मप्पमायए (२)

न ऐसी जाति योनी स्थान कुल जगत् मे है जहा इस जीवने जन्म मरण न किये सर्व जीव ने। अनन्त अन्नत बार किये (१)

चिरकाल मे भी सर्वजीवओ कोमनुष्य जन्मपाना निश्चय दुर्लभ है क्योंकि जीवओं के कर्म विपाक बहुत कठिन है इसलिए किंचित् प्रमाद हे गौतम मत करो।

यदि मनुष्य जन्म मिल जाये तो फिर आर्य भूमि (२) यदि आर्य भूमि मिल जायेतो पचेन्द्रिपन पानादुर्लभ है फिर निरोगता फिर उत्तमधर्म श्रवण (४) तथा धर्म पर श्रद्धा (५) तथा धर्मधारण करना इत्यादि गुरु उपदेश सुनने के वाद समुज्झित यानी दूर किये सर्वरत्नाभरण पोशाक को अंगीकृत गुरु चरण शरण को सिद्धात पढ ने के विधान से शास्त्र पाठ शुरु किया आसेवन किये पच महाव्रत तीन गुप्ती रूप शिक्षा ग्रहण की पंच सुमती आदि ग्रहण शिक्षा रूप जिनेद्र प्रणीत दिक्षा ली प्रति दिन क्रिया कलाप का ज्ञान दिया शिव सुख देने वाला सयम धन दिया सामायक सूत्र आदि का पाठ पठन करना आरम्भ किया।

इहावसरे कुमर प्रव्रज्या ग्रहण सुनकर स्वजनों पर मानु इन्द्र के हाथ मे से वज्र अरवनी पात का ताड़ना से शोक उत्पन्न हो ऐसा हुआ अन्तेपुर देवीओ के सम [illegible] युवराज सहित विश्व नन्दी राजा सम

देते हुए ग्रामानु ग्राम प्रति विचरण करते सुरेन्द्रपुरीवत् मथुरा नगरी मे समागमन किया स्त्री पशु पण्डक रहित स्थान में उत्कृष्टतप कर रहे हैं निज परिवार सग वह कैसा

धीरज तात क्षमा जननी, परमारथ मित्त महा रुचिमासी ॥
ज्ञान सो पूत सुता करुणा मिति, पुत्र वधु सुमता प्रति भासी ॥
उद्यम दास विवेक सहोदर, बुद्धि कलत्र रु सुहृद दासी ॥
भाव कुटम्ब सदा जिनके ढिग, यो मुनि को कहीये ब्रह्म वासी । १ ।

पश्चात प्रदेश मे निवमते हुए एकदा परम सम्-वेग मन मे निजजीव के निज मन को उपशान्त करने क लिये चिन्तवना का आरब्ध किया रे जीव सुख को चाहता है दु ख से विमुक्तता वचता हैं यही तुच्छ बुद्धि हैं पर ऐसे नही जानता कि धर्म सग बिना मुक्ति नहीं होती भोगो को इच्छता है रती करता है प्रशस्त भोगों मे मुढ मति सीतादि परीसहों को प्रमादवस साम्य भाव से नहीं सहता ऐसे सम्प्रधारण कर एक मास क्षमण किया विशेष कर उद्यम वत प्रतिदिन शुभ ध्यान ध्याते हुए अकुशल मन को रोका है वहा पर प्रतिपूर्ण मास क्षमण कर प्रति लेखित भण्डोप करण को ले कर अतपरित अचपल युग मात्र भूमि को चक्षु से देखते सूत्रार्थ पौरषि काल के पर्यंत मे गमन किया भिक्षा चरी के लिये उच्च मध्यम अवय मिहोमे गोचर चरीयामें सोलह उदगमन सोलह उत्पात्त सोहल दस ऐषण दोषो की उपेक्षा करते लाभ आलभ में रतिअरति परिहरते प्रकृष्ट तप अनुष्टान कर कृष किया शरीर हिल रहा है परिशोषीत किया मास शोणित को । प्रगट पन मे दिख रहे अस्थि नशा चर्म से माढ हुआ उज्जवल प्रतिपदा के चन्द्र प्रति बिम्ब सम कला का अवशेष वहा राज्य मार्ग पर स्थित एक आवाश मे मथुरा के राजा की पुत्री अग्रमहेशी की विवाह के लिये पिता की आज्ञा से पहिले आया हुआ था निज परिकर के साथ विसाह नन्दी रहा हुआ था उसके पुरुषो ने विश्वभूति मुनि को जाते हुये देख कर विसाह नन्दी को कहने लगे हे स्वामी आप जानते हो इस प्रव्रजित को वह कहने लगा सम्यक नहीं जानता उन्हों ने कहा हे कु वर यो विश्व भूति [illegible] जो पहिले दिक्षा ली थी उसका

किया पच महाव्रतादि मूल उत्तर गुण पालन किये का फल अतुल्य है निश्चय तो जमाने के अन्य जना से अतुल्य बल कलित मैंने प्राप्त हो पुन ऐसे निमित्त कर शिला तल पर स्थित हुए निदान वन्ध विश्वभूति मुनि का सुन कर इतर समीप वर्ती मुनि आए वहुत कहा। हे महानुभाव आप स्वयमेव जानते हो युक्तोयुक्त को यद्यपि आप को कहने की कोई आवश्यकता नहीं क्यों कि आप विद्वास हो तथापि निवेदन करते हैं एक लोहे की कीली के लिये देव कुल का पाटन कोई न करे कोटि रत्न के बदले मे कोई एक पैसा मात्र को क्रय न करे गोशीर्ष चन्दन के गरुप-समुह सार अग्नि में वाल कर इगाल करना वुद्धिमता नहीं ऐसे नि'कलक-ता से चरित्र तप को चिरकाल तक आचरण कर किम्पाक फल के समान निदान वन्द करना प्रयान्त मे भयानक फल है क्या पवन के गु जने पर मन्दिराद्रिाकम्पलि होता है ऐसे ही दुर्जना के वचनो से साधु जन का मन क्या चोभित हो सके चिरकाल से धारी हुई मर्यादा को क्या जल निधि अतिक्रमता है तिमिर का प्रसार होने पर क्या मृगक तथा सुर्य का प्रकाश रुकता है निर्मल गुण रत्नो के महानिधान तुम्हारे जेने सत्य पुरुपधर्मकमलश्री को यद्यपि ऐसे पतन करेंगे तो सामान्य पुरुपो का क्या कहना इत्यादि विविध वचन भापित करने पर भी प्रति वचन नहीं दिया तव निज २ स्थान पर निरानन्द मे मुनिन्द्र गए।

विश्वभूति निदान वन्ध के अध्यवसाय अविचलित आलोचना प्रतिक्रमण किया विना काल अवसर मे काल कर महाशुक्र सातमा कल्प २ सतरै सागरोपम स्थिति देव पने उत्पन्न हुआ इति अष्टदशम् भव वर्णन सम्पूर्णम्

तत्पश्चात् यहा से चवन कर जैसे प्रजापति राजा के पुत्र वासुदेव अव होवेगें वैसे अव कथना करत हैं इस ही जम्बू द्वीप नामे द्वीप मे भारतवर्प पोतन पुरी नगरी में प्रजापति अभिधान् तथा रिपु प्रति शत्र नामे राजा उसके सकल अन्तेपुर मे प्रधान भद्रा नामें पट्टरानी अग्र महेपी थी हस्ती १ केशरी २ चन्द्र ३ सुर्य ४ यह चार महा स्वप्न देख कर पुत्र गर्भाशय मे स्वर्ग से आकर उत्पन्न हुआ स्वप्नानुसार जन्मोत्सव कर अचल

प्रतापवत कुल केतु (ध्वज) समतुज पुत्र होगा। जिस वास्ते ऐसे स्वप्न हे देवी महा पुन्य से किसी को दिखते है। महिपति ने अग्रमहेषी का अभिनन्दन किया। रानी सुनकर हर्ष भर निर्भर अगवत हुई। प्रात काल स्वप्न शास्त्रज्ञों को निमन्त्रण करा वह शास्त्रज्ञ उज्वल वस्त्र पहन कर नृपशाला मे आकर राजा को नमस्कार कर पृथ्वीपति के आदर सहित आसन्न पर उपविष्ट हुये। भूधवने रानी के स्वप्न कहे। रानी को परेचान्तर श्री फलादियुत भद्रासनोपरि बिठाई। स्वप्नशास्त्र की पुस्तक का सशोधन कर कहा हेमहाराजाशास्त्र अनुसार आपका पुत्र महाबलवत शख चक्र धनु गदा-खड्गधारी एक ही वीर पृथ्वी पर प्रथम वासुदेव होगा। अर्धभारत का स्वामी अष्ट हजार यक्षसेवित सौलह हजार नृप का स्वामी वै क्रिय शक्ति वत नरसिह आदि रूप करने में शक्तिवत सुभग सुशील सुलक्षणवत ललनाओंके नैनमाला से आलौकिक होगा। राजा सुनकर हर्षधर आजीवीकायोग्यधन दिया। स्वप्नपाठक पण्डितों ने जो कहा वह देवी को पूर्वानुपूर्वी से कहा। मृगावति सुनकर अहलाद प्राप्त हुई। स्वप्नो का अर्थ सुनकर अनुक्रमे गर्भ दोप रहित गर्भ की पालना करते प्रतिपूर्ण समय से प्रशस्त दिवस महूर्त घटिका चन्द्रकर्ण योग लग्न में प्रसवित किया। पुत्ररत्न के सुकुमार है पाटल वृक्ष पुष्प सम पाणीपाद के तल तमाल दल के समान कृष्ण शरीर सकल पुरुप मणि के एक शत अष्ट लक्षणवंत है।

त्रिपिटक करडक आडम्बर सम अभिराम वन्त सुत प्रसूत किया प्रजापति राजा सुत जन्म से प्रेरित हुआ। कराये है महलों में महोत्सव नगर को शुद्ध कराकर इषत् जल छिड़कवा कर खड़ी से धलवा कर धूप उत्क्षेप किया। स्थान स्थान पर राष्ट्र मार्ग पुष्पों का पुंज किया है। दीन दुखी बदी जन को भोजन वस्त्र सुवर्ण रूप्यकदान दिया। सधवा स्त्रियों ने राज महिलादि में मगल किये प्रसुति गीत गाये त्रिपिटक करडक दर्शन अभिराम पन से अन्यदा अशूची टालकर त्रिपिष्ठ नाम स्थापन किया। पच धात्रियों से हस्तोहस्त सचारित करते गिरी कधरा स्थित चम्पकलता के पुष्पवत् निर्विघ्न पणे वृद्धि पा रहा है।

अनुक्रमसे कुमार भावको पाने पर प्रजापतिराजा ने त्रिपृष्टक को कलाचार्य के पास कलाभ्यासक्ष्यान इसलिये शुभतिथि वार दिने पठाया अपनीबुद्धी के प्रावल्यता स तथा संक्रिया स अल्पकाल में ही कलाकुशल हुआ अध्यापक ने नृप सन्मुख उपस्थित किया। अविवर ने बुद्धि प्रकर्षपन से कला कलाप आदर अध्यापक का रत्न सुवर्ण पुष्प वस्त्रादि से सत्कार कर विदा किया कुमार ने निज महल में प्रवेश कर अपना मामा कृतभाव के साथ रहने लगा। अत्यन्त प्रेम युक्त क्षणमात्र भी वियोग नहीं सहन हो उद्यान वादि में क्रीडा करते विचरने लगे। निज इच्छा से कोमल कथा होते भी कुमार का भुजा बल देख कर मयासुर असिस्थान बहुन कमल स सहन मस्त भी कांपते हैं। लीलार्के वृक्षपंक्ति को यहाँ चोर स टकते ह। यहाँ यहाँ धरनी वशाउत इस अरबरती गाड़ी कांपती है। पाश्चात्य सभी किसी के सुप्टिभाव कुमार ने जिसके किया निषयानुवसम निश्चय सेंस पर गृहणी का पुत्र वह आवे नहीं जिसपरदृष्टिपात करे तब सादर विनय से प्रसन्न हो उठे। क्षिप्र क्षिप्र मुंग भावें। ऐसे किंकर सर्व व्यापार छोड़कर आवें अनादरसेभी जिसको आदरा (वितरतो) करे। कुमार यह सेवक अपन का कृत्य कृत्य मानता हुआ वह निर्वाण प्राप्त हम मानता ह। कुमार जिस स्थान का कार्य आदरा करें। शेष कार्य का छोड़कर वही करे पुनरुक्त पालने की शक्ति नहीं। पूर्वभवाचित मुद्रा से यह वर्धमान सुख मिले अचल कुमार के साथ त्रिपृष्टक के वासर व्यतीत हो रह हैं।

इव राज गृही नगर में अर्ध भारत वसुधा का अधिप मणि मुकुट वत् प्रलय काल मार्तण्डमंडलक समशिरि चक्र में प्रताप का उत्पन्न करता हुआ सुभावक स मिलोक नक्षिन यक्ष मंदर समान राव अरमा सुन्दरी के साथ विश्राम कर रहा है। मत मातंग कुम्भस्थल के निहत करन पर मुक्ताफल निकलकर पृथ्वी पर सुशोभित होता है। मत्त

नोट– श्री जैन दिगम्बर महावीर पुराण में विशाख नंदी का जीव अल्पमतिवासुदेव बना कहा है किसी जन्म में तप करने से युद्ध में सीमावर्ती राजाओं का मान मर्दित करने पर राजाओं में चाक

चूरे है। महानगरोकी ग पुर परिघ (अर्गलासम) बाहु दृढ वीर बलवान है। वैरेय। को ग्रीवा का चक्र रत्न से निकान्तिक छेदन कीहै तथा (निशित) कायरा की ग्रीवा पकड़ ली है। ऐसा अस्व ग्रीव नामे प्रति वासुदेव राजा प्रवर पंच प्रकार रमणीक विषय श्री को भोग रहा है। इस ही वर्तमान कालमें विसाहनंदी कुमार चिरकालतक राज्य कर पाप पुञ्ज एकत्रित कर मृत्यु पाकर नरक गति में उत्पन्नहुआ। फिर तिंवच में ऐसे जन्म मरण कर एक गिरि कन्दरा में सीहणी की कुक्ष से सिंहपणे जन्म लिया। वाल भाव से मुक्त हुआ। इत उत हिंडन करता हुआ इम अस्वग्रीव के राज्य में उपद्रव कर रहा है। प्रधान सालीक्षेत्र निवासी कृषक जन को वह उपद्रव करता हुआ कृषक जन मिलकर राजा अस्वग्रीव के पास आए अत्यन्त सिंह का कष्ट राजा से कहा हे देव कृतांतवत् शेर के डर से हम इन सालीक्षेत्र। को रक्षा नहीं कर सकें हम अन्य स्थान जायेंगे अस्वग्रीव ने उनसे कहा तुम क्या कातर हो रहे हो यह दुष्ट तुम्हारे मन को भी पीडा न पहुचा सके मेरे सोले सहस्र राजा प्रति वारी २ सिंह गुफा पास सिंह हटाने को भेज दूगा कृपक जन प्रहृष्ट होकर निज स्थान गए। अन्तदा अश्वग्रीव राजा सुर सुन्दरीवत् विभ्रम करने वाली देवीवो के परिवार से मुर्छित

हावो मुख विकारस्यात्, भावोचित्त समुद्भव
विलासो नेत्र जोगोद्दयों विभ्रमा भ्रू समुद्भव ।१।

वैश्रमणगृवितघन भडार मे करितुरी गुरपतीगम आज्ञा ईसारिल्न मे मुर्छित होकर चितवन करने लगा क्या मैं ऐसी सामग्री परीवृत को अन्य किसी का मन भी न पहुच सके। नित्य अप्रमत चित्त वाले अ ग रक्षिता से रक्षित मेरे याद करते ही करतल में चक्र आयुध का प्रादुर भाव होने वाले पर कोई प्रकार विनाश करने का कृत्य हा सके अपितु न हो सके। यदि हो सके तो उस को जानने के लिये मैं कोई उपाय क रु और प्रतिकार कर अपनपे की रक्षा क रु ऐसा सम्प्रधारण कर नैमित्तक को बुलाया एकात में आसन दिलाया। वह वहा वैठ गया सत्कार पूर्वक पूर्वक सावदिरसे पूछा।

ह मन्त्र मेरा मृत्यु कारी होगा कि मैं आप ही मरन पाऊं गा ऐसा निमित्त सम्यक प्रकार विचार कर कहा। हमने भी निमित्त बल से अपशकुन पर कहा है देव अनिष्ठ अमंगल मरन कैसे कर रह हो इत्यादि ऐसे निमित्त के आग्रह को। राजा ने कहा है भृ वृष स कुपित मत हो गौं जैसे पूछता है वह कहा। नैमित्तक न कहा यदि आप का ऐसा ही निश्चय है तो आप का मृत्यु कारी है राजा ने कहा मैं कैसे जान सकूं। यावपी मे कहा है देव जो साली क्षेत्र के पास सिंह को व्यापादेगा वह हाथ सैव राजाओं में सम्मान पाने वाला चंड वेगदूत को हनेगा यही निश्चय आप का मृत्यु कारी जान लेना। सब प्रकार से उससे बचते रहा। ऐसे सुनकर राजा ने नैमित्तक को विसर्जन किया। आस्थान मंडप स्थ उपविष्ठ हुआ आमात्य आदि को पुच्छा। अहो मन्त्रीयों सम्प्रति नरपति चक्राधिप तथा कुमार मनुष्य यदि कोई सुनने में आता है उन्हों न कहा है देव तुम्हारे से अधिक कौन मनुष्य नहि है। इस लिए उस का (चाभि व्याति) हम आप को कहें पृथ्वी मंडल पर सूर्य विमान फिरता हुआ भी (विस्फूर्ति) सर्वां जाता है आप से बलवान कौन है राजा ने कहा है मन्त्रिया यह धरा बहु रत्न धारणी है बलवान न हो ऐसा नहीं सम्भव नहीं मन्त्री गन मे कहा है महिप हमें नहीं जानते लोगो से करणों में सुनने में आता है प्रजापति नरेन्द्रकेकुमार अमनुष्येऐसा साम्यप्राक्रमवत है शेष बलवान सौ किरों को लीला से बल को हनने वाले हैं। ऐसे कारणों से आक्रियों कर अश्वग्रीव ने चंड वेगदूत को बुला कर कहा है भद्र जाओ मेर अमुक प्रयोजन राज्य प्रजा पति से साधन कराओ। एव बोला जो आप कहोगे वह मैं करूंगा अश्वग्रीव की आज्ञा का भ गी कूच कर यहां से निकला मार्ग पुरुष परिवार के परीक्षित्य पोतनपुर के अभिमुक्त्य चंड वग चला। तब प्रजापति राजा परिपूर्ण महा मुख्य वस्त्रों को पहन कर उत्तम प्रवर शृंगार कुमार प्रमुख परिजन अनुगत अन्तेवर के मध्य रहा वैसा है। महा (प्रेक्षणक) नृत्य हो रहा है गहकैसा कोकिल कंठ से गायन करती हुई रूप्त स्वर तीन ग्राम मूर्छना युक्त भैरव १ मालव कोस २ हिन्डोल ३ ४ मेघ ५ श्रीराग ६ एवम् षट राग युक्त।

दे हा — भैरों की धुनि भैरवी, वगांली वैरारी, मधु माधव, पुनि सैन्धवी, पाचों विरहनी नारी, । १ । टोडी गौरी गुनकली, खम्भायत पहचानी, और कुंकवि कहत है, मालव कौश की जानी । २ । राम कली पट मंजिरी, और वह देवसाग्र, ये नारी हिन्डोल की, ललित विलावली राख ।३ नेसी नट अरु कान्हड़ो केदारों का मोद, दीपक की प्यारी सवे, महा ऽ भ प्रमोद । ४ । आसिरी आसावरी, मारू वहुरी वसत, श्री राग की रागनी माल श्री है अन्त । ५ । भोपाली अरुगूजरी, देश कार मल्लार वक वियोगनि कामनि, मेघराग की नारी । ६ ।

टेक — वन आई गोपिया कान्ह २ सारे गम-पध नीसा, धप मगरे सा वन वन । छी छी छोम छन-न न-न नन् चाल चलत प्यारी न्यारी न्यारी दर्शत, गोरे से वदन पर मुकट की छइआ वन । १ ।

ऐवम् सप्त स्वर पटराग तीसरागनी युक्त हाव भाव विलास विभ्रम सहित वेस भूषा सम पूर्व अदष्ट रूप पूर्वक परम रग के साथ शरीर का सकुचन सप्रासरन निष्पन्दन करते हुए रज्जु नृत्यआदि हो रहे हैं। चित्र लिखित पुत्तल्ली का सम हो कर देख रहे हैं। इहावसरे चड वेगा भिधान दूत चीर के मथन करने पर वुल वुले उठैं ऐसे खुश होता विख्यात प्रभाव वत मानु-वि बुध देवताओं के शस्त्र धारण कर अनिवारित गमन मे महलों में प्रविष्ट हुआ उस को देख कर रिपुप्रति शत्रु राजा स्वामी के दूत को जान कर ससभ्रम समुस्थित होकर महत्ति प्रतिपत्ति करी अश्वग्रीव राजा के शरीर की आरोग्यता पूछी। शासन को सीरो परि प्रतीछित करी नृत्य वद किया प्रेक्षणक नृत्य व्यापार निज २ गृह जन गए रंग भग करने के कारण तृपिष्ट कुमार ईर्षावन्त हुआ। किसी पुरुष को पृच्छा करी यह कौन है किस कारण से इस ने आगमन किया जिससे तात अभ्युस्थित हुए। प्रतिहारिक ने किस कारण द्वार पर ही प्रवेश करवे को नहीं रोका। उस पुरुप ने कुमर को कहा नृपाधिप नृप का प्रधान दूत है इस को स्वामीवत् मान कर राजा खड़ा हुआ प्रतिहार ने भी इस लिए नहीं रोका ऐसी अनुवृति से ही सुख से यहा निवेश हो सकता है। प्रभुचित्त अनुवृति से रहना सेवक का धर्म है कुमर ने कहा मैं जानना

व्याकुल हुआ चित्त मे चिन्तन करने लगा अहो कुमरों ने अशो.भनिक कार्य किया। इस दूत की प्रति कूलता से इस का रहस्य है अश्वग्रीव को ही प्रतिकूल किया अन्य था वल भार से मूल का विनाश होता है। कुम-रों के अपराध से मैं निर्दोप नहीं हो सकता वचन के कहने से कोईनहीं प्रति व्रजै प्रनि विनय यह प्रकट व्यवहार लिया जाता है जो भृत्य के अपराव मे स्वामी को दड यह लोकोक्ति है यह विषम बात वनी । अथवा निश्-चय विचार कर एक उपाय उपयुक्त धारण कर दूत को वापिस बुलवाया। विशेप पति पत्ती कर महा मूल्य प्राभृत समर्पित किया दूत को चतुर गु-ण दान दिया। राजा ने दूत मे कहा हे महा यशवंत वाल अवस्था मे निर्विवेकता सहज होती है जो योवनमया में मर्याद हीन की चेष्ठा राज्य कुल मे जन्म लेकर सहज मे होता है दुर ललितपन से यही कुमारों ने-तुम्हारा बहुत अपराध किया तो भी तुम सर्वथा चित्त मे सताप मत क-रना इर्षा भाव न करना मेरा इस मे दाप नहीं समझना तुम बालक तथा दुर्वल अपराध करने पर समझदार चित्त मे सताप नहीं करे मैं इन का जनक हूॅ उत्तरोत्तर प्रकर्ष कर गुण रोपने में सहायक हाना तुम्हें ऐसा प्रशाद करो और अपमान को त्याग। दूत ने कहा ह महाराजा आप व्या-कुल मत वनो क्या अपने बालक के अपराध से कोई आसकता है प्रेम के वस हो कर हृदय में एक भी अविनय को याद करता। राजा ने कहा मैं भी तुम्हारा चित्त वृति का लच्च को जानता हूॅ शुद्ध हृदय मे प्रतिपन्न करो यथा अश्वग्रीव कुमरों का अविनय नहीं सुने ऐसे करना। ऐसे कहने पर दूत ने अगकिार करा चड वेग पोतन पुर से चला चलता हुआ अश्वग्रीव नरेन्द्र के समीप पहुचा। अथ पूर्वागत नरो के कहने से कुमरों का वैर सुनने पर राजा रोमवत्त हुआ रौद्र रक्ताक्षी कर भाल पर भृकुटि आवद्ध कर देखता हुआ पूर्वगत शिष्टता तथा वैर रा-जा ने जाना जैसे हुआ था। दूत भी राजा को प्रणाम कर निज स्थान पर उपविष्ट हुआ उस समय कहने लगा यद्यपि हे देव वाल्यत्व से मेरा कुछ अपराव किया कुमरा का आपने सुना तथापि प्रजा पति नृपति इन कार्य का शोक मान रहा है और आप के शासन को विनय युक्त चूडा मणि वत्सिरो धारण कर रहा है। सदा निज भृत्य सम भृत्यभाव विशेप

पन दिखा रहा है। मागध लोक ईस के महलों में आर क गुण कथन में लग रहे हैं युवतियों के वस्त्रादि रव सुनने का नहीं आते हैं कि बहुना महि पति,को मैंने सच्चो दर्रं समरता|पवरप रे र [ि] । ।. नरर उन तुल्य कोई और नहीं देखा। अब अश्वग्रीव प्रति वासुदेव नैमित्तक वचन। को|स्मृति कर मन में,परिकल्पित हुआ यह एक नैमित्तक वचन का निश्चय हुआ आश्चर्य के साथ विचारा यदि द्वितीय वचन भी एसें होव तो

नरपच मैंने अश्वरत्न हे प्रभावित हो कर,दूजे,दूत को फिर,बुला कर कहे दूत प्रजापति राजा के पास तू जा मैं कहूं जैसे वचन कहना जो शाली क्षेत्र के पास सेना युक्त आ कर केसरी की परिरक्षना करो (हटाओ) जो आप आज्ञा द रहे हो,ऐसे करूंगा या कह कर दूत राज महि से ,निकला क्रमता से प्रजापति के भवन को प्राप्त हुआ राजा ने दूत का सत्कार किया आगमन पूछा सिंह की रक्षा रुप नरेन्द्र की आज्ञा राजा ने स्वीकार करी प्रजापति स्वस्थान आया दूत को प्रेषित किया,कुमरों को बुला कर ऐसे कहा हे पुत्र। जो तुम ने अश्वग्रीव के दूत का तिरस्कार किया उस से प्रभावित तुम का करता हूं मेरा अकाल ही मृत्यु है ,क्यों कि पंचानन की रक्षा के लिये आज्ञा दी है यह भयानक है पुत्रों ने कहा हे तात किस लिए प्र म मृत्यु है। राजा,ने कहा अश्वग्रीव प्रतिवासु देव,प्रति वर्ष बारी बारी से एक राजा शाली क्षेत्र के पास सिंह के भय की रक्षा के लिये भेजता है तुम ने दूत का अपमान किया इस से मेरे लिए ही अप्रस्ताव म मैंने जाने के लिए आज्ञा दी है। इस कारण मेरा मृत्यु मैं कहता हूं। हे पुत्रो आस्माल से यद्यपि नहीं जानते,कार्य अकार्य को इस कारन से मेरा ऐसा अभिप्राय ह मैं ही वहां जाऊं गा। कुमरों ने कहा हम सर्व सेना के साथ जानें हो इस महत आश्चर्य है यह केसरी कैसा है। अवश्य हम भी जावेंगे। १ पुत्रा हरिणांक (चन्द्र मंडल निःकलंक युद्ध में जिस की उत्पत्ति अर्थात हरियों म च द्रवत् एक ही है अदिकृत ऐसे युद्ध कला के जानने वालों में कुबेर के सम धन संचय अर्थात यश रुप धन का संचय मय था हा ेदरी वों की कला कलाप में युद्ध कला म भी निपुण है निमल से निमल है युद्ध कार्य म समर्थ है इस म युद्ध कला की जान कारी है) सर्व

प्रहरण अर्थात् शस्त्र मे अभ्यासी है। परम परिश्रम करने वाला है नि-
रूपम वीर्यधारी अप्रतिभाल्का लक्ष्मी पत ऐसे गुणों का धरने वाला एकला
होता हुआ भी तन मा र्ग प्र नन मे समर्थ है। क्या होगा ऐकत्र समवा-
य से अर्थात् चमू मे। ये गुण कहे जो सर्व तुम्हारे में है पर ये
बातें बताई तुम्हारे मे उस को प्रतिज्ञतना करने मे कौन सी शक्ति है।
इस वास्ते मन्छुर वन वैरा उन्ओव । जिस को अभिवर्जनीय है और
आ न है अ । द तु र अ न न स न नि न त न हो न जाने इस कार्य
में क्या विपाक होवे इ न ति र अ पा ड ड का छोड़ा सुन कहने लगे हे
तात च है कुछ भी हो इस नि च र ा र करेंगे। कुमरा निवारवेम ये
अनेक राजाओ के परिवार से चले करि, अश्व, रथ, पायक चार प्रकार की
सेना से परि वृत प्राप्त हुए सालीक्षेत्र को जहां वह केसरी रहता है
लोगों से पूछा वह कैसा है। अन्य राजाओ ने पूर्वे सिंह को कैसे रोका
चार प्रकार को सेना के साथ करत आदि व र ग कर कौत आदि शस्त्र
लेकर प्रमाद रहित गुफा के बारणे रह कर रक्षा करी । फिर भी
प्रतीक्षा सिंह नाद होते हुए प्रति शब्दा की आकीरणता करके नहीं गिनते-
तीक्ष्ण अ कुसप्रहार को गुल ? शब्द तथा मध्य जल प्रनष्ट हुआ मातगों
का कु भ स्थल को फोड़ता हुआ अश्वों की श्रेणी दिशों दिश भाग गई
पुरुषों ने अभिमान विमुक्त कर इष्ट देव का समरण करते दिशो दिशी
पलायन हुये पायक।

ऐसे सिंह की ख्याति सुन कर त्रिपिष्ट कुमर कहने लगा बड़ी आश्चर्य
की बात है एक तिर्यन्च पशु होकर ऐसे महा प्राक्रम धारी है जिससे प्रा-
क्रम धारी पुरुष शंकते हैं कुमर त्रिपिष्ट ने पृच्छा की ऐसा कष्ट
कितने काल तक रहता है कृपक पुरुषों ने कहा सर्व कृपक साल को नि-
काल निकाल कर गृहों में न ले जावें वहा तक रहता है कृपकों से कुमर
कहने लगा रे इतने समय तक शीत ताप वर्षा का कष्ट तथा पर्दम में
सेना का पड़ा रहना अपनी स्त्री पुत्र परिवार के वियोग को सहना इतने
काल तक बनप्रतिपालक बन कर रहना अच्छा नहीं कहा रहती है वह केसरी

यह स्थान अभी दिखाया कृषकों ने कहा आपकी जैसी आज्ञा है दूर से
ही सिंह के निवास स्थान की गुफा दिखा दी अरे उसका कितना परिवार
है और कितने शस्त्र पास में हैं कृषकों ने प्रत्युत्तर दिया निज शरीर मात्र
त्रिपिष्ट कुमार ने कहा यदि ऐसा है तो निरर्थक राजाओं का सेना विस्तार
धिक्कार है पापों के वश को अज्ञाहीन है निज भुजा बल से गर्वारव
करते हैं और कुविरपरों से आपके बल का गान गाते हैं चतुरंग सेना को ले
कर एक असहाय शेर को नहीं याद करते कि सिंहपरिवार निरास्त्र है वा
हम क्यों रखें सर्व कायर हैं ऐसे पुत्र की माता को धन्य है वही पुत्रवती
है जिसके गर्भ गर्जारव मात्र से वह से बड़ा भी जीवित कोलाहल से रहित
होता है जिस का ऐसा धैर्य का धरा अनिवार्य मस्तिष्क पर चमकता है
पकाकीहावेहुपमोचदपचोननकीवरहमसिसिंहिक्योंनहीं पावाअपस्यपाव हैऐसे
शेर की प्रशंसा कर आश्चर्य मानता हुआ शेष परिवार निवारकर अभेष्ट
रथ पर आरूढ होकर चला गुफा सम्मुख कन्दरा द्वार पर पहुँच कर इस
अवसेर लोक देखने का कातुकरत हा कमगारोहण स्थित हुए और
महान कोलाहल किया भय कलकलान शब्दों से विगत निद्रा हुआ जम्हाई
लेने से वदन के रदों का दिखाव हुआ कुरंग मांस रुधिर के भक्षण से
धारा लगा संध्यारूप शशीकलावत् दिखाता हुआ प्रतिधुनित कसर कटार
को वह दुरभट कन्दरा का भरने वाला नहीं है लांगुल रूप वेश (पूछ)
इस तल से धरती तल को ताड़ता है जिसका नख दिगंतर में फैला है
मम मापूट वह गर्जारव के समान गर्व रहा है ऐसा केसरी चलित
हुआ धीमा के साथ मन्दीनजर से कुमर के सन्मुख आच्छादन कर रहा है
त्रिपिष्ट भोभिक्षपत्र पन स्फाल भरने के शब्द को श्रवण कर रहा है धिक्कार
रचित जनों का समूह उसको आलाप कर रहे हैं रम्य अनभ में देखता हुआ
गया सारंगापि जब तक सुगोचर चला शेर को देख कर कुमर ने विचारा
क्या यह महानुभाव मस्तिष्क पर चरणों से ताड़ा है मैं तरग सहित
विचित्र शस्त्रों को धारण कर रण मध्य किंकरियों के साथ संघर्षयुक्त रथ
पर अधिरूढ यह तो युद्ध विपरीत है उत्तम पुरुषों को युक्त नहीं ऐसे चिन्त

चिरत कुटिपि कृतान्त समान कराल जिव्हा निकाल कर अलसी पुष्प सम ऐसा है खड्ग दक्षिण हस्त में ग्रहन कर बामें हस्त में प्रतिपूर्ण चन्द्रमन्डल के सम ढाल को ले कर रथ को छोड़ा त्रिपिष्ट कुमर भूमि पर स्थित रहा फिर विचार किया यह पशु तो फक्त तीक्षण दाढ नखा का शस्त्र से युद्ध करता है ।मैं खड्ग कर फल को हस्त में ले कर युद्ध इस स करु यह युक्त नहीं ऐसा विभापिन कर खड्ग फलक को त्यजें ऐसा अन्तर में त्रिपिष्ट की बास्यवय ऐसी दृढता देख कर प्रकृष्ट क्रोध उत्पन्न हुआ शेरको और विचारने लगा अहो ! जो राजा चार प्रकार की सेना लेकर महिपति मेरे से बचने के लिए अपनी रक्षा करते थे । प्रकृष्ट बल दर्पवत रण कर्म में सुस्रमी मेरे दर्शन मात्र से सेना आकीर्ण पथ पर खेड भी न रहते कहां यह दूध मुंह वाला नवनीत कोमल देह धारी चतूरंग चमू रहित रथ से उतर कर अनावरण वितर्क विना लीला के साथ बोलता महितलय पर खड़ा है । शस्त्रों को छोड़ कर ।भुजा बल मुझे ससक के सम अकेला ही मानता हुआ मेरी गुफा में प्रविष्ट कर रहा है । क्या इससेने मेरी ख्याति नहीं सुनी .मेरा बल जीवन में नहीं देखा । जो ऐसा होता हुआ संप्रत मेरा अपमान करना चाहता है । मैं मत्त गजों का सिर को विदारणे वाला मेरे कुटिल नखों का विशय देखते हुए भी खड़ा है तो इस के गर्व का फल दिखलाऊ ।और अपने कर्तव्य का फल भोगें। शेर ऐसे चित कर गल के गर्जित रव से ब्रह्माण्ड तल भेदता हुआ पुच्छ का छटा आच्छोटन कर मेदनी तल को मानों विधार र-विड वित वदन कर दाढा महोघ निबन्ध में मात्रा रहित काप के प्रभा युक्त करने के लिए गगनान्तर में उच्छल कर रक्त नैयन प्रभा रुप क्षर के विद्युत के दण्ड वत् तड़तड़ाट करता हुआ दिशी चक्रवाल में वेग आगमन के कारण केसर भार विसस्थुल हिलाते हुऐ बढ़ते अन्तर में यहा सज्जित किये दीर्घ पारद उल्लास वस विशेष क्षमा उदर करके अन्तर में टुट कर अप्र काया से ग्रिसिन करने का इच्छुक एक चपेटे पर भुवन जन का कवल करने के लिये कृतान्तवत बोलता हुआ झट त्रिपिष्ट कुमार के पास शीघ्र प्राप्त

दुग्धा मृणाल के सम कामल कर कमल के आगे तब त्रिपिष्ट ने एक कर से निपक्षा अमर एक कर स उसका ओष्टपुट मह्य कर जीर्ण पट के समान तथा जीर्ण पांडुपत्र वत् तट की भुजा सम (सारता) तड़तड़ाट फाड़ कर मसी पर मुक्त किया इस अम्बर में लोको मे उत्कृष्ट सीह नाद कर त्रिपिष्ट कुमार की जय २ कर मम गुणाधा पयस राक्षस किन्नर' दयगाम विम्बपरों का वृन्द गगन तक रहे विक्रम पा देवगत कर हर्षवश प्रफुल्लित नयन हुमे प्रहृत किये देवें दुन्दुभि तथा पटह काहली मृदगोदो वादित्र। बजाये पंचवरण पुष्प सुगन्ध गेरते हुये। कुमार को देवगण में मणिमय मकुट कर्णक कुण्डल कटि सूत्र त्रुटित (कड़े) हार प्रमुख प्रवर आभरण दाम (माला) गुथ की माला का गायन कर रहे हैं गोपजन विविध विलास युक्त ब्याग सहित तरुणियों के संग नृत हा रहे हैं सुप्रशस्त राज्य के। वह सिंह पिया अभीमान वस उस समय छिया करमे पर भी प्रबल पाच शरीर को दिखाता किम्त रहा है इस प्रकार मुमे बिना युद्ध किये अपूर्व रहित बालक मे लीला के साथ मारा अहा मेरा कैसा सत्व है अहो मैं असमर्थ हूं अहा मेरा शरीर निस्सार है सर्वथा निरर्थक नाम धराया सारंग राज इतने काल तक ऐसा विप लब्ध हुम्ह है ऐसे उस के क्रुर प्रलाप मान स कुश्रम कु. के सारथी ने उस क अभि प्राय को जान कर बडे अगा मधुर स्वर से भी सारंग राज लीला क साथ निर्दलित किये मदवन्त मातंग पुराहसमह का निप्रतिम शक्ति (प्रमाण रहित) विप्रासित किये विपक्ष प्रति हकारा सरपि प्रभृतसैना बल स सज्जित भी जिस के बल को नही आर्पा सके वह पुरष किस लिये ऐसा निरर्थक असरस बहता है मत जानना इस बालक ने मुझे मारा निज कुल अप सम का जो यह एक अ-ऋ है अनावत कारी प्रवर लक्षणवन्त समस्तबीरा में अग्रेसरी नर्मो का गुहि निष्ठुर भुजा दृढ़ बलधारी त्रिपिष्ट कमार अपूर्व है भावीकाल में भरतार्द्ध भूमि का स्वामी ज्ञानी जो मे बताया प्रथम वासुदेव स्वर्य प्रभरात्र क पाठको मे, ऐसा तू म गा में सिंह कुमार पुरुषों

में सिंह शेर शेर को हणे। इस में क्या अपमान है और क्या अप्रसिद्धि हलकापन है अथ वह केसरी यह सार्थी के वचन मधुवत् अमृत सम श्रवण पुट में सुन कर चित मे शान्त हुआ। मर कर नरक में नैरयक पने उत्पन हुआ यह शेर महावीर स्वामी को उपसर्ग कारी नाग कुवार देवता होकर फिर कृषक होकर गोतम स्वामी का शिष्य बनेगा जो वर्तमान काल में यह सर्थी है वह महावीर स्वामी के तीर्थ प्रवृति काल में प्रथम गण धर गोतम स्वामी नामें होंगे।

त्रिपिष्ट कुमार भी उस शेर की चर्म लेकर नगर सम्मुख चले जाते हुए को कृषको ने कहा यथा रे रे यह चर्म ग्रहण कर घोटक ग्रीव को देना और कहना यह उस शेर का चर्म है। निर्भय से शाली भोजन करो जो सम्प्रति आज्ञा देता है कृषको ने वह चर्म ग्रहण किया त्रिपिष्ट कुमार निज नगर में प्रविष्ट हुए प्रजापति को नमस्कार कर सकल वृतात कहा। पोतन पुर में हर्ष हुआ। नगर जनो ने खुशी मनाई वह कृषक अश्व ग्रीव के पास जाकर प्रजापति पुत्र ने सिंह के विनाश का सर्व वृतापुर्वान पुर्वी निवेदन किया। ऐसी जानकारी होने पर राजा अश्व ग्रीव मन में क्षोभित हुआ। मन में चिन्तवन किया आश्चर्यवन्त होकर नैमित्तक वचन जो पहले कहे थे सम्प्रति दोनों प्रत्ययसिद्ध हुए। इससे निश्चित् ही प्रजापति पुत्रों से मेरी मृत्यु है। फिर क्या करना चाहिए इस वक्त यमराज का दन्ड मेरे ऊपर पडेगा गुण रूप रज्जू से निगड बन्धी हुई राज्य लक्ष्मी विघट्टित होगी दान मान से वश किये सेवक सर्व लौट जायेंगे। विधि विमुख होने पर क्या क्या न हो अद्यपि बुद्धि तथा पुरुषाकार पराक्रम रहित न होना जिससे यह पूर्व कही भावी के अनर्थों से भी उपद्रव करेगी तो भी हिम्मत से गलित सम्पदाओं का पुनर्पि प्रादुर्भाव होगा तस्मात् कारणों से युक्त कार्यों की उपेक्षा न करनी चाहिए। छोटी व्याधि की भी चिकित्सा जल्दी करनी चाहिए।

दोहा— शत्रु नै वलिरोग, आम पन ही छेदना।
घढ़े महावे सोग, ऋषि राम नीति लहो ॥

अग्नि का किन्चित् अगाँर का हिस्से से कैलाश गिरि काष्ट सम शरीर

को भी भस्म कर देता है। तथा दृष्टि विष भुजंगो का बच्चा पराभव पाते हुए का विश्वास न करना यह विनाश न करेगा। तो इस प्राप्त काल में प्रजापति पुत्रों का प्रलोभन पूर्वक यहां बुलाकर दान सम्मान से विश्वास करना कर यहाँ विनाश करना जरूर है ऐसे सम्प्रधारन कर उन को बुलाने के निमित्त दूत को बुला कर कहा अरे प्रजापति राजा के पास जा कर कहना तुम वृद्धता के कारण सेवा करने में असमर्थ हो इस वास्ते कुमरों को शीघ्र प्रेषित करो अन्य सामन्तों न जैसे वापिस भेजे जावें यदि कुमरों को नहीं भेजो तो युद्ध के लिए तैयार हो जाओ। स्वामी की आज्ञा को अंगीकार कर दूत नगर से निकला क्रमता से पोतन पुर प्रति प्राप्त हुआ राजा ने दूत को देख कर सत्कार किया आसन पर उपविष्ट वह हुआ प्रजापति ने आगमन के कारण की पृच्छा की। दूत ने राजा से कहा अश्वग्रीव की आज्ञा है आप जरा जर्जरित हो अत्यन्त परिणत वयवन्त हो आदेश करने में असुचित हो। इस लिए निज पुत्रों को प्रेषित करो जिस से अश्वग्रीव ने कहा है मैं रत्नवस्त्रों से पूजनीय कर्ड अम्बर गज तुरग रथ ग्राम आदि देकर देशाधिपों में बड़ाकर स्थापू। ऐसी आज्ञा सुन कर प्रजापति ने विचारा अश्वग्रीव अनुल्ल है। आराधनीय है अससीदित तीक्ष्ण दराड निपात करता है। वह दुःसह है। मेरे पुत्र मानव नहीं देख सकते विशेष कर त्रिपिष्ट। ऐसा विचार कर दूत से कहा है भद्र कुमरों को सेवा करने का ज्ञान नहीं वक्तव्य विशेष का ज्ञान नहीं उचित असुचित आदेश अनुष्ठान की कम्यता नहीं इस लिए स्वयमेव सबल वाहन स्वामी के पास सेवा में रहूँगा। दूत न राजा से कहा यह प्रभु का आदेश नहीं क्या तू सदा धर्म कोल ही जाता। यह दुष्कर है यदि अन्तवर में रहा हुआ विषय सुख भोगना चाहता है तो कुमरों का यहां प्रेषित करने में तुम्हें क्या अकस्मात है। बल्कि कुमर वहां गये हुए स्वामी के प्रासाद से राज्य लक्ष्मी का प्राप्त होवेंगे सिंह का वध किया जब से अश्वग्रीव परम संतुष्ट हुआ। महा मरकत मति या अभिप्राय रू मा ....क है स्वय रत्न भूषणों से भूषित कर पाणि ग्रहण करना चाहता है अ नी कन्यांश्चा से। राजा प्रा

जापति दीर्घ दृष्टि से विचारा अहो ! यह दूत बाहिर में इन्द्र वारुणि (मद्य) फलवत् रमणिक अभ्यान्तर में दुख विपाक रूप उभय रूप बोलता है। इस कारण यह सर्वथा दुखा वह है। सम्यक् प्रकार प्रर्याय आलोचनीय है और रहस्य कृत कार्य प्रयन्त में दारुण परिणाम होता है। ऐसे निश्चय कर दूत को निज आवास में प्रेसित किया स्वय ऐकात में स्थिर रहा तीक्षण बुद्धिवन्त मन्त्री को बुला कर बिसमअर्थ निर्णय वास्ते सुखासन पर आसीन हो कर मन्त्री से कहा अहो अश्वग्रीव मुझे ऐसी आज्ञा देता ह दोनों कुमरों को मेरे पास शीघ्र प्रेसित करा। इस लिए सोच कर कहो इस समय क्या करने योग्य है मन्त्री ने कहा हे देव महा पराक्रम वन्त अत्यन्त गूढ रहस्यनय प्रचारवन्त (माया वन्त) अश्वग्रीवहै और तुमउसके सेवक अनवरत आज्ञा आदेश वर्ती हो आत्म बलवन्त हो इस लिए उस से कौन विरोध करे सशक्ति वान से अपने तुल्य नहा उस से कोप करना निश्चय विनाश का कारण है।

राजा ने मन्त्री से कहा तो क्या कुमरों को प्रेसित करूँ मन्त्री ने राजा से कहा असजात बलवन्त ताकत प्राप्त नहीं हुआ सेवा विधि से अनभिज्ञ को कैसे भेजे जावें विभुअति प्रति विस्मार्थ युक्त प्रसाद मे कदाचित लक्ष्मी भी प्राप्त हो तो पिगुरुद्र भुजग का बोल में बुद्धिवान अपने कर को प्रक्षेप्त नहींकरें गम्य अगम्य कार्य में विकल्प रहित कलुप दोप नर पति चित को बिना जाने कैसे करे जैसे जलाश्रय के पानी का निश्चय किये बिना प्रवेश नहीं करे ऐसी सेवा न करने पर कार्य स्वाधीन जैसे कपास लोढ कर बिनोला निकालेअर्थात अपनी कपास कोलेढ़कर रूई अन्य जन से कनका अपने पास रखे दोनो तरह विनाशकारी सेवा नरेन्द्र की नहीं करे जैसे सिथल चरित्रवान पुरुप विधि परागमुख दुःसाध्य विद्या साधन में तत्पर हुए तो विनाश पावे जल्दी ही ऐसे ही गूढ माया चारी राजा की सेवा जानना इसलिए हे देव कुमार स्वामी की कोई सेवा योग्य नही ऐसे कह कर दूत को स्नेह युक्त मिष्ट वचन कहकर पिछा भेजा मन्त्री के कहने पर प्रजापति राजा ने दूत को बुलाकर कहा स्वामी वचनों से

यथा ह भद्र तुम जाओ भरवग्रीव से कहो कुमार तुम्हारी सेवा करने आ-
यक नहीं प्रजापति स्वयमेव सेवा में भाकर सेवा करेगा । दूत ने राजा
से कहा प्रजापति मित्रों को बुलाकर फिर बाहिर निकालें क्यों ऐसा करते
हो कुमरों को प्रेषित करो परन्तु युद्ध के लिए तैयार हो ऐसा स्वामी की
आज्ञा है । ऐसा कह कर दूत चला गया । बीच में कुरुकौल के कहने पर
विशिष्ट कुमार रुष्ट होकर कण्ठ पकड़कर दूत को निष्ठुर मर्म धष्टि मु
ष्टि के प्रहार कर पीटा । पिछले द्वार से धक्का देकर निकाला । क्रमता
से चलता हुआ भरवग्रीव के मन्दिर द्वार को प्राप्त हुआ । राजा प्रजाप
ति की स्तुति कर निर्विशेष मर्म निवेदन की दूत की वाणी सुन कर
अत्यन्त क्रोधित हुआ ललाट पर त्रिवली भृकुटी चढ़ाकर इस अवसर में
भरवग्रीव कहने लगा अरे दुराचारी मेरी आज्ञा की उपेक्षा करे । ऐ
सी तेरी चाह है परन्तु इस का क्या दोष है इस के ऐसे ही कार्य हैं।
पहले कन्या को गान्धर्व विवाह से ग्रह कर अपनी परराग का अपमान
किया तो स्वामी की आज्ञा का अपमान करे क्या अयुक्त है फिर भी
इस वराक को इस वक्त में भी निवारूँगा ऐसे महा पापकारी को ।
अपने सेवक से कहा अरे राज विजय मेरी (विग्रह) वादित्र बजवाओ
और चतुरंग चमू को तैयार करो सर्व राजाओं को निमन्त्रण करो । वे
वड़ बल का आदेश देकर राजा मार्जन गृह में जाकर स्नान विधि से
किया सुन्दर कुन्द के पुष्प समान वस्त्र पहने पश्च मर्म पुष्पों की दाम व
इनी सुरभित चन्दन से गात्र का चर्चित किया अविशेष शान्ति के
लिए पुरोहित से विधि पूर्वक शान्ति कर्म विधि कराई सिर पर हाथ आ
वन कङ्कण धारण करे अपने गमन करने के मार्ग में मर्गल कलश कमल
पुष्प प्रतिष्ठित किये अष्ट मंगल आलेख किये अब कुमार शृंगारित
किया सिन्दूर से रक्त किया कुम्भस्थल को तथा कपोल भाग से मद जल
झरता हुआ मैरी पक्ष का हनने वाला उस हस्ती पर भरवग्रीव आरूढ़
हुआ दूर के फैन पुञ्ज के समान उज्ज्वल परिपूर्ण चारु मण्डलवत् व
र्तमान मुक्ताफल कलाप युक्त आत पत्र छत्र धारण किया दोनों
पक्ष स्थित चमर माहक चमर दुरा रहे हैं गज्जों का गज गर्जों रव

दिशाओं में गम्भीर हो रहा है अनेक तरह के रणतुर वाज रहे हैं राज पथ में पार्थ भी स्थित हुआ ।

छन्द नाराच ॥ चलंत कन्न चामरा, पयड दप्प दुद्धरा, गलत गड मडला, तमाल नील सामला ॥ अलघ निज्ज विक्कमा, महा गिरिन्द विब्भमा, रणन्त वद्ध घटया, महा गयाणु पट्ठिया ॥ पलम्ब पुच्छ सोहिया असेस सिक्ख गाहिया, सुवेयतुट्ठ सामिणो, समीर वेग गामिणों, विसिट्ठ लक्खण किया, परेणांनों निरक्खिया, दिणिंद वाई विब्भमा, पयाहिया तुरगमा ॥२॥ विचित्त चितत्त्वधुरा, महा उहोह निब्भरा, जओव लम्भ पच्चला, रणत किं किणी कुला, विलीण भुर सत्थया, पगिठ केउ मत्थया, दुसज्झ वेरी पसद्दण।, पया हिया पाजद्धवा ॥३॥ सरासि चक्क धारिणा, विपक्ख सूर दारिणों, ससामि भति मतया, अईय जुत्ति जुत्तया, जएक्क लाभ लालसा, अचिंतपिज्ज साहसा, सरीर बद्ध ककदा, पयट्ठिया महा भडा ॥४॥

अर्थ कर्ण रुप चामर चलते हुए प्रचण्ड दर्प है (गन्ड) गाल मण्डल मध्य में (गलते) झरते हुए तमाल के सम नील श्याम वर्ण वन्त है। अलन्घनीय विक्रम के धरने वाले, महाग्रेन्द्र का विभ्रन उपजाने वाले, रण की घन्टा रण झणाट करती हुई वन्धी है, महा गज अनु-प्रस्थित हुये चले। जिन्हों के प्रलम्वायमान पूच्छ शोभित है, - अशेष शिक्षा ग्रहण की है, सुवेग वन्त स्वामी को तुष्ट करने वाले, (समीर) वायु वेग गामी है विशिष्ट लक्षण अलकृत है, मानो अन्य को कभी नहीं देखे दिनेन्द्र के अश्वों के प्रेतिवादी ऐसा विभ्रम करे प्रस्थान करा घोड़ों ने विचित्र चित्रयुक्ता (वन्धुरा) धूरावन्त (मह) महाग प्रथगमन निंभरा जय प्राप्त हुए शीघ्र गामी घुघरियो का रण रणाट्ट कर आ-किरण है भूरि शस्त्रा से भरे हुए (परकृष्ट) ऊचिकरा कतुर ध्वजा शि-खर पर दुश्यादय वैरियो के मान का मर्दन कर गमन हुआ परसदन्न रथों का धनुष वाण चक्रधारी विपक्ष के दलने वाले (शूर) शुभट्ट स्व स्वामी की भक्ति मे रक्त, अति युक्ति युक्ता एक जय लाभ की ला-लसा (ईच्छा) है अचिन्तनिय साहसवन्त है, शरीर को गाढा कसा है

के समीप आ गये हैं शीघ्र सन्मुख आओ कुमरों को भेजो क्यों अकाल में ही कुलक्षय तथा जनक्षय कराता है स्वामी की आज्ञा मान कर राज्य निर्भय से करो। दूत अपने स्वामी की आज्ञा को सिरो धारन कर वहा से चला अनुक्र में प्रयान कर प्रजापति के पास सकल वृतान्त कहा अश्वग्रीव का आदेश मानने को प्रेरणा करी। त्रिपिष्ट कुमार सुनकर कोप से कहने लगा रे दूत तू अवध है निर्भय चित से मेर उपरोध मे अश्वग्रीव के पास जाकर मेरे वचन स्पष्टता से कहो वहु परिवार को देख कर निर्भय मत बनो गुफावासी शेर सम तुने त्रिपिष्ट कुमार प्रलोक प्रयान करायेगा निजनाम की प्रगट पनै स्मृति कर घोटक गृहधारी दुनिया मे अस्ति चाहता है और अपनी रक्षा चाहता है तो प्र जापति नृप पर अद्यपि निष्ठुरता परिहर प्रणतता से रहो शुष्ठु कहते हुये भी अभिनिविष्ट मति से दोष धारेगा तो तुझे शिक्षादान भी निरर्थक है तत्पश्चात दूत कहने लगा अद्यपि तुम्हें कुशिक्षा की दृढता से अश्वगृव के बल को अन जानते अशकपने उल्लापते हो प्रजापति ने दूत से कहा भद्र जाओ निज नरेन्द्र के पास कहः जो कुमार ने वचन कहे हैं वह धारण कर मैं चमू लेकर आता हूँ ऐसे सुनकर दूत वहा से निकल कर अपने स्वामी के पास जाकर वृतान्त कहा राजा ने भी अपनी सैना तैयार करा कर जय भेरी बजावाकर चढाई कर चले उस वक्त शुभ सकुन हुए सवत्स गाये सन्मुख आई सुतरक्त धारण करी हुई सधवा स्त्री ने राजा को वधाये अनेक पात्रजन जय के गायन सन्मुख कर रही है हरे जवों से सकट भरा हुआ सन्मुख आ रहा है मालन फल युत छबड़ा भरे सामने आ रही है वाम पथ पर खड़ा हुआ गर्धव पूर्ण स्वर आलाप रहा है दाहिणा पथ वृक्ष पर बैठा हुइ स्वर्ण चटिका भरे स्वर से बोल रही है हरिणों की टोली बाम पथ से दाहिना जाकर दूर खड़े हुए इत्यादि अनुकुल सकुनों से प्रेरित होकर अनुकुल मन्द २ समीर चल रही है।

चातुर गॅबल मे परिवृत जय कुन्जर गल गजारव करते हुए आगे कर प्रजापति नृप नगर से गमन किया अचल कुमार सामन्त गण

से भीम ध्वज आगे लहराते निशाम्बर धारण कर धनुसहित धनुष शस्त्र रत्न युक्त समरांगन को चले गगन समान शरीर धरण कटिबन्ध वक्षस्थल के दोनों स्तन पर मुक्ताफल हार सुरसरितावत् उज्वल धारण करे तरुण तरणी के किरण सम युगल वस्त्र पहन कर बलपति की वर वामन ज्वाला कलाप के समान देहो पर रेखा प्रसार करते हुए तत्काल स्वर्ण युगल में स्वर्ण घटित मणि रत्न जटित कुण्डल कान्ति प्रसार होते तत्काल सिंधु राग सहित पुरव वादित्र बाजेते बन्दिजन गुण गायन करते हुए गान्धर्व गण गायन करते चल रहे हैं। कनक रत्न यष्टी पर स्थित सुवर्ण रंग वस्त्र पर गरुड़ चिन्हयुक्त ध्वजा पर फहराते उन का पवन त्रिपिष्ट कुमार गरुड़ ध्वज रथ पर आरूढ़ हुये शंख गदा धनुष धारण कर चले त्रिपिष्ट कुमार शीघ्र चल कर प्रजापति पिता ने कहा आप रहो हमें युद्ध का आदेश करो आप की कृपा से पाटक गृह को हम ही हरावेंगे इस का बल धृष्टता युक्त है जो भोजन मात्र की परसाद चाहने वाले कि क्या साध्य है बहुत सहाय की आवश्यकता है प्रमाण से मैं एकाकि इसलिए बहुत हूं जनक ने कुमर से कहा बीतावस्था वय कष्ट केसरी किसार मतिपथ के बलों का आगुण्यता नाश करता है ऐसे ही तेरे पराक्रमधारी पुत्र से क्या असाध्य है केवल मैं तो दूर स्थित आश्चर्य को देखता रहूंगा कुमर ने कहा तथास्तु कथितम तथा आदि जनों को तापित कर अनवरत प्रयाण करते हुए रथावर्त पर्वत समीप समप्राप्त हुए परस्पर नजदीकवर्ती देखते हुए अपनी अपनी सैन्यबल से अपनी २ ध्वजा अग्रगण्य आगे करके दोनों तरफ की संगम सीम जस्त हुई युद्ध प्रारम्भ हुआ धनुष्य कोन्त नाग कुठार त्रिशूल आदि शस्त्र धारण कर कई हस्ती पर कतिपय अश्वा पर कई रथ पर चढ़ कर घोर युद्ध मारा कर रहे हैं प्रथम दिन से अश्वग्रीव की फौज कटक प्रजापति पर टूट कर पड़ी वसु प्लावन होने लगी। अचल बलदेव अपनी सैन्य को भागती देख कर भाल पर भृकुटी चढ़ाकर दिव्य धनुसहित धारण कर शीघ्र वेग से अपने वीरों को पीछे कर आप सैन्य के अग्रवर्ती बन कर युद्ध करने लगे अश्वग्रीव की सैन्य अग्र भाग स्थित नरेन्द्र चिरकाल से

युद्ध की जय गर्वित हो कर कहने लगे अरे मुसलधारी शिशु गृह जाओ धान्य का खंडन करो और हल धारण कर कृषक बन महीतल को भेद कर वीजारोपन करो ऐसे कहने पर अचल क्रोधारुण होकर बोले प्रति पक्ष के नरेन्द्रों को सिररूप धान्य का खण्डन करूंगा और उन के उदर रूप महीतल चीर कर साहयता करने वालों की साहयता करनी चाहिए ऐमा वीजारोपन करूंगा।

यों कह कर धनुषवाण से वेरीगण को भगाये और युद्ध मे खडे रहे उन्हों के सिर पर पटापट कर मुसल पटक रहा है हलरत्न से उदर चीर छिया कर के फैंकता है ऐसे हजारो विराश्रोणि भट नरेन्द्रों को भूमि पर बिछात की है ऐसे प्रतिदिन घोर युद्ध होवे हस्ति अश्व पायक लाखों का सहार हुआ हजारो नरपति मुकुटधारा गिर पड़े देख कर त्रिपिष्ट वासुदेव ने दूत को बुला कर कहा जा तू अवश्ग्रीव के पास क्यों वाह्यियात जनक्षय करा रहे हो तेरे और मेर ही परस्पर वैर है मैं निम्मत्रण देता हूँ आओ आपें दोनों रणभूमि में युद्ध करें भुजा बल से एकाकि सेन्य साहयता की पृष्टि करो ऐसे जाकर बोलो। दूत वासुदेव के वचनों को स्वीकार कर अश्वग्रीव के पास जाकर निवेदन किया प्रति वासुदेव ने भी इस युक्ति की मान्यता दी प्रवरतुरँग रथ के युक्त कराकर एक सार्थी ही परिकर है और सर्व परिकर पृष्टि मे खडे हुए अपने २ स्वामी का बल को देखने को कौतुक वत हुए अश्वग्रीव और त्रिपिष्ट अपने २ प्रहरण धारण कर युद्ध भूमि में आकर रण करने समय अनेक योगनी समुह खपर लेकर गगन तल में अटट्हहास्य कर रही हैं तथा यक्षराक्षस देव तथा विद्याधर गण सिर की जटा तोप छोड कर खिलखिलाते हुए युद्ध देखने को गगन में स्थित हुए।

इस अवसर मे नारद मुनि आकर अश्वग्रीव से कहा सत्य कहो तथा त्रिपिष्ट को कहने लगे भोः अश्वग्रीव गिरिगुफा में रहा हुआ सिंह को क्या आप रोग से घिरे हुए थे व करुणा वश होकर नहीं मारा तथा मरने के डर से किस कारण से नहीं मारा प्रथम ही लीला के साथ फिर तुम क्या बल का मद कर रहे हो यदि शेर पर करुणा थी तो मा-

वत् निरपेक्ष कर मष्टगानी समुख खड़ा हो कर नाराच का निबद्ध किया
(छेड़ा) उस को भी निपुण्य मनुष्य के मनोरथ सम अश्वग्रीव ने
प्रतिस्खलित किया किं बहुना जो कोई शस्त्र कुमर नरेन्द्र के समुख चि-
प्त करे अश्वग्रीव दाक्षिणा पन ने उन्हों की प्रति स्खलना करे(हटादे) अश्
वग्रीव भी प्रचण्ड कोप से जो २ प्रहरण कुमर संमुख मुक्त करे कुमर
भिषग वैद्य रोग का नाश करे ऐसे उस के शस्त्रों को हणे अथ भरतवाहु
बलिवत् गाढे अमरस भरे प्रहरण चलाए चय समय में राहु और श-
निश्चरवत् वह दोनों परस्पर लग रहे हैं एवम् परस्पर युद्ध करते वह
दोनों प्रकृष्टदर्पवन्त चराचर जीव सहित धरणी थर थराई चलकर पद
को धरते वक्त में इहावसरे अन्दरत पणे शस्त्र उच्यक्षेपते सर्व अश्व-
ग्रीव राजा के निष्ठित हुए शुकृत रामिवत् उस वक्त में व्याकुल चित्त
से खेद से अस्थिर हो कर विचारा मुझे क्या करना अश्वग्रीव प्रसर
रिपु का दर्प दर्शन वृद्धि हुआ कोप से विचार रहा है मेरा धन तथा
दृढ प्रणत् चित्त वाले मित्र तथा प्रिय कलत्र विस्मावस्था में पड़ा हु-
आ नरवर अश्वग्रीव चक्र को याद किया अथ वह चक्र जलन सम
जा जलायमान सहस्र किर्णवन् प्रेसयता हुआ युगादि में ऊगत हुवा
मारतण्ड मण्डल सम जिस के सन्मुख देखना मुशिकल है ऐसा रुद्र
तथा यम के अरुण रक्त नेत्र वत् तथा विद्युत पटल विशेष मिलते हुए
हों ऐसा अश्वग्रीव के कर में चक्र रत्न परिस्फुरित आया तदनन्तर प्र-
हर्ष युक्त तड़ तड़ात कर ब्रह्म बन्धन को तोड़ता हुआ वह चक्र वध
करणार्थे शीघ्रता से त्रिपिष्ट पर मुक्त किया तत चक्र शीघ्रता से जा
कर त्रिपिष्ट कुमार के निकट वक्षस्थल कपाट के चिरकाल से बलस्म के
दर्शन का उत्पुकत्व को नरम तुम्ब कर के संलग्न हुआ, इस अवसरें
दृढ चक्र की नाभी जोर से स्पर्श होने पर अक्षीपट मिले मुर्छा पाकर
कुमर धरणी तल पर पड़ा उस वक्त अश्वग्रीव अपने बल से बहुत प्र-
मदवन्त हुआ जय २ शब्द के नाद से कोलाहल सहमात हुआ यावत्
शत्रु भ[illegible] के प्रहरण नहीं पडे तावत् त्रिपिष्ट कुमर मुर्छा विगत् तत्-
क्षिण हुआ भी घोटक ग्रह अब नाश होने वाला है ऐसे बोलता हुआ

यही चाक उस के अभिमुख मनाम्बाट प्रथम् मुक्त किया तब यह ता
र पूरा के फल प्रटके सम विषम धारा स अश्वग्रीव का छेद कर त्रिपिष्ठ
कुमार के कर पर आकर स्थित हुआ अथ अश्वग्रीव निहत होन पर हवबत
सविस्तार प्रमाण रामांच लड़ हुए तत्काल जय २ का सुर असुर करन
लग रसयुक्त पारिजात वृक्ष की मान्दार सुगन्ध निजरस पर आई हुई
भारम भरा हुआ पर भ्रमरगण शोर करता हुआ गंध लुब्ध हा कर
मधुर बाक बोले ऐसा अनपरत झाड़ता हुआ मद मकरन्द बिन्दु व
सन्दोह सकल दिशा में विस्तार प्राप्त हुआ कमल कुसुमसमावली प्रमुख
पच वर्ण कुसुम वृष्टि मुक्त करी महत् शब्दों से घोषणा करी है जैसे
भोः २ पार्थिवों परित्यक्त करो कोप रूप काटा का (कांटो) दुर्वह दुर
विनय प्रगती को अश्वग्रीव के पक्ष को परिहरो असाम्य कार्य का क-
म्भिक् करा सर्व आदर कर के त्रिपिष्ठ का प्रणाम करा यह निश्चय
इस भरतक्षेत्रे समम बलवन्त पुरुषों में प्रधान है पूर्व भवों म समुपार्जन
किया सुकृत का समूह उस ही से विस्तार पाया महान कल्याण का नि
धान प्रथम वासुदेव उत्पन्न हुआ ऐसे दिव्य वाणी गगनतल मे हुई
प वम कर्णों में वाणी आकिंण कर सम्भ्रान्त हामों आर्तनो स त्रस्त
कर परिमुक्त किये ग्रहण शस्त्र का अथ मह मृगवत् प्रविस्तारन्त मणि
मुकुट कांति पर्यात हारण हुआ मान्य २ क्रम से (पैरा के) मस्त मही
पर रखने भाल पर कर तलों को मिला कर चढ़ाए हैं पंचाङ्ग नमस्कार
त्रिपिष्ट के आगे प्रणाम किया हमारा राजाओं न दिगन्त करी ह
देव पर आवत(आज्ञा से) युक्तायुक्त अजानते हुए वा कार्ड हमें आ
राध किया हम तंदवानीग हमवक्त विशेष सर्व क्षमा करा हमारे पर
प्रसाद करा आप के चरण मैकिन की सेवा करने का ह नाथ एक तुम्-
हारे बिना और अन्य कोई हमारा नाथ नहीं ऐसे वचन सुन कर त्रिपि
ष्ट न कहा भा २ नरेश्वरों क्या ऐसे कर्मपते हो तुम्हारा इस में क्या
अपराध है पर आसक्त में रहने वाली की यही गति है मुक्त करो मेरा
भय प्रासाम्दा स उपद्रव रहित अपना राज्य करो मेरी बाहु छाया परि
[illegible] पुरेन्द्र देव राजा भी तुम्हारा पराभव नहीं कर सकता इस

अवसर में त्रिपिष्ट के सेवक उपगत नरपति युद्ध अवलोकन करते हुए अश्वग्रीव का विनाश निछत्र निश्चय होने पर खुश होते आये उस स्थान पर नजदीक आकर देखा है गल कटा धमनियों से रुधिर निकलता हुआ जिस से कर्दम हुआ पक लिप्त गात्र अश्वग्रीव का अन्त पुर रक्त चन्दन के लेप युक्त हो ऐसे देखा नृप के उपर मासगृधि पक्षी भ्रमण कर रहे हैं रविकर प्रसार हुआ है धूप मे पड़ा है धरा है महा प्रमाण छत्रवत् मस्तक सनिवे पड हैं प्रधान पुरषों के वर्ग मृतक सुर्य अस्तवत अश्वग्रीव नरेन्द्र अथ अनृष्ट पुर्व अत्यन्त तीक्ष्ण दुखावह ऐसी अवस्थातर में देख कर अ क्रन्द करना आरब्ध किया रानियों ने हाः २ खेद युक्त शब्द कह रही हैं हे कृतान्त निष्करुण क्या तुम ने पाप कर्म आचरित किया जो ऐसी विधि से पृथ्वी पति को भी इस तरह हतास को मार डाला क्या इतने सुभट्टकाटि को मारने पर तुने तृप्ति नहीं हुई हे निपुण्यक जो इस राजा का भी संहार किया है चक्र निशल्किव अर्थात् वीर, अपने स्वामी का विनाश कर कैसे अयश तूने कमाया तूने भी क्या जक्षों ने निघृण हो उपेक्षित किया एसे अर्थात् दयाहीन बनाया इत्यादि विलाप करती निर्दयपन से वृत्त स्तन को ताड़ रही है जिससे गले के हार टूट गए वैधव्य दुख से भरी हुई अपने हाथों के वलयों का का स्फोटन किया है आसुओं की धारा अखण्ड पड़ते रुदन करती हुई आखों का ममलती हुई ने वहा रहे पक्षी गण को भी रुदन करा दिया है उस वक्त अनुजिचित परिकर परिवार करुणा स्वर से पुकारते हुए अश्वग्रीव के शरीर को विधिवत् चित्ता में क्षिप्त कर अग्नि-ज्वाला से जलाया इस अवसर में तरुणीगणके वैधव्य दुःख असहन करता हुआ प्रचण्ड रण क्रम को देख कर भय भितिवत् तीक्ष्ण असिखण्डित मुण्ड गण का रुलते देख कर अपने तुरंग सहित रथ को खड़ा कर (समीर वायु चलने से रुधिर के फवारों के सशय महित हा कर कभी मेवा मण्डल के ही लग जाये सहस्त्र किरण भट्टचक्षु गोचर से अलग गया महीप सृ ग का मध्य अलिगण तथा कज्जल समकृष्ण तिमिर छा

गया तारा रूप नयनों को विकसाती हुई बाल रूप लजुलायमान अगार निरन्तर पावती हुई सुभट्टों के रुधिर का आविरित वोकर (गण्डुस) प्रति मान मुक्ति करती महाराक्षीवत् भयालन करने वाली। बननी वत्।

रजनी प्रसरित हुई मनुष्य निज २ स्थान स्थित हुए अनुक्रमे प्र भात समय हुआ त्रिपिष्ट न निज पुरुषों से छहा मा सम्बोधन आओ संग्राम भूमि प्रति योद्धाओं के शस्त्र प्रहार लगे घावों के औषधि की पट्टीका परित्राय कर निरुद्ध करा घावों पर चढ़ कर राजाओं के सा थ अपने अश्वेश्वर के सम मगम नरपति वर्गों परिवृत्त तैयार हो पावन पुर प्रति प्रयाण करें।

तत नगर जनों ने भवयन्ति अथवा हजार पताकाओं सहित करी हैं स्थान २ पर सम्वाती मण्च करे जगह २ रमणिक नृत्य हो रहे हैं पं चवर्ण पुष्पों के पुञ्ज बिछाये हैं राज मार्गों म पटह प्रमुख जय के तूर बाज रहे हैं महति विभुति सहित त्रिपिष्ट ने पावनपुर राजधानि में प्रव श किया अपने २ स्थान सकल परिवार रहने लगा कितनेक वर्ष बहां रहकर फिर चतुरंग सैना तैयार कर चक्र छत्र मणि माला गव रत्न सहित त्रिपिष्ट दिग् विजय निमित्त निकला क्रमता युक्त अप भा रत का स्वामित्व किया अमयात राजाओं का मा ममाये सपा वृति गु हाय को प्रधान गज अश्व रत्न प्रमुख लेकर प्राभृत किया(उपहार-किया एवम अमुना प्रक रैत्य निशाप मगधाधिप सहस्त्रा सहित अनुक्रमे मार्ग चलता हुआ क्रम मा ।व म ग मनत्र् जो अपूर्व दृष्ट अन्य अन्य रा- जाओं के प्राण है सौराष्ट्र सराही राज्य शत्रु अप विषय म कोटि शि- ला उस शिला का भुजा चत्र से कीडा के साथ वामी भुजा दबाद म उ त्थित कर छत्रवत् धारापर करी है हरि का अतुल्य बलवरन अवलोकन कर प्रमुदित मन म राजाओं ने जय जयरव करा है मागध जनों न अनेक तरह संस्तवना करी नरपति न कोटि शिला का वहीं ही स्थान पर स्थापित कर अपने नगर प्रति चले रास्ते में गमन करते हुए क्रम वाम पहुँच यहां स्कन्धावार निवास किया वहाँ रहते कई दिन हो गये एक

दा रजनी समय निर्भर निद्रा में सूते हुए सेवक जन अनुरक्तवृति से चारों तरफ परिवार उपलभ्य है कर चक्र कलित है वासुदेव ने अपना वेश आवृत कर पहरेदारों की नजर अगोचर हो कर अ ग रक्षक रहित एकाकि निकले अपने तम्बु मे किसी ने पद प्रचार भी नहीं सुना इत ततः परिभ्रमण करते यावत् सैना के निवेश स्थान को अतिक्रम कर जा रहे है तावत् कानो से शब्द सुना कुछ दूर पर मन्द २ कोलाहल हो रहा है उस वक्त कोलाहल को सुन कर आश्चर्य उत्पन्न हुआ उस के सम्मुख परिधाये क्रमता से वृक्ष बाहुल्य एक कानन को प्राप्त हुए वहा पहुँचने के पीछे वह कोलाहल उपशान्त हुआ उस वक्त विचार किया क्या विभिपिका आश्चर्य की बात है तथा मेरी मति में विभ्रम हुआ मन में ऐसा चिन्तवना कर रहे हैं उसी हो काल मे कानन के अभ्यन्तर मे एक नरको दुख से भरा हुआ शब्द समुत्थित हुआ तन् अनुमान से त्रिपिष्ट फिर खडे हुए (वक्षस्थल) छाती पर प्रकाश करता हुआ कोस्तुभ मणि महोघ अन्धकार का विध्वंश करता हुआ उस प्रदेश मे स्तोक दूर हरि आगे गये देखता है वहा विविधवन्धन मे बन्धा हुआ एक वृक्ष के उचित आचार से उस से पुछा भो तुम कौन हो ? यह अवस्था किस कारण से पाई उस ने कहा हे महाभाग्य सुनो कठिन बन्धन बन्धा हुआ हूँ, इस वास्ते कथन करने में असमर्थ हूँ, बन्धन दूर हो ने से मैं कह सकता हूँ। त्रिपिष्ट चक्रकर बन्धन का छेद किया। जब विस्वस्थ हुआ अपनी कथा कहने लगा अहो! सज्जन निष्कारण उपकार कर परम बन्धुवत हो मेरा वृतान्त सुनो। मैं रत्नशेखर नामे विद्याधर हूँ रूप लावन्य गुणोपपेत सिंहल राजा की पुत्री विजयवति नामे पहले ही वहु प्रकार प्रार्थना कर ने पर रिस्ता किया मैं परिणि जन के वास्ते समग्र सामग्री सहित उत्तर ने चला इस स्थान में आने पर वायु वेग नाम का विद्याधर वैरी सर्व साथ का अपहरण कर दुखे मृत्यु होगा ऐसे बन्धन से बान्ध कर ऐसे विचार कर परियुक्त कर मुझे गया। त्रिपिष्ट ने कहा तुम विद्याधर होकर किस कारण से भूमिचर की धुता को व्याह के लिए स्वीकार की। उस ने कहा हे महानुभाग्य उस का रूप कुछ अपूर्व

है अमरीसहायस्यवस्त है। त्रिपिष्ट ने विचार किया यदि यह सत्य है तो एसी गुणवान मेरे लायक है मैं ही उस से विवाह करूं ऐसा विचार कर उस से कहा यदि तू उस का पाणि ग्रहण करवावेगा तो वह तुम्हारा वैरी उस सुन्दरी का हरण कर लेगा तो फिर निरर्थक क्यों करने से क्या प्रयोजन है। विद्याधर ने कहा यह सत्य है आप ने जो कहा यदि आप की शक्ति हो तो आप ही उस प्रश्न संग में पर्म छाडो त्रिपिष्ट ने प्रतिज्ञा करी उस की बात को त्रिपिष्ट ने नमस्कार कर विद्याधर निज स्थान गया वासुदेव वहां पधार कर सिंहकेसर का अनेक प्रकार से समझा कर विजयवती से हस्तग्रहण कर उसे संग लेकर अपने नगर पधारे महाराज्याभिषेक होने पर हजारों सुन्दरी युवतियों से राज्यश्री का विलास रह है त्रिग्रयक भद्र भरतक्षेत्र का राज्य करते हुए काल व्यतीत कर रह है पर विजयवति से एसी पुत्री उत्पन्न हुई उस का नाम सुमति में सो राजी नहीं विजयवती भी त्रिपिष्ट पर इर्षाद्वेष वह रही है विषादयस्त रह रही है दुःख से काल व्यतीत करती हुई इस अवसर में श्रेयांस नाथ भगवान इग्यारवां वहां पधारे देवताओं ने रचा है विशाल प्रकार युक्त समवसरण विचित्र मणिमय व मरामक्त सिंहासन भवभय से सशय प्राणियों को एक ही शरणय है सुरेन्द्र मिल कर तोष कर परमेश्वर की स्थापना करी है भगवान् सिंहासन पर उपविष्ट हुए इस अवसर में वननियुक्त पुरुषों ने आकर त्रिपिष्ट वासुदेव से जिनागमन की वधापन करी त्रिपिष्ट वासुदेव वर्धापन आकर्णित कर इन नर रामाच उल्लसीत हुए प्रीतिदान में साढ़े बारह कोटि स्वर्ण दिये उन पुरुषों ने। समग्र बल वाहन सम अचल बलदेव बन्धु भ्रात समेत वन्दन करने को गए छत्रादि छत्र आदि जिनेश्वर के अतिशेष दूर से र यत्किञ्च दूर किए दूर से ही पांच प्रकार करते हुये इयत् सिर को झुका कर पाये आकर जिन चरणबिम्ब में पंचांग कर नमस्कार किया प्रेम कीर्तन करने लगे जय हो महाघ संसार समुद्र में पड़ते हुए प्राणियों को पार करने के लिए यान पात्र हो। शिवसुख का एक मात्र कन्दर्प नाशक काम आदि रिपु के हरने में मद्य सन्धि मद माया रुप सत्त्व हरने वाले

जय हो सयंम श्री के वल्लभ क्रोधाग्नि दाह को शान्त करने मे जल्द तुल्य हो केवल ज्ञान युक्त सकल जीवादि पदार्थ के प्रगट करने वाले त्रिकाल वित् त्रयलोक के प्रकाशक हे करुणा के वारीधि कर्म द्रुम को उन्मुल्लन करने वाले सुर असुर देवाधिप के वन्दित् जय हो वचनामृत वर्षा कर समस्त द्वेषो को हरने वाले इत्यादि स्तुति कर उचित स्थान उपविष्ट हुये भगवन्त भी योजन गामिणी वाणि से नारायण आदि को धर्म दशना प्रारम्भ की यथा।

भो २ दयाणु प्रियो जहा तहा संसार रूप कान्तार मे अनादि काल से जीव प्रयट्टन करता हुआ वडी दुर्लभता स यह मनुष्य जन्म मिलता है आर्य जनपद पचेन्द्रित्व आर्य कुल आर्य जाति आरोग्यतादि सामग्री पाना दुर्लभ है ऐसे योग्यता को पाकर समुल्लसित हो कर सद्धर्म सावन करो अनादि मिथ्यात्व अव्रुति का सॅग तजो सम्यक्त्व ज्ञान चारित्र सम्यक ग्रहण करो सुकृत आराधन करो यतः सुचिणा कम्मा सुचिणा फला, दुचिणा कम्मा दुचिणा फला ।

शुभ कर्म के आचरण से शुभ फल पाता है अशुभ कर्म आचरण से अशुभ फल नरकादि दुर्गति मे भोगता है ऐसा उववाई सूत्र मे कहा है ।

यतः विसयेसु मणुन्नेसु पेमं नाभि निवेसए, अणिच्च तेसिं विन्नाय, परिणाम पोग्गलाणय। मनोग्य विषयों मे प्रेम स्थापन मत करो क्योकि विषयो को अनित्यता को पहचानो पुद्गलों का परिणाम है ऐसे दसवेंकालिक सूत्र अष्टवा अध्यन्यन मे कहा है क्या तुम्हारा काल मित्र है तथा उस के पास से पलायण करने में शक्तिवन्त् हो या उस को मार गिराने में सामर्थता रखते हो जो तुम्हे निश्चिन्त होकर धर्म रहित अमुल्य समय को खोते हो। यथा

सव्वे हि भुयाणु न्याणु कपि, खति खमे सजम वभयारि, सावज्ज जोग परिवज्जयतो, चरिज्ज भिक्खु सुसमाहि इ दिए।१३। अहिंस सच्च च अतेण ग च, तता अवभ च अपरिग्ग ह च, पडि वज्जिया पच म्हइ व्वयाणि, चरिज्ज धम्म जिण देसिय विऊ॥१२॥

मे अधिक मुनाफा वसूल करना तथा जान कर अच्छी वस्तुके दाम ले कर गन्दी वस्तु देना इत्यादि अवैवव्यापार को त्यागे ॥५॥ यह पच अनुव्रत धारण कर मुक्ति पथ को अपनाओ तथा चोक्तम् त्यज दुर्जन ससर्ग, भज साधु समागम । कुरु पुण्य महो रात्री, स्मर नित्य मनित्यता ।१। चानिक्य निती म । द्यु तं च मास च सुराच वैश्या, पापाधि चौरी परनार सेवा, ऐतानि सप्तानि व्यस्नानि लोके, घोराति घोरे नरके मुपैति १ भर्तृ मत के ॥ दान सुपात्रं विसुद्धं च शिलम्, तपो विचित्र सुभ भावना च, भवार्णवो तारण यान पात्रं, धर्म चतुर्धा मुनयो वदन्ति १ यह चार प्रकार धर्म को ग्रहण करो सुपात्र आदि दान विसुद्ध शाल बारह प्रकार तप शुभ भावना बारह प्रकार अनित्य भावनादि भावो मे वर्तावे आत्मा मे यही भव सागर से पार करने मे जहाज है ।

इत्यादि धर्म का विस्तार भगवान श्रेयान ने फरमाया त्रिपिष्ट हरि सुन कर प्रफुल्लित अंग हुये कईयों ने साधु धर्म ग्रहण किया कतिपय ने श्रावक धर्म ग्रहण किया कनिजनों ने सम्यक्त्व धर्म ग्रहण किया कई जनों ने यथा शक्ति सोगन्ध लेकर धर्म ग्रहण किया कई शुल्लभ बोधि धर्म प्रेमी आस्तीक बने नास्तीक पन्न को छोड़ा हरि हलधर आदि प्रभु चरण कमलो को प्रणाम कर नीज नगर प्रति गमन किया । नागरिक जन भी समय छेद कर भगवान का पचाङ्ग नमा कर यथा स्थान गये। तीन लोक के प्रकाशक सर्वग्य विहार कर अन्यत्र जनपदादि मे विचरते हुये ।

अन्यदा त्रिपिष्ट वासुदेव के पास मानो स ख्यात् किन्नर इव के स्वरजै से गायन करने वाले आए उन्हों ने गेय कुशलता से गायन करे हरि सुन कर हृदय मे अत्यन्त हर्षे अन्य कार्य को छोड़ कर चित्रवत् रह कर सुन रहे हैं । गायन भी एक पचम् वेद है इस के वश होकर विपधर भी फन का छत्र कर डुलने लगता है हरिण भी भय को भूल कर नाद के लोभ से खडे होकर सुनने मे कर्ण लगा देते हैं । शिकारी नजर चुका कर वाण मार कर मार देते हैं ऐसा एक अपनपे को भुलाने वाला है । एकदा रजनी प्रस्तावे गायन करने वालो ने गायन करना प्रो

रम्भ किया वासुदेव को नींद आने लगी वहीं सय्या पर शयन किया नींद आने पर गायन बन्द करना ऐसा अपने कर्मचारीयों को आदेश दिया है देव जो आप की आज्ञा है ऐस ही होगा हरि गहरी नींद वश हुये। शय्या रक्षक ने गायन में रसिकपन से गायकों का गायन न बन्द किया। पिछली रजनी में हरि जगे गायन करते सुन कर सय्यापाल ने पूछा की क्यों किस कारण विसर्जन नहीं किये। उस ने कहा ह देव गायन म आनन्द आ रहा था मैंने उनके के लिए बन्द न किया फिर म ाव रसिकपन स ख्याल न किया। ऐसे सुन कर हरि अति कोपयमान हुए प्रातः काल कमल वनषंड का शोभित करन वाला सूर्य उदित हुआ। शय्या स हरि तत्पर होकर प्रभात कार्य कर आस्थान सभा में आकर बैठे। सामन्त वर्ग व सुभट्ट मन्त्री वर्ग आदि भिन्न २ स्थानाशीन हुए तब सय्यापाल का बुलाया रात्री क आज्ञा भंग दोष की याद दिलाकर अपना आज्ञाकारी सेवक का आदेश दिया। अरे इस न गीत म प्रमी हा कर मेरी आज्ञा की प्रवाह न कर करणो म गायन सुना इस स इस के कानो का रस तपा कर कर्णों म सिंच करो। सेवक पुरुषों ने एकान्त म लेजा कर ताम्र रस तपता हुआ कानों में भरा। महावेदना से अभिभुत होकर शठ पंचत्व को प्राप्त हुआ त्रिपिष्ट ने इत्वरित आप राय म महा अन्याय द्वार बनकर तीव्र क्रोध के कारण दुःख विपाक रूप असातावेदनी कर्म निबद्ध बन्धन किया। खिद्मेश्वर की राजपुत्री विजयवती पति के अनादर से आर्तध्यान करती हुई स्थान २ पर अना दर पाने पर त्रिपिष्ट पर आन्तरिक क्रोधभाव स तिर्यंच गति में उत्पन्न हुई। त्रिपिष्ट वासुदेव भी विषय सुख म आसक्त भावों स भोगते हुए राज्य राष्ट्र म अति मु च्छत भाव रखते मित्र हुआ बल स शेष पुरुषों को त्रिणाण समझते रहे और विविध जीव हिंसा कर महारम्भ महा परिग्रह करके अति क्रूर भावा स भोगवास में पाप्स भाव म रत्नाकर रत्न का लाभ हुआ था उस स भ्रष्ट हाकर नरकायु बान्ध कर अनुक्रमे चोरासी लक्ष वर्ष का संपूर्ण आयु कर कालावसर काल कर सप्तमी माघवा तमतमा नरक के अप्रतिष्ठान नरक का वास में महा घोर वेदना

है और लक्ष योजन प्रमाण विस्तृत तथा लम्बा है त्रयत्रिंसत् सागरोपम् स्थिति मे पचसत् धनुष प्रमाण देही प्राप्त अति क्लिष्ट पाप कर्म का बन्धन किया जिस से नरकपन उत्पन्न हुये पूर्व के सन्चित कर्मों के निदयतपने अविदु सह दुखों को परम तीक्षण वज्र त्रिसुल खड्ग कुठारादि शस्त्रो की मार सहन करता हुआ रह रहा है प्रतिक्षण अति करुण स्वर से विलाप करता हुआ।

गाथा एगया देव लोएसु, नरएसु विए गया, एगया आसुर काइं अहा कम्मेहिं गच्छइ ३ एकदा जी शुभ कर्मों से देवलोक में उपजा अशुभ कर्म करने से एक वक्त नरक मे उपजा, एकदा आसुर काय असुरादिक देवयोनि में भवन पति में उपजे यथा कर्मों मे जावै।

उत्तराध्ये अध्याय ३ गाथा. एगया खतियो होइ, तओ चडाल बुक्कसो तओ कीड पयगानय, तओ कुन्धु य पिपिलीया ४। एकदा उच्च क्षत्रीय वश में होवै तत चण्डाल कुल तथा बुकस कुल में उपजै हीण कुले ततः किटक हुवा ततः पतग योन तथा कुन्थु पिप्पिलीका किडी पने जन्मले। ४ गाथा एव मावट्ट जोणिसु, पाणिणो कम्म किव्विसा, न निव्विज्जन्ति ससारे, सव्वठेसु व खत्तिया। ५ एसे आवर्त यानिया म कर्ता हुआ प्राणि कर्मों से क्लिविप कायर होकर नहीं निवृत्ति पाता है ससार से जैसे सर्वार्थ राज्य रिद्धि स क्षत्री राजा त्रिप्त नहीं हे ता। उत्तराध्येन ३

त्रिपिष्ट के लोकिक कार्य करने के वाद अचल पिण गाढे शोक से अभिभुत होकर भवन को शमशान मानता हुआ अदृष्ट पुर्व प्रिय जन के भी भोगने से अवगुणता विषयो को विप मानता हुआ वन्धुवर्ग पर वन्धनवत कल्पना करता हुआ प्रवरतरु मण्डित् नन्दन वन तथा कमल दल युक्त सरोवरादि पर श्रृगार गृह चारु वेपवन्त् सुन्दरी आदि का चक्षु मे नहीं देखता कहीं भी रत्ती नहीं पाता अत्यन्त ससार को असार मानता हुआ श्रेयान्स भगवान उपदिष्ट धर्म को सार मानता हुआ वैरी भवनवत् गृह वास को परितक्त करने का इच्छुक स्वजनो के उपराध से कतिपय दिवस रहे पिछे धर्म घोप गुरु समीप गये परम

भिमान और क्रोध वश हो कर उस तप के बदले महा शक्तिवन्त होने का निदान किया जिस मे त्रिपिष्ट नामे नारायण हुये हिन्दु जनता की यह एक प्राकृतिक बोली है आत्मा सो परमात्मा इस वास्ते आत्मा उज्ज-लता को प्राप्त करते २ वह परमात्मा का ही स्वरूप धारण कर लेता है जैसे वैश्नव समाज मे राम को बारे कला अवतार और कृष्ण को सोले कला अवतार मानते हैं इश्वर का, इस का यह रहस्य समझ में आता है कि उन्हों ने इतनी शक्ति प्रकट करली थी कि परमात्मा की शक्तिवत् कला चन्द्रवत् वृद्धि पाली अपितु निराकार इश्वर ने जन्म नहीं लिया नर से नारायण होता है। इसलिए त्रिपिष्ट ने भी घोर तपस्या कर ना-रायण पद को प्राप्त किया फिर घोर हिंसा के कारण पाताल मे प्रवेश किया फिर कई जन्म के बाद घोर चारित्र तप के बल से महावीर स्वामी वर्द्धमान तीर्थ कर अंतिम् जगतोद्धारक भगवान हो कर मोक्ष प्राप्त हुये इस वास्ते निराकार इश्वर सृष्टि करता हरता नहीं न कर्मों का भुग-तान करने वाला है कर्म उद्यम काल नियति स्वभाव यह पांचों ही के मिलने से कर्ता हर्ता दीव्य शक्ति देवी है इस ही से वस्तु का संयोग वियोग संसार प्रवाह मे अनादि अनंत तक चलता रहेगा। पंच जहां परमेश्वर यह लोकोक्ति है इस को मिटाने को कोई समर्थ नहीं।

अब त्रिपिष्ट का जीव सप्तम् नरक के दुःखों को भोग कर एक गिरिकन्दरा मे सिंहनी की कुक्ष मे सिंहपने उत्पन्न हुआ। बाल्यभाव से उन्मुक्त हो कर निरंतरपने समग्र वन मे क्रूर चित्त से स्वापद जीवों को पराभव कर्ता हुआ हस्ती कुम्भ स्थल को विदारता हुआ अति ती-क्ष्ण नखुनों से मारग कुल को गर्जारव मात्र मे त्रास रहा है इस तरह विविध जीव हिंसा कर चिरकाल जीवित रह कर यहा से मृत्यु पाकर फिर नरक मे नारकी पने उपजा यहा बद्ध बन्धन तथा क्षेत्र वेदना भो-ग कर फिर त्रिर्यन्च योनी मे अनेक जन्म मरण किये फिर कर्मों का क्षयोशम कर मनुष्य जन्म पाया यहा पर तप संयम आराधन कर स्वर्ग मे उत्पन्न हुआ॥ त्रिपिष्ट वासुदेव अचल बलदेव वर्णानन् वर्ण नील तथा पीत १ वंश दोनो का हरि वंश २ गोत्र दोनो का गोतम ३ देहमान दोनो

की अस्सी धनुष ४ नगर वालों का पोतनपुर ५ रिपु प्रति शत्रु नाम पिता वालों का दूजा नाम प्रजापति ६ मात मृगावति तथा भद्रा ७ पिछले जन्म में नाम विश्वभूति विशवनन्दी ८ आगति दोनों की मरा सूक्र ६ गति सप्तम् नरक मानवट तम तमा और मोक्ष १० अभ्यास नाम के समय हुए। ११ कुमार पद त्रिपिष्ठ पच्चीस सहस्र वर्ष। १२ मंडलि ति राजा त्रिपिष्ठ पच्चीस हजार वर्ष। १३ वासुदेव पद का राज्य सार्द्ध त्र्यासी लाख वष। १४ सर्व उमर चौरासि लाख वर्ष अचलकी पिचासी लाख वर्ष। १५ प्रतिशत्रु अश्वग्रीव का देहमान अस्सी धनुष आयु पिचासी लाख वर्ष पहले वासुदेव का मानना द्वितीय बलदेव का समझना।

नोट—सप्तमी नरक का एक विमतिम् जन्म समाप्त कर प्राणिम तिम् जन्म सिंह का हुआ फिर हिंसा कर प्रथम नरक में एक सागर तक दुख भाग कर फिर तिर्यंच गति में अनेक जन्म कर हिमावत पर्वत की गुफा में सिंह हुआ वह मृगादि वनवासी जीवों की हिंसा निर्दयता से करता था एक दिन के प्रस्ताव वह एक मृग का मार कर रुधिर त्रिमातुर हाकर खून चूसता था और मार ? मांस नोचता हुआ ला रहा था गगन में दो चारण साधु जेष्ट और अमित तेज मुनि जा रहे थे भगवान तीर्थ कर के वचनों से उन्हों ने स्मरण हो गया यह यही शेर है वा भी वर्धमान स्वामी अन्तिम तीर्थ कर होंगे ऐसा विचार कर भूतल पर मुनि शेर शेर सी इन तपोधन के तप के प्रभाव से शिकार छोड़ लाक दूर पर साधारण प्रकृति से खड़ा हुआ। अमितेज मुनि सिंह से कहने लगे था पूर्व कुछ जन्म पहले त्रिपिष्ट वासुदेव के जन्म से धर्म की उपेक्षा कर हिंसा आदि कर्मों में रत हो महा दुष्ट कर्मोपार्जन कर नरक तिर्यंच गति से ही जन्म धारण कर रहा है। अब अब तो मेरे वचनों का ध्यान पूर्वक सुन शेर सुनने लगा। मुनि ने कहा जम्बुद्वीप के पूर्व महा विदेह क्षेत्र श्रीधर नाम के वर्तमान तीर्थंकर से प्रश्न पूछा था जम्बुद्वीप के भरत क्षेत्र के अन्तिम तीर्थंकर कौन आप जिस पर उन्होंने उत्तर फरमाया वर्तमान में हिमावत पर्वत

में ... होकर हिंसा कर रहा है। उस वाणी का स्मरण हो आया हमें ज्ञान से जान लिया तू वही है अब तेरे दुखों को अन्त होने वाला है। अ हिंसा से विरक्त हो अज्ञान वश हिंसा कर मास भक्षण करना पुनर नरक ले जाने वाला है हे वनराज बुध्यस्व २ महा योगिस्वर के अमृत वचनों को मानो शेर घूट भर २ पीने लगा और जाति स्मरण ज्ञान हो गया और उस के भद्र भाव पगट हुये क्रूरता मिटा कर दया भाव अन्तर में जागृत हो उठा उसे मुनि के सामने अपना सिर झुका कर अपने स्वर में बोला भगवन् चाहे जितना कष्ट हो तो भी में अद्य से हिंसा कर मास अखाद्य को भक्षण नहीं करूंगा ऐसे सयमा सयमी आजीवि होकर उमर विताऊंगा। मुनि ने धर्म ध्यान आलम्बित मृगारि को क्रूरता रहित सगत लाभ उठाया जानकर त्याग दिलाया अन्त मे आत्म निन्दा मुनि वचनों पर ध्यान लगा कर भूख प्यास से अत्यन्त कष्ट हुआ परन्तु शरीर को नाशवान समझ कर विचलित नहीं हुआ। वहा से देवगति में देवायु खत्म कर धात की खण्ड द्वीप में पूर्व महा विदेह मॅगलावति विजय के मध्य जो पर्वत है उस पर कनक प्रभापुर में कनक पुन्ज नाम का विद्याधरों का राजा था उस की कनक माला रानी की कुक्ष से कनकोज्वल नामे उस शेर का जीव पुत्र पन में उत्पन्न हुआ थोड़े अरसे में ही वह नीति तथा धर्म शास्त्र का पारगामी हुआ सच्चे देव गुरु धर्म का उपासक बना उसे उस के मामे की पुत्री कनकवति से विवाहित किया एक दिन क्रिडा निमित विमानारूढ़ होकर मन्दिराद्रि पर नन्दन वन में क्रिडा करने लगा वहा पर मुनि जघाचारण को देख नमस्कार कर धर्म स्वरूप पुछा। मुनि ने कहा वास्तव में धर्म वही है दुर्गुण काम क्रोध आदि तथा दुर्व्यसन द्युतादि का त्याग करना तथा सद्गुण दया सत्य अस्तेय ब्रह्मचर्य अपरिग्रह तथा दानशील तप भावना आदि को अपनाना यही दुर्गति नीरोधक सद्गति प्राप्त करने वाला धर्म है तथा क्षान्त्यादि दश यहि धर्म का अर्जन करना परम पद प्राप्ती करने वाला है कनकोज्वल कुमर ने मुनि वचनो से परम वैराग्य उत्पन्न हुआ और अन्तर बाह्य परिग्रह त्याग कर गुरू पास दीक्षा ग्रहण कर

लान्तक स्वर्ग में गया।

यह तीन जन्म जैन श्वेताम्बर आमनाय में विस्तृत नहीं किये पर श्री जैन दिगम्बर आमनाय में विस्तृत किये हैं श्री महावीर पुराण में वीर का द्वितीय जन्म में ज्ञान प्राप्ति प्रथम स्वर्ग फिर कनकोज्वल कुमार फिर लांतक स्वर्ग में गया लिखा है ऐसे चार जन्म बताये हैं।

यह स्वर्ग से दश भव में च्युत हो कर रिद्धि से समृद्ध धन धान्य शांति सहित स्वचक्र पर चक्र के भय से रहित जहां तीर्थंकर चक्रीहरि हलधर प्रमुख जन्म धारण कालान्तर में जन्म लेते ही रहते हैं। जहां एक स्वरूप का काल वर्तता रहता है पश्चिम महा विदेह क्षेत्र मूकला नगरी राजधानी धनंजय नाम राजा राज्य करता था। समस्त रानियों में प्रधान पट्ट राणी धारणी नाम देवी सुख सय्या में सुती हुई को चतुर्दश महा स्वप्न देखे त्रिपिष्ठ का जीव गर्भ में पुत्रपने उत्पन्न हुआ अनुक्रमे गर्भ स्थिति पाकर शुभ दिवसादि में जन्म हुआ। उत्सव कर प्रियमित्र नाम स्थापन किया अनुक्रमे बढ़कर कला प्राप्त हुये सर्वांग सुन्दर एक सहस्र अष्ट शुभ लक्षणयुक्त हुये यौवन वय में अनेक राज कन्या से विवाहित किया शुभ दिवस देख कर पिता ने राज्याभिषेक किया। प्रियमित्र भी अस्खलित शासन से राज्य करते हुये चतुर्दश रत्न प्राप्त हुये।

गाहा: सेणा वइ १ गाहा वइ २ पुरोहिय ३ तुरय ४ वड्ढइ ५ हिथी ६ ७ चक्कं १ छत्तं २ चम्मं ३ मणि ४ कागणि ५ खग्ग ६ दण्डो य ७।

सेनापति १ गाथापति कुटुम्ब २ पुरोहित ३ अश्व ४ वार्धिक ५ गज ६ स्त्री ७ यह सप्त पंचेन्द्रिय रत्न चक्र १ छत्र २ चर्म ३ मणि ४ कांगणि जीवादि पर इस स लीक खींचने पर अनेक हजारों वर्षों तक प्रकाश लीक ही करती रहे ५ खड्ग ६ दण्ड ७ यह सप्त एकेन्द्रिय रत्न प्राप्त हुये। सम्पूर्ण विजय में आज्ञा वर्ती कर देश साधन विधि जैसे जम्बु द्वीप प्रज्ञप्ति में भरत चक्री का वर्णन है ऐसे यहां महा विदेह

मुक्ता नगरी प्रियमित्र का समझना रिद्धि वर्णन भी वैसे ही जानना अखण्ड राज्य कर रहे हैं।

एकदा प्रस्तावे प्रशान्त चीत्त भवनोपरि महल मे बैठे हुये दिशावलोकन करते तावत् अकस्मास्त देखे तो गगनागण कुछ दूर तक मेघ घटा समुस्थित हुई कज्जल समान काली विद्यु त चमकती हुई अग्नि से शुद्ध की हुई (कलधोत्) चादीवत् उज्वल तथा गोप कित सम समुल्लसित आडम्वर युक्त रमणिक मन्द २ जल विंदु मुक्त करता हुआ गम्भीर गर्जारव होते (शीखण्डी) मयुरगण मीहो २ कर ध्वनी कर रहे हैं क्षणमेक मे ही दिशा मुख मे प्रसारित कर सहसात वड़ी जोर से प्रतिकुल पवन चलते ही सर्वत मेघ प्रनष्ट हुआ ऐसे प्रियमित्र चक्री देख कर चिन्तावन करने लगे अहो कैसी अनित्य वस्तु की प्रणति है जो तादृश घन पटल अत्यन्त नयनाभिराम क्षण एक मे उन्नति पाकर साप्रत सर्व उच्छेद प्राप्त हुआ इस अनुमान से निश्चय से वस्तु की ऐसी गति है क्षण विध्वसन धर्म है यहा क्या प्रतिवन्ध स्थान है क्या प्रति है अथवा उत्तरोत्तार कौनसी विधि से उद्यम करना है। कैसे क्षण मात्र वाह्य वस्तु पर विश्वास हो तथा जो सकल मनोरथ का मन्दिर यह शरीर है जिस के निमित करा जाता है वह वाह्य वस्तु धरी रहे जो चतुरंग सैना ग्राम नगरादि जनपद प्रमुख राज्य गोधनादिक का अर्जन का उद्यम भी उत्पात धर्मत्व से प्रत्यक्ष दृष्ट मेघ जालवत् विनिष्ट धर्म है निश्चय अत कुशल नर कैसे इस निसार पुद्गल का चय उपचयरूप अस्थि मिन्जा वसा रुधिर मास शुक्रादिक विलीन कारण से उत्पन्न हुआ शरीर का विश्वास करे विविध रोगों का प्रवाह परिग्रहित है यह प्रेति दिन स्नान विलेपन भोजन प्रमुख उपचार कर परिपालन करी जाती है जिस की शीत ताप आतकादि दोषों से रक्षा की जाती है परम दुगन्छ नीकर्दुगन्ध अशुचिका प्रतिपूर्ण कलम है। वाहिर मात्र रमणिक है दुर्जन चेष्टावत निश्चय अविचार सुन्दर है महानरेन्द्रवत् विशिष्ट विषयों का अनुरागी शरीर है जैसे मार्जार दूध पान करने के प्रबन्ध है अनेच्छित प्रचण्ड यम दण्ड का घातक है।

कर प्रत्यक्ष उदय होकर एक दोषों की हानि करने वाला तु ही है।

ऐसा सुदोदय शब्द सुन्दरता युक्त श्लोक सुन कर अपूर्व लाभ मान कर राजा सय्या से समुस्थित हो कर प्रभात कार्य किये सिंहासनरूढ़ हुये। इस अवसर म उद्यान पालक ने आकर प्रणाम कर निवेदित करने लगा हे देव वधीपन करता हूँ आप को बहुशिष्य परिवार समेत पोटिटलाचार्य अभिधान यहा पधारे हैं तुम्हारे उद्यान मे। शिष्य समेत प्रसरित्त हुये है। एसे सुन कर हृदय में प्रमोदवन्त चक्री हुये चिन्तित से अतिरिक्त पारितोषिक दान देकर प्रवर वारण स्कन्धाशीन हो कर सर्व परिवार सहित महा विभुति युक्त चक्री उद्यान में पहुचे मे गुरु सूरी को सर्व विधि युक्त वन्दना कर उपविष्ट हुये सम्मुख धरनी पर न अति निकट न अति दूर। दोनो कर सम्पुट मिला कर गुरु का मेह के दर्शन म केकइ जैसे धर्मोद्यमवन्त सन्मुख निज चित्त की परिणति कर गुरु ने भी कहा भो महा राजा तुम्हारी बुद्धि कुशल अनुसारणी है। कर्म विवर को सम्प्राप्त हुआ। कर कमल में मोक्ष रूप लक्ष्मी बस रही है। जो तुम्हारे ऐसी विधि से दिल में वासना है हे चक्री तीन प्रकार के पुरुष होते हैं उत्तम पुरु निज मति मं भव भ्रमण हतु सम समझ कर गृहवास पुत्र कलत्रा आदि को छोड़ कर परलोक हित के लिए प्रव्रज्या ग्रहण करे। मध्यम पुरुष महान राग पिड़ित होकर तथा विध वियोग दुख से पिड़ित होकर किसी काल मे जिन धर्म का ग्रहण करता है गृहवास को छोड़ कर जघन्य मनुष्य विविध आपदा पड़ने पर भी रोग, शोक दुख से दुखित होने पर भी धर्म ग्रहण नहीं करे। यत अनित्यानि शरीराणि, विभवो नैव शास्वत नित्य सन्निहितो मृत्यु, कर्तव्यो धर्म सग्रह । १

इसलिए हे महानुभाव चक्री देर मत करो धर्म में विन्घ के हेतु बहुत है ऐसे सुनकर चक्रवर्ती विशुद्ध भावों से गुरू के चरणो में मस्तक नमाकर कहा हे गुरुदेव आप के वाक्य अवितथ्य हैं मैं इच्छा करता हूँ आप के पास अनगारावस्था ग्रहण करना। गुरु ने कहा हे भद्र प्रतिबन्ध मत करो यह युक्त है तुम्हारे जैसों को मुनि पद प्रमार्थ ग्रहण करना। गुरु के कहने पर वन्दना कर गुरु का चक्री नगर में गये

बुलाये नागरजन में मुख्यी और मन्त्री सामन्त सेनापति आदि पुरुषों से कहा मैं अब गृहवास परित्याग कर निर्ग्रंथ प्रवचन का शिक्षण करना चाहता हूँ जो मैं पहले आज्ञा निर्देशन करने में चुक गया हो अब तुम्हें उस को क्षमा करो तुम्हारे से अनुचित सेवा करवाई हो तथा तुम्हारे से अधिकरण करा हो। उन्होंने कहा हे देव हमारा हृदय वज्रघटित है निर्मेय आप के वियोग के वचनों को सुन कर नहीं फटता जननी पुत्र जन्म देने वालियों के पुत्रों में प्रथम उपकारी हो आप ने उत्तरोत्तर पद पर हमें स्थापन किये तो अब आप के चरण कमलों की सेवा से वंचित होकर निपुण चित्त म सम्या हीन होकर गृह म बस रहे हैं आप जैसे उत्तम पुरुष होने स्वामी पन म मिलने दुष्कर है। वा अपराध करने पर भी अपराध को क्षमा करें तो इस लोक परलोक में आप का ही एक शरण है। ऐसे कहने पर चक्री ने उन्हों से कहा यदि तुम्हारा ऐसा विचार है तो निज २ गृह जाकर अपने २ पुत्र को कुटुम्ब में स्थापन कर घर गृहस्थ के कार्य की सम्भलापन कर शिविका त्यार करा कर स्नान मार्जन कर उस पर आरूढ होकर निज परिवार सहित मेरे पास प्रगट हुआ वह सर्व अपने २ गृह जाकर आय का आलापन कर पुत्रादिक को सर्व कार्य सुप्रत कर राजा के पास आये। चक्रवर्ती ने राज्य राज्य पद पर पुत्र को उत्सव के साथ समर्पित किया अपने पद पर स्थापित किया वा चक धन का दान दिया स्नान कर वस्त्रालंकार धारण कर शिविकादि रूढ होकर सर्व प्रजाजनों सहित अभिलाषियों स परवृत चार प्रकार बाजे बाजते हुए। यतः वर्द वीणादिकं गेयं विततं पटहादिकं घनंतु कांस्य तालादि वंस मास्यादि सुसिर १ तरुणी गण मंगल स्तवनों में स्तुति करती हुई और रोमा पास लड़ कविश्वरों से स्तुति करते उद्यान म आय शिविका स उतार कर त्रिय दक्षिणा कर गुरु चरण कमलों को नमस्कार किया प्रवज्या ग्रहण कराने की प्रार्थना कर गुरु के आज्ञा दने पर सर्व वस्त्रालंकार उतार कर साधु लिंग धारण कर गुरु सन्मुख उपस्थित हुये गुरु ने सामायक पाठ उच्चारण करवा कर दीक्षा ग्रहण करवाई हुई न शुभ भावों से स्वीकार करी गुरु पास रह कर सिद्धांत का पाठ

अर्थ ग्रहण किया जिनोपदिष्ट जो वाणी है गुरु पद की अराधना युक्त चित्त से कर रहे हैं परिहरे प्रमाद उन्माद माया प्रपच को पच सुमति वतं तीन गुप्तिवन्त वहु विध तप कर्म कर देही क्षीण करी है।

मालिनी छन्द ॥ विमल गुण कलाव अज्जिण तो जिणतो, कुसुम सर पमोक्ख वेरिवग्ग, समग्ग नियजिय मिव सव्वे पालिणो रक्खमाणो, खणमिव अचयन्तो सुत्ततत्थ तत्थ चित्त १ सुहदुह मणि लेट्टू रुत्तु मित्ताइ एसु, तुलमिव समरूवं चित्त विर्ति धरित्ता, तिलमिव पढलग्ग छड्डिड सव्व सग, विहर इव सुहाए निप्प कपो महप्पा । २

अर्थ —विमल गुण के कलाप समुह है क्रोधादिक दुर्गुण को नहीं जीते उन को जीतते हैं वैर रखने वाले वैरी वर्ग समग्र को कुसुम सरो त्तर प्रमुख मान रहे हैं अपनी आत्म तुल्य सर्व प्राणियों की रक्षा करते हैं सुत्रार्थ को चित्त में क्षण२ मे याद कर रहे हैं अर्थात वार २ परिवर्तन कर रहे हैं १ सुख दुख मणि लेष्ठु कंकर शत्रु मित्रादिक को तुल्य मानते हुए सोम्य रूप रागद्वेप के अभाव पनै चित्त वृत्ति धारते हुये पट्ट वस्त्र पर तृण लगे हुये को दूर करे ऐसे सर्व सग विषयों को त्यागे हैं वसुधा पृथ्वी पर विचर रहे हैं अकम्प पनै महात्मा २ एक कोटि वर्ष तक प्रव्रज्या पाल कर घोर तपस्या कर पण्डित मरण कर महा शुक्र देव लोक मे ऋद्धिक देवता पन में उपजे यह वीरनाथ चरित्र सुपवित्र दुख रूप काष्ट को काटने में करवत समशिवपुर सुख इच्छा करने वालों के लिए एक ही मगल कलशवत् शुभ सकून है रिषभनाथ भगवान ने कहा हरिपद तथा चक्रवर्ती पद प्रवर लाभ रूप चरित्र जन मन को विस्मय उपजाने में जनक तुल्य तृतीय प्रस्ताव समाप्तः।

अथ चतुर्थ प्रस्ताव —वासुदेव चक्रवर्ती पद की वक्तव्यता प्रयत्न से कही अब नन्दन नर पति का वृतान्त और कहता हूँ इसी ही भारतवर्ष में सकल वसुन्धरा में रमणीक कर्णपुर रत्नवत वेश्रमण की राजधानी के समान छत्रा नाम की राजधानी थी यहा न्याय मार्ग प्रवर्तने में धर्मराज है कोप करने में कृतान्त तुल्य कीर्ति अर्जुन सम भुजा वल में बलभद्र सम मृग लान्छन चन्द्रवत् सौम्य प्रताप दिनकर

सन्मुख बैठे प्रथम दर्शन कर प्रकर्ष हृदय में हर्ष प्रकट हुआ नेत्र उज्वल हुये जैसे भ्रमर विलम्बित कुसुम सर्व अ ग मे वन्दन पूजन गुरु का करता हुआ आनन्द रूप जल को वर्षाता हुआ मानो एक मेघवत् उत्थित हुआ चारित्र मे एक रसिक मन से चित्त चचलता रहित हितोउदेश के लाभ का इच्छुक काम के उपघातक सूरी के चरणों मे निपतित कर परम प्रमोद उद्वहन करते कहने लगा हे गुरु देव वज्री हर हरि सुर दर्शन से अधिक जो आप के पाद पद्म दुर्लभता से प्राप्त हुआ मे जो दूर से भी आप की मन योग से सेवा करता है। वह मनुष्य भी सुख भागी होता है तो प्रत्यक्ष चरण कमल की सेवा करता है। उस का बारम्बार धन्य है जो तुच्छ आजिविका के लिये भी इस ससार में सेवक सेवा करते हैं तो आप जैसे तो प्रत्यक्ष जगम तीर्थ हैं। इस सेवा से तो महा लाभ है। आप तो पृथ्वी पर एक चितामणि समान हो गुरु स्तुति कर नन्दन नरेन्द्र उपविष्ट हुये गुरु ने धर्म योग्य जानकर धर्म देशना प्रारम्भ की हे नरेन्द्र अनत काल से जीव नरकादि गति में पराभव पाता हुआ दुखो मे सतप्त अनत काल से भव भ्रमण कर रहा है। अज्ञान तप और अकाम निर्जरा से मनुष्य जन्म भी मिला रिद्धि सयुक्त भव भ्रमण दुख को अवगुण कर धर्म प्रेम को त्यजकर धर्माचार्य की अवहेलना की धर्म करते हुये विशिष्ट जनों का उपहास्य किया विषयो को मान्यता देना प्राणी वधादि पापो मे सम्प्रवर्तता नाशवान शरीर को मुढ शास्वत मानता है। विश्व भर के नायक आज्ञाकी शंवरता मे प्रधान वह भी मन वाञ्छित भोग उपभोग भावों से प्राप्ति मे लगे हुये हैं नरसिंह राजा ने जैसे वैराग्य प्राप्त हो कर दीक्षा ली ऐसे ही तुम भी बिना प्रतिबन्ध दीक्षा लो।

नन्दन राजा को गुरु उपदेश का भजन

तर्ज—तरकारी लेलो मालन जो आई बीकानेर की।

टेक—अहो भविप्राणी वाणी सुनो जी श्री जीन राज की।

लख चौरासी चक्र तनीपर, भ्रमता भव वन घोर।

मार्ग थाग पाया नहीं तुमने, करता दुख और शोर जी। १

नृप नरसिंघ की कथा

धर्म गुरुके पास धर्मोपदेश सुन कर विषयव्यामूढता छोड कर गुरु पास नरसिंह नृप ने दिक्षा धारण करी उसही राजा का पुत्र नर विक्रम दो राज त्यज कर पुत्रों ने राज देकर मह सत्ववन्त प्रचूर लक्ष्मी लीला राज त्यज कर प्रवज्या ग्रहण की नर विक्रम का महा प्राक्रम पुरुषत्व सुन कर आश्चर्य प्राप्त हुवे ऐसा चरित्र है नन्दन नृप ने पूछा गुरु को भगवान् कौन पिता पुत्र हुए उन्हों का चरित्र चित्र जन्य कृपा कर सुनाओ। पोट्टिलाभिधान गुरु कहते हुए राजा ध्यान दे कर सुनो। कुरुजनपद में तिलक भूत पर चक्र भय अदृष्ट जन समुह अनुगत जयन्ति नामे नगरी वहां का शशधरसम सौम्य दृष्टि सहित प्रजा पालन करता है जिस से कीर्ति प्रभार प्रसरती हुई निष्प्रतिम (प्रमाण रहित) प्रजा आक्रन्त करने वाले शत्रुवो से पद मलमें प्रणीपति करा है शक्रोपम सुरपूरी में परम विक्रम वन्त ऐसा नरसिंह नामे राजा राज्य करता है सर्वअन्त पुर में श्रेष्ट चन्द्र मंडल प्रतिपूर्ण वदन की लावण्यता राज हसी सम गति है। कूर्म वत् पाद कमल कोमल है॥ विमल शील सालनी महा मूल्य भांडवत्। मंजूसा सम॥ सर्वरति सौख्य मणि भडार तूल्य चम्पक माला नामे देवी हैं सरल लता सम, वाहें तथा सरल स्वभाव और वाणी तथा सरल सिरोज वता। तथा सरलाची कपट रहित है। नरसिंह राजा के बुद्धि सार प्रमुख मन्त्री थे परचक्र स्वचक्र प्रसान्त ग्राम नगर आदि धरणी मडल जन पद प्रसान्त तथा समृद्ध और धर्म विरोध रहित देव गुरु चरण सेवक सेविका नर नारी रहते थे गुण

घोर शिव का कपठ।

द्वारपाल ने राजा से कहा। नृपादेश से नृप दत्त आसन पर वैठा सन्-मान कर उचित प्रतिपत्ति (सेवा) कर नरपति ने च्रण वाद निज चिन्ता प्रकट करी घोर शिव ने नृप को वन में कृष्ण चतुर दशी को पूजा होम सामग्री वली वाकल जो मगाए वह नृप ने उसे सर्व दिये घोर शिव ने राजा से कहा आप वहा उपसाधक वनकर मेरे पास रहना कार्य सिद्ध करना मेरे लिए एक सहज है ऐसे कह कर वन में चन्डी देवी के स्थान गया नृप ने मन्त्री यों से कहा तुम परीच्ता करो यह कार्य करने में समर्थ होगा या नहीं मन्त्रियों ने उस के कार्य मे वोल चाल पर सूच्म दृष्टि से परीच्ता कर के हो कहा हे देव गूढ़ मायाचारी विश्वास घातो पापाचारी स्वयमतावलम्वी परोपकारहीन धर्म ढोंगी इस की सगत किम्पाक फलोपम है। इस से दूर रहो नृप ने कहा मैं ने वचन दे दिया इस वास्ते वन में कृष्ण चतुरदसी की रजनी में जाऊगा परन्तु सावचेत रहूगा ऐसे मन्त्री वर्ग को कह कर चतुरदसी की रात्री में दास अगरच्कादि की दृष्टि चुका कर वेश प्रावर्त कर एक खङ्ग सवाई लेकर वन में समसान भूमि में घोर शिव कापालिक योगी है वहा नृप आकर उतरासाधक वन कर रहा उस ने विधि पूर्वक वली वेदिका रच कर मडल अलकृत कर वली वाकल चेत्रपाल देवतादि को दे कर अग्नी कुड जा ज्वलायामान खैर अंगार से भरा उस के पास नाशाग्र पर नैन टिका कर प्राणायाम कर मन्त्र जाप करने लगा नृप को स्थभिम्त करने वास्ते मन्त्र जपते हुए पास भूधव मद २ पादतल मही पर टेकते हुए उस के पृष्टि भाग मे खड़ा रह कर इस के मन्त्र को सुन कर राजा समझ गया कि मुझे स्थम्भित कर और मार कर अपना कार्य सिद्ध करना चाहता है तो मैं ही इसे खङ्ग से काट कर फैंक दूं नृप पीछा सरक कर आह्वान कर कहा सावचेत हो वरना दुष्टा जीवी को मार कर दीशा वलिदान करूगा कापालिक मन्त्र वोच में छोड़ कर नृप को कातो ले कर मारने को दौड़ा नृप ने कहा अरे दुष्ट हमारे कुल में पहले वार नहीं करते ऐसे सुन कर घोर शिव ने एप कण्ठ पर काती चलाई राजा ने दच पनैं काती टाल कर निज वाहूवन्ध से हाथ याधे योगी के हस्त के सस्त्र गिराये। मही पर मुष्टि प्रहार कर योगो को धवणी तल पर पटका मन्त्र तन्त्र सिद्ध जो थ। वह सर्व निष्फल हुए योगी आ कर कुछ विश्राम कर नृप से

घोर शिव का पूर्ववर्णन।

कृपा कर जाज्वलाय मान इस अग्नि में मुझे प्रक्षेप करो। जो मेरे पूर्व कृत दुराचार के पापों से मैं मुक्त होकर शरीर त्यजु। नृप ने कहा ऐसे अग्नि प्रवेश करने से पाप शांत और मुक्ति नहीं होती यदि पापों से मुक्त होना चाहता है तो हिंसा असत्य स्तेय, मिथुन परिग्रह त्याग कर गुरुजन पाप विरक्तों की शिक्षा धारण कर सेवा सुश्रुषा से तथा द्वादश भेद तप समाचार पाप मल से आत्म सुवर्ण को साफ कर और जिन वाणी का स्वध्याय कर। शुद्ध धर्म ध्यान शुक्ल ध्यान कर। आत्म मल दूर कर। आत्म स्वरूप तथा परमात्मा का चिंतन कर। घोर शिव बोला, हे भूपते मैं पापी पाखण्डी चंडाल विश्वास घाती स्वभाव से विचित्र कूड कपट दाक्षिण्य। भुजगसम विष प्रसार कर परछिद्र अवलोकन रक्त दुर्जन सम, मुख मधुर भाषी हृदय कैंची सम ऐसा विश्वासघाती वस मेरा जीवन इतना ही बहुत है। पाप पक भारी कलेवर में रहने से तृप्त हुआ। राजा ने कहा वार२ क्या आत्म पुरुषको निन्दता है। पाप विरक्त होकर आत्म सुवर्ण अमेध्य पतित सम तप चरण जल तथा अग्निमय धोकर निर्मल कर शुद्ध बना आत्म स्वभाव पहचान कर और निज दुश्चरित्र सुनाओ।

घोर शिव बोला हे महाराज सुनो! सुर सरिता पास देश है। विविध आपन भवन वनमाला विभुषित उनके ऊपर सित वेजयन्ती ध्वजा से शोभित सुर मन्दिर शिखर हैं। ऐसा श्रीभवन नाम नगर वहा विपक्ष जलाशय शोषित कर प्रचण्ड मार्तान्ड आतापयुक्त अनेक समर व्योपारमें विख्यात यशवन्स अवन्तिसैन राजाहै जिसकेविजय सहस्रयात्रा प्रयाप्तअनेक पारथिपसहस्र अनुगमन करते हैं। मणी कंचन दण्ड युक्त पुण्डरिक कमल सम पाण्डूर मानो छत्रा छादित गगन धामोग मघ सम गर्जते मत्त कुञ्जर गल्भाग समद जल गलता ऐसे है। मानो अन्धकार उदय करते हुए वक्ष स्थल नृप का नगर कपाट विकट सम श्रीवत्स युक्त है। राज्य लक्ष्मी वन्त हैं उस राजा के निजलावन्य रूप यौवन गुण अगणित रत्नी सम अन्यस्त्रियों में प्रधान पट राणी दो थी। पत्रलेखा तथा मनोरमा प्रथम भार्या के एक पुत्र वीरसैन नामे उत्पन्न हुआ द्वतीय के विजयसैन नामे आत्मज धनुर्वेध आदि अनेक शास्त्र विद्या ग्रहण की दोनों ने चित्र पत्र छेद विनोद में निपुण खेटक खड्ग मलयुद्ध आदि में निपुण

गाली देते । परस्पर मरणभय को अवगुणते रणरसीक चित से लुलेते२ एक ने दृष्टि चुराकर द्वितीय पर मुद्‌गर प्रहार किया । धरणीतल पर मेरे पास आकर पड़ा । विगत चैतना मुर्छागत असीपट मिल गये । विगत छाया छेदा हुआ वृक्ष उप । इस ही अन्तर में तदनुमार्ग ही खड्ग निकाल कर इतर विद्याधर प्रधावित हुआ उसके वध निमित । मैंने जाना इसके विनाश के लिए यह आया है । तत मैने कहा शब्द वेधी धनुष अ'गरक्षकोंको लेकर कहा रे रे निर्दई सुमी तल पर पड़े को मत मार यह वीरों की नीति नहीं है । हे महाअनुभाग्य यह अनोचित है । एवम् सुनकर घिनाश ने उद्यत खेचर प्रतिस्खलित हुआ असिखेटकादि शस्त्रधारी उसके अ ग को छादित करा । आकाशतल रहे विद्याधर वोले अहो नरेन्द्र इसको छोडो यह हमारा वैरीवध करने को इस वैरी को अवश्य मारना है । नृप ने कहा अरे विद्याधरों क्या वोलते हो तुम पिशाच सम हो । क्या क्षत्रियों का यही धर्म है । पड़े को मारना और शरणागत की रक्षा नहीं करना । क्या मेरे चापगत होते मारना इच्छते हो । उन्होंने कहा यह हमारे स्वामी को स्त्री को रहस्य मे भोगने को रसीक है । इस वास्ते विद्याधर वोले अरे दुष्ट नराधिक मत प्रतिवोधित कर सुप्त केसरी को ऐसे कठोर वचनों से वोलते हैं तथा दृष्टि विषधर के मुख को करमें ग्रहण कर कन्डु मत कर भयानक अग्नि ज्वाला में तू पतग सम मत पढ यदि चिरकाल राज्य करना चाहता है तो । मैंने कहा अरे क्या वोलते हो मर्यादहीन निती मार्ग के सलग्न सतपुरुष चाहे जो हो परन्तु वह अपने पथ को नहीं छोड़े । यदि ऐसे ही ह तो राजा हमें दोषी मत कहना यों कहकर आकाश मार्ग में चले गए तदन्नतर मैंने भूमीतल विद्याधर निपतित के सेवकों से शीतल उपचार कराये निरुपित कर चन्दन विलेपन तथा निपुण पुरुषों से उसके शरीर के तेल सम सवाभन करया । क्षनांतरे उपलब्ध चेतन्य हुआ । आखें खोलकरदिशी मन्डल अवलोकन करपार्श्व वर्ति परिजनों को आलापित करे अहो महायशों क्या मैं महीपट पर पड़ा कहा गया वैरी विद्याधर कौनसा यह देश है । क्या नाम है नगर का यहा कौन भूधव है । छत्र छाया कर रविकर प्रसार को निवराने वाला परिचलितधवल चामर युगल नर निकर मध्य गत रहे मुझे पुर संस्थित

शेखर मेरा नाम स्थापन्न करा। गगन गामनि प्रमुख अनेक विद्या अहरण करने पर अथ योवन भाव प्राप्त होने पर पिता ने प्रणाया (लग्न करा) पद्मावती भार्या से प्रवर विद्याधर कुल में जन्मी रूपादि सुन्दर मानो कामदेव की विजय पताका है।

यह वैरी नभचर रथनुपुर चक्र वाल पुर का प्रभू श्री समर सींह नरेन्द्र का आत्मज अमर तेजना में है। वाल्य वय से मेरा वहुत गाढ़ा प्रेम वन्ध इस से हुआ और विश्वास पात्र सर्व कार्य में पूछने योग्य शयन भोजन गमन आस्थान कार्य करने में सहचारी हमारा दोनों का एक चित से काल व्यतीत होता रहा। अथ परिजनों ने मुझे कहा रहस्य स्थान में जो तुम्हारा यह मित्र है तुम्हारी कलत्र मे विरूपा चारि है मैं ने किसी पर श्रधा नहीं करी। वल्कि परिजनों को कठोर वचन कहे। ऐसी अघटनीय वात नहीं भाषण करना मेरे समीप स्वयमेव देख कर निश्चय करे यह नीति वानों का कर्तव्य है सहसात कहना तथा कार्य करने में पश्चाताप होता है मैं ने यह कथा अगोप कर रखी परिवार से। एकदा परिस्तावे राज्य भवन निज सोध में आया। तो उस कुमित्र को मेरी दयिता सग उसे कुश्चेष्ठा में देखा जब मैं ने विचारा परिजनों का कथन सत्य था मै निज परिवार से गया वहां से वह पलाइन हुआ अहपि प्रहरण सहित निज स्तोक प्रधान पुरुषों के परिकर से उस के पथ पर संलग्न हुआ। वह अदर्शन प्राप्त हुआ। मैं ने पवन वेग को जीते ऐसी शीघ्र गति से इस स्थान को यावत् प्राप्त हुआ तब यह महापापी मेरे दृष्टि गत हुआ परिजन पुरुषों ने शकल दिशाओं में मैं ने पहले ही प्रेषित किये थे इस के विनाश के लिए मैं अकेला ही यहा पहुँचा मुझे असहाय देख कर युद्ध करने लगा मेरे साथ वाकी कथन सर्व आप ने देख ही लिया। इस ही अन्तर में सन्नाह धारण करे दृढ काय दुर धरिस अनेक गगन चर पुरुष भूमि तल देखते त्वरित वहा आए जहा वह खड़ा था। घोर शीव नरसिंह नृप से कह रहा है मैं उन से पुछा तुम क्यों आए उन्हों ने कहा हमारा वड़ा भाग्य है हम यहा उतरे जयशेखर को देख कर वह सर्व नभ चारी वहुत हर्षमन में। मुझे प्रत्युत्तर दिया आप ने वहुत अच्छा किया जय हो आप की नि स्वार्थ

वीर सैन की विपत्ती ।

दुर्विनय वृक्ष रोपा था। उसके फल चखाने वास्ते प्रेषित किए। हमने मैंने कहा यदि ऐसे हैं तो यथा इष्ट कार्य खड़े रहो। तत मुझे अक्षय शरीर से ग्रहण कर आकाश में उत्पतते हुए। दूर देश में गये मुझे भयानक गिरी कुंज में मुक्त किया। छोटकर जाने लगे जब मैंने कहा यहा क्यों छोडते हो। सेवक ने कहा। हमारे स्वामी की हमें ऐसी ही आज्ञा है।

उस वन में कहीं तो कोकिल टहुकार करती है। कहीं केशरी स्फाल दे रहे हैं कहीं सारंग (मृग) युथमेंसे सारंग को निर्दयता से चपेट से मार करता है कहीं वन महीष पक उच्छालते है। कहीं वेनू गहन में परस्पर घस कर वन दहन से रक्त दिशा हो रही है। कहीं प्रदीप सम रक्त आखों से निषाद फिरते हैं। कहीं तीक्षण दाढ मुख से निकली ऐसे सूकर दौड़ते हैं। ऐसे भया वह वन में रास्ता अप्राप्त दिशा मुढ होकर फिरते। ऊचे वृक्ष पर चढ़कर प्रसुप्त हुआ। निद्रा राक्षसी ने घेर लिया। पृथ्वी यामिनीमें जम्बुकों ने मानो यामिनी पहरेदारों सम झालर पर टकोरे लगाये। ऐसे जोर का रव करने पर मैं गत निद्रा हुआ। अथ उदय हुआ। सकल भवन का प्रदीप दीवाकर उत्थित होकर प्रभात काल के कृत्य कर उस शाखा से उतर कर एक दिशा में प्रयटन किया सन्मातरे तरुण तरु चक्र लाप बद्ध परिकर को दण्ड कण्ड (धनुष) कर धारण करे निज नितम्बनीयनी अनुगमन करती हुई गुजाफल की माला मात्र कृत आभरण भुजंग कंचुक सदृश केश कलाप एकत्रकरे सिखंडीका तत्क्षण गिरा हुवा शिखि मुख का निप जाया। कर्ण पुर धारे। एक पुलिंद को वहा देखा। उस से पूछा भो महानुभाग्य यह कौन सी अटवी है। कौन सा निज शिखर भग्न रवि रथ अश्व मार्ग यह गिरिवर है। किस नगरी के राजा का राज्य मे यह है। पुलिंद ने कहा अनामि का अरन्य है। मध्याभिधान यह भूभृत है। कंचन पुर नगरी के राजा की सीमा में है। तत मैं उस के मार्ग में चला। कंद मूल फल से प्राण वृत्ती करता हुआ कई दिनों मे नगरी प्राप्त हुआ। कंचन पुर में मुनिवर सम अप्रति बद्ध सय्या मे रहा वीत राग तुल्य सर्व संग रहित स्थान में कतिपय दिन विताये देखता हुआ पुर्व दिशी के स्थानों को। ग्राम नगर अवलोकन करता धार्मिक जन के कराये हुए सम उत्तरा सुन्दर सुर

जीवित का मृत्यु मानना।

स्थित न जाना जावे। युक्तायुक्त तो आप कतीपय दिन यहां स्थित हो कर नरेन्द्र आदि के चित का उपलक्ष्य करो मैं ने कहा तथास्तु। तब सोमदत्त ने साम दाम दण्ड भेद नीति कर मन्त्री सामन्त को भेद करना चाहा। पर वज्र हृदय सम निष्ठूर चित रहे। किसी उपाय से किसी को भेद नहीं कर सका। उस के समागमन की व्यति कर जान कर द्वारपाल को वर्ज दिया। सोमदत्त को राज सभा में प्रवेश नहीं करने देना। विजय सैन नृप भ्रातृ से कहा। शिष्ट पुरुष ने आप के वृद्ध भ्राता वीर सैन पंचत्व को प्राप्त हुए। एव निसामित कर लघु बन्धव में महा शोक किया। मृत्यु कार्य प्रवताये जो मैं ने राज्य कार्य विपयमें जो उपाय सोचे थे। देव प्रति कुलतापनमें सर्व विलय हुए जो घाट घड़े थे वह विधि निकरुणात्वनें विघटन करे अन्यदा अत्यन्त शौकाकुल नृप को जान कर सोमदत्त ने मेरे से कहा स्वामी मन्त्री वर्ग ने आप की पचत्व प्राप्त वार्ता फैला कर राजा से मृत्यु कार्य कराये। तो यदि कथपि राय वाटिका निर्गत आप को विजयसैन नृप लघु भ्राता आप को देखे तो युक्त कार्य होगा। ईस वास्ते आप राज पथ पर महल में रहे विजय सैन को आप दर्शन कराओ जो आप के दर्शन अभिलाषी हैं। सोमदत्त के अनुरोध से मैं ने प्रतिपन्न कर अन्यदा प्रवर हस्ति स्कंद पर आरुढ हो कर विहार यात्रा के लिए चला। विजय सैन बन्धु के चक्षु गोचर हुआ प्रशादावतसक शिखर पर रहे को देखते ही झट मुझे कहने लगा स्वागत २। चिरागत बन्धव यों कह कर हर्ष वश प्रफुल्लित नयन कर यावत बुलाने को प्रवृत हुआ। तावत तत्क्षण मन्त्री सामन्त प्रमुख बोले कहा से विहार यात्रा से राजा निवृति हुआ कुछ बोलता है। हे देव आप को किंचित अशिव है पिशाच के दर्शन हुवे राजा समर सैन मृत्यु पाकर फिर प्रत्यक्ष दर्शन दिखाता है इस कारण मरा हुआ भी क्यों दिखाता है सो शीघ्र भवन में जा कर भूत वली दे कर देह शान्त करो प्रारम्भ होम विधि और मृत्युमजय मन्त्र सुमरण करो तथा हीः-

ओम् नमो रिपभाय मृत्युंजयाय सर्व जीव शरणाय पर भवयो अष्ट महा प्रतिहार्यसहिताय नाग भूत यक्ष वसकराय सर्व शान्ति कराय मम शिवं कर २ स्वाहा।

विजय सैन भवन में गया जैसे कहा वैसे ही सर्व कार्य करे दीन

मनायों की दान दिलवाया और धर्म स्थानों में भी दान दिया। आहिस्ते सिलमाह निरानन्द वैसें भाव व्याप गत उस स्थान से अनवरित होकर मन स्थ कर बिना कहे ही अपना स्थान रह कर विलक्षण आरम्भ किया अथवा अनवरत अनेक विरोध करने पर भी मनो सम्मन्त आदि पारितोषिक करे फिर मा कैसे आगे कहे को नहीं मानते बहुत बार अपराध करने पर भी नहीं हटाये न दूर किया। फिर भी मर्याद मुख कर मुझे यह नहीं मानते। नगर महत्तर (बड़े नागरिक) क्यरसे उक्त अनेक कार्य में स्पष्ट बड़नसे आज्ञा कर जाते थे। यह भी नहीं मानते जयशेखर कुमार यह विद्याधर कुसुमावली उस के पास जाने पर कैसे उपेक्षा करेगा मैं ने फिर चिन्ता ऐसे विकल्पोंसे क्या होता है अब आत्महित कहां किस नगर को गमन करूं अन्य देश में अन्य नृप महत्तर की (बड़ों की) सेवा करूं। अथवा सकल अपराजिता आश्रम जैन भी अवन्ति मैंने महान नराधिप मुख हो कर कल्पित काम राज्य वर्जित भ्रमण कर अब मैं अन्यके नीचे रह कर सर्वथा अयुक्त है ऐसे विचारकर कथे स्थान पवन आदि से पद कर मस्त स्पष्ट। ऐसे विचार कर नगर से मैं रूपस्वाभिमुख निकला अनेक प्रयाण से चलता चलता तड़ वंड मंडित इमान सम्प्राप्त हुआ। शिखरियों का तांडव नृत्य जहां हो रहे हैं। रमणीक हंस सारस कपिञ्जल कोकिल कलरव का शोर हो रहा है। पुन्नाग नाग जम्बु अमरूद सौभाग्य आम्र अगोरि चिरमीइत्यादिक आदि वृक्ष समूह है। चम्पा मोगरा केवड़े गुलाब कुन्द मचकुन्द इत्यादि की लतायें हैं। पवन शिखर भैरव वदन प्रत्यासन्न प्रदेश के पास एक मधुर नदी है अमरस्थापित चरण भर गिर अपना मात्र की माला पहने मेघ ध्यान में परायण कापालिक योगी राज का मन अमल कल्पित योग दृढ़ ज्ञान विज्ञान प्रकर्ष सम्प्राप्त महात्मीक परितोषित वैताल योगिनी आदि वश करे। ऐसा महा कापालिके योगाचार्य उस के पास आ कर प्रणाम करा सर्वादर से उस ने आशीष दी मैं निविष्ट हुआ बादमें तब पर उसके पास मैं उस ने स्नेह दृष्टि से मुझे देखा पश्चात् सम्भाषण करा है भद्र उद्विग्न चित्त जैसा है ऐसा प्रतीत होता है। तो क्या भद्र कौनसी हुआ। तथा विदेश से आगमन हुआ अथवा अन्य कोई कारण है। मैं ने कहा भगवान् हमारे जैसे पुरुष हीन भाग्यियों को सब प्रकार उद्विग्न चित्त होता है। फिर

कुकृत्य का साधन।

कारण कथन करू तो भी उस ने कहा तथापि विशेष कर आश्रीत करना इच्छता हू। मैंने कहा भगवान् आपके ध्यान में विघ्न कारक व्यति कर को क्या सुनाऊ उस ने कहा परोपकार करना कर्तव्य है। मैं ने सर्व विद्याधर को बचाया। वहा से अ तमें प्रेत बता कर बन्धव से नहीं मिलने दिया। राज्य मन्त्री वर्ग ने राज्य से हटाया। मैं यहा आत्म घात करने को आया हू। और आपके चरणोंमें आकर सिर झुकाया सर्ववृतान्त कहा उसने मुझे कहा गुरु दुख पड़ने पर भी साहस रखना सुख का मूल है। जैसे दुख सहजमें हो जाता है सो दुखमें भी धैर्य से सुखका सम्भव है। सदा ही किस के निरन्तर सुख रहता है और किस में आपदा न आई है। खल मनुष्यों से दुखित कौन न होता सावचेती और कोशिशसे किसे लक्ष्मी नहीं प्राप्त हुई सुख बितने पर दुख और दुख बितने पर सुख होता है जैसे दिनपति अस्त होनेपर रात्री,रात्री बितने पर रवि विकास होता है इसलिए स्वयघात करना बुद्धिमानों का काम नहीं विविध बुद्धि उपार्जन कर और कार्य उत्साही होने पर कार्य सिद्ध होता है। विषाद छोड़ कर अनल सम चिन्ता विमुक्त कर विक्रम करने पर लक्ष्मी गई हुई प्राप्त हो जाती है मैं ने कहा भगवान् मेरा चित लज्ज से मूढ हो रहा है। साम्प्रत युक्ता युक्त नहीं जानने पाता समिहित उपाय नहीं सुझता क्षत्री धर्म नहीं विचारता जन निन्दा का लक्ष्य नहीं पाता। सुख दुख के कार्य को नहीं पहचानता मेरा मन सर्वथा कुलाल के दण्ड दृढ चालित चक्राधि रुढ वत्त हो रहा है। मन मात्र में कहीं भी अवस्थित नहीं रहता तो भगवान् तुम्हें ही कार्य साधन बताओ क्या करू। क्या उपाय समिहितार्थ सिद्धि हुवे। महा काल ने कहा वत्स मेरी प्रव्रज्या प्रव्रजित करो चरण कमल अराधना कर अभ्यस्थ कर योग मार्ग गुरु भक्ति में मनोरथ सिद्धि हुवे। तब मैं भय सम्भ्रात इव शरणागत वत्सल जैसे दारिद्र अभि भूत को कल्प पादप सम महा रोग पिड़ित को वैद्यइव प्रक्षीण चक्षु वाले को पथ प्रदर्शकको पम सर्वादरसे अराधित करने प्रवर्तने लगा।

मैं ने विनय कर उस के चित को अत्यन्त आकर्षित किया। मुझे अकेले को ही नियुक्त किया उसे निज रहस्य स्थान में आकृष्ट प्रमुख सिखाए निशेष आश्चर्य अन्यदा प्रसस्त तिथि नक्षत्र मुहर्त में परम प्रमोद से

तुम्हारी। अग्नि प्रवेश कुशलजन कदापि नहीं करे ऐसे मरणके दुर अध्यवसाय से हटा कर धर्म में सस्थापकर घोर शिव यावत् विरक्त हुआ तावत नरेन्द्र की जयरवसे पटह भेरी प्रमुख वादित्र प्रहत हुए दिगातर में निनाद हुआ। विचित्र मणि भूषण किरन प्रसार करते मसाणाण मे गगनसे विद्याधर अवतरित हुए। परम प्रमोद उद्वहन करते घोरशिवके चरण मे निपतित हुए। कहने लगेहे देव हमें गगन वल्लभ पुर अधिप विद्याधर विजय राजा का सुत श्री जय शेखर राज कुमार ने प्रेपित किए तुमने लेजाने निमित्त तो प्रसाद करो विजय वेजयती ध्वजा सहस्र अभिराजित कृष्णागर कपूर सुरभि धूप दहते धुमाध कारक दिशा आभोग को मणी कनक रत्न रचित विचित्र भात। भाग विस्तारी है। कुसुम अवतस विमाण में आरूद होवो। घोर शिव ने कहा भो विद्याधरों मुझे विषय प्रतिवन्ध से मुक्त करो अब मै विषय पिपासा से विरक्त हुआ विजन विहार अरन्य में निवास से सुद्धि हुतो हैं। प्रलय हुई स्व जन सम्वन्ध मृग कुलवद्ध से 'प्रद्वा माता म।ह अग्नि ज्वाल। कलाप कवलित सम प्रेषता हू। इस ससा। को इस लिए जहासे आए हो वहा जाओ। तुम जैसे देखा वैसे निवेदन करना विद्याधरो ने कहा एस मत कहो अत जिस दिन से जय शेखर कुमार तुम्हा। पास से गया उसी हो दिन से रथनु पुर चक्रवाल। नाथ से श्री समर सिंह ख चराधिप से महा समर समार भ हुआ अनेक सुभटों का पतन हुआ। अमर तेज अभिधान दुष्ट मित्र महा कष्ट में पड़ा अब परस्पर सन्धी हुई। परस्पर गृह में भोजन वस्त्र आदि करा अत इतने काल तक निज कार्य कोटि व्यापत्व से सांप्रत में नहीं आया। तुम्हारा अटवि निपातन प्रमुख व्यती कर कुमार ने सुनी तब से अत्यन्त जात तीव्र शोक सदर्भ से हम ने सर्व दिशाओं में तुम ने अवलोकन करने वास्ते भेजे और कहा अरे शीघ्र जहां देखो उस महानुभाव वीर सैन को यहा लाओ। जय शेखर सर्वथा विरह तप्त जानो अन्यथा भोजन नहीं करू गा। तत सर्वथा निपुण ने निपुणता से निरुपण करा। इस भूमि भाग को प्राप्त होते ही हमें यहां आये आप के शब्द निसा मित करे। कैसे भिषण मसाण भूमि में इतने काल से कोलाहल हो रहा है। कुमार जय शेखर ने तुमको लाने को हमें कहा तुम्हारे शब्द सुने हुए हैं। इस से हमें प्रत्या भी ज्ञात हुए इस लिए प्राशद करो जय शेखर कुमार को जीवित

राणी को शुभ स्वप्न की प्राप्ती ।

वर तथा घोर शिव को प्रति बोध दे कर मानों त्रिभवन का राज्य लक्ष्मी प्राप्त हुआ ऐसे शकल सुकृत मचय प्राप्त उपचित सम समस्त प्रशस्त तीर्थ साधु साधवी श्रावक सश्रावीकादि दर्शन तीर्थंकर पूजा महिमा इव अपनी आत्मा को मानता हुआ खड्ग रत्न पाणि प्रविष्टित निज भवन गया शय्या पर शयन कर सुप्त हुवा क्षणांतरे निद्रा समागत हुई। निशावस्था ने रणझनत ने पूरादि आभरणों का रव उठते अनुमार्ग लगन चक्राक स्खलित पाद क्रमों से चलती अनेक कचन मणी रत्न सहित भूषण धारण यथा स्थाने करी हुई अनेक दासो वृन्द से अरवी पुलन्दी आदि देशों को चेटिका चक्र वाल से परिवृत चम्पक मालादेवी वास भवनमें प्रविष्ट हुई । राजाको निद्रावश देखे रानी राजा को मधुर वाणीसे बोली नव प्रणिता दिवाहक सुखसे सोवे ऐस तथा शत्रुओं को हत प्रहत कर सुप्त होवे ऐस तथा सर्व साथ परिवेष्टित कर द्रव्य को सोवे जैसे हे नर नाथ ऐसे सुप्त हो अथ क्षणातरे मगल तूर प्रकृष्ट वजने लगे मागध लोग गाथा श्लोक कह कर राजा के गुण गाते हुए दीपिनी के दीप से माना समुन्द्र को लाघ कर सुर देव तुम्हें उदय श्री के सुखावह को प्राप्त करो एवम् निसामिय कर राजा प्रबुद्ध हुए चितने लगे

अहो सारस सम वचन, यथा वित्त वस्तु गर्भ जैसे मागधों ने पढ़ा । यत आसा अ ग समूब्भवेण, महग्घा सारेण सपूरओ, सूरो देव तुमपि वोदय, सिरि पावेइ सोहावह ।

अंग में आशा समुद्भव कर के महत सार सम्पूर्ति करने को हे सूर्य देव तुम्हें भी उदय श्री को प्राप्त करो । यह गाहा का अर्थ । ऐसे ही पुन परि भावित करते शय्या से उट्टे अवलोकन कर हर्षवश विकसोत हुए नयन सहस्त्र पत्र कमल सम देवी चम्पक माला को पुछा कि देवी का आगमन प्रयोजन रानो ने कहा हे देव अद्य पश्चिमार्ध रजनी के शेष भाग में सुखे सूती हुई को स्वप्न देखा । सहसात् वदन में प्रवेश हुआ और मणि रत्न माला अलकृत पवन से समुद्धत अंचल अभिराम कारी स्फटिक रत्नमय किरण निकलती हुई पाडूर दण्ड उपस्तंभित महेन्द्र ध्वज मुंह में प्रवेश करते देखा एव विध अदृष्ट पूर्व ऐसे स्वप्न देख कर प्रति बुद्ध हुई (जागृत) । आप को स्वप्न जनाने निमित आप के पास समागत हुई । इस स्वप्न को ग्रहण कर विचार कर इस

का फल देवी राजा ने कहा देवी तैंने विशिष्ट स्वप्न देखा तो निश्चय से पुत्र होवेगा । तुम्हें चतुर समुद्र मेखलायमान महिमंडिला पति पुत्र में कुसुम पुत्र का नाम होगा । देवी ने कहा आप के वचन प्रतिरूप्य हैं स्वप्न नाम सर्व प्राप्तकर अपने उत्तरीय वस्त्रके प्रमुक्त शुभ शकुन की ग्रन्थी निश्चय करी पर्यन्तर मिला कथा वार्ता कर देवी निज भवन में प्रस्थान किया । राजा भी प्रभात कृत्य कर सभा मंडप में विराजमान हुए पत्र प्रयस में ही अत्यन्त आश्चर्य पाते हुए मन में समागत हुए बुद्धि सार मन्त्री प्रमुख मन्त्री भूमि तल पर मस्तकी मंडल नमा कर चरणों म पड़े । राजा ने आसन दिलाए । सब स्थानों में विराजे हुए जिनकी आसनी सब की । हे देव आज रजनीके चारों याम हजारों याम सम बीते । प्रभात में हो पार मित्र को रजनी व्यतीत कर सुनने के उत्सुक हो कर यद्यपि किमपि प्रतीत नवम अवलोकन कर आर्जित उपगत देव कर कार्य सिद्धि यत्र दीखत हो तथापि विशेषतर आप के मुख से सुनना चाहते हैं या प्रसाद कर के देव रजनी की वार्त्ता कहो । मन्त्रियों के वचन चतुर प से हँसत हँस कर राजा ने घोर शिव का प्रपंच पुत्रादि वृत्तांत और पुरी ने मा कर कुसुम वर्षा कर पुत्र का वर देख कर अन्तर ध्यान हुई और वार शिव शिला पर कर चरणों में पड़ कर इच्छित ध्यान गया । सर्व वृत्तांत सविस्तर से कहा श्रवण की शिव सामर्थ्य ॥ सुन कर मन्त्रीगण हर्ष पाए नगरी में महोत्सव प्रवर्त्तन अम्बरा पुत्र के पत्नकमलरथा राज महीला पुण्यीलीन धनादी को दान दे रही है भगवत अर्हत देव को नित्य पूजा महिमा कार्य करती हुई तथा गुरु साधु गुरु भव आगार से तरने वाले धर्मात्म वाम स्वरूप बताने वालीका बन्धन पुण्यस्थान सम्मान करतीहुई नित्य शिक्षा सुनकर आत्मा में सद्गुण बसाती हुई । अच्छे गर्भ प्रभाव को शुभ दो हद उपजे वह सर्व नृप ने प्रति पूर्ण करे । धरणी में निधान संचय धन जैसा बढ़ानी नाम(वन्द्र)शिव पर्व वदे जैसे धर्म बढ़ाती हुई गर्भ निपजो वह रही है । सम्पूर्ण प्रतिपूर्ण नव मास साढ़े सात रात्री दिन बीतने पर शुभ तिथि वार कर्म नक्षत्रादि लक्षण मुहूर्त वार चन्द्र लग्न आदि में जन्म हुआ कोमल पाश्च सम सुविर सर्वा ग सुन्दर नवोत्त अवयव वंत ऐसे शुभ लक्षण सुन्दराकृति वंत पुत्र प्रसू हुआ । तब नरेन्द्र अन्तर्भ भवन में पधारे दासी राजा को देख कर कहा हे देव

पुत्रोत्सव प्रवर्तायै।

जय विजय हो आप की वर्द्धापन करती है। चम्पक माला देवी के अब ही पुत्र प्रसवित हुवा। पुत्र के तेज से मानो तेज राशी वत सकल दिशाओं में समुद्योत हुआ ऐसे सुन कर नरेन्द्र ने उस दासी को पारितोषिक दान दिया और दासीपन दूर किया। प्रधान पुरुषों को आह्वान किये समस्त नगरी में त्रिक चतुष्क चर २ में जिनेन्द्र स्कंध मुकुंद सुरेन्द्र गज मुख मंदिरादि में परमोत्सव प्रवर्ताओ यह आदेश दिया अनिवारिता भोजन वस्त्रादि दान वितरण करो। चारक शाला विसुद्ध करो। वन्दिवान छोड़ो तथास्तु आप की आज्ञा है ऐसे कह के सर्व कार्य प्रारम्भ किए। सर्व नगर को शुद्ध करा कर सुगन्धित जल से रज शांत करी पंच वर्ण पुष्पोपचार किया जमीन धवला कर खड़ियादिसे उपर स्वस्तिक आदि अष्ट मंगल आ लेखे। जगह २ धूप उत्क्षेप किए अगर तगर आदि अक्षत द्रोवादि स्थापन करे। महि पीठ की शोभा करी तरुणी गण शरीर के सिगारों से केश वस्त्र भूषण से श्रृंगारित कर मधुर कोकिल रव से गायन करती हुई वधावे के गीत गा रही हैं। महलों में भवन द्वार प्रतिपूर्ण कलश के पंचांगुली में युक्त हस्ततल चन्दन के छापे लगाए। कमल पुष्प से पिहीत किए हुए और वन्दन माला सहस्र से रमणिक करा भवन द्वार शंख झालर खरमुखि (तुरी) नोवत नगारे आदि अनेक वादित्र वाज रहे हैं सन्मान दान में चित्तवन से अतिरिक्त सुवर्ण दान से सन्तोषित सर्व नागरिक प्रमुदित हुए कुल स्थाविरी मंगल करती हुई नरपति को ऐसे संतोष उपजाया वृद्धा वर्धापन करके वहां। इस ही अव रमें मन्त्री सामन्तगण सेनापति स्थाथ वाह इभ श्रेष्टी प्रमुख श्रेष्ट पुरुष विविध रत्न सुवर्ण अश्वादि वस्तु लेकर पति को बधाई में उपहार करा।

इत विद्याधर घोर शिव ने जय शेखर कुमार को समर्पित किया। कुमार ने पितृ तथा गुरु सम जान कर परम महोत्सव करें पहले से लेकर अब तक सर्व वृतांत पुछा मर्दन स्नान विलेपन वस्त्रालंकार धारण करा कर भोजन कराए। आदर पूर्वक कतिपय दिन विताए अन्यदिवशे चतुरंग सेना सजा कर जय शेखर कुमार श्री भवन नगर में गमन कर विजय सैन राजा को जैसे वोतो सर्व व्यति कर वता कर सन्देह मिटा कर दुर दन्त मन्त्री सामन्त उतृश्र खलों का दमन कर पूर्व वत् घोर शिव समर सैन नृप को राज पद पर स्थापन

शीलवती के लिए वर चिंता।

ने कहा यह कुंवर सिंहासनारूढ़ को देखो दूत देख कर बोला हे पंचम लोक पाल कुंवर बहुत ही सुलक्षण रूप वत है। परन्तु एक विज्ञप्ती और भी है। हर्ष पुराधिप के पास काल मेघ नामे मल्ल है। महा बलवत है कठिन महिष सम तनु है सरोस से कुश्ती में सिर से युद्ध प्रारम्भ करता है। सूंडा दंड सम कर से पकड़ कर हस्ती को भी गिरा देता है। सांड का गिराना तो सहज है लोह सकल बहुत मोटी कठिन को हाथ से तोड़ देता है निज मुष्ठी प्रहार से पाषाण शिला को चूर २ करता है। उस के चर्म मास में मामुली शस्त्र प्रवेश भी नहीं होता न कभो बिमारी आई अपने बल के मद में अनेक नगरों में भ्रमण करता है मल्ल युद्ध करने को निरांकुश हो कर मस्त हस्ती वत् डोलता है। अन्यदा एक प्रदेशी पहलवान आ कर नृप ने कहा मेरे साथ काल मेघ से युद्ध कराओ नृप ने काल मेघ से कहा वह दोनों अखाड़े में अभ्युस्थित हुए दोनों का युद्ध जोरों से हुआ काल मेघ ने उस प्रदेशी मल्ल को दृढ़ मुष्ठी प्रहार से मारा राजा ने काल मेघ से प्रसन्न हो कर बहुत धन वितरित किया। कुश्ती देखने आए वह निज २ स्थान गए। राजा भी अन्त पुर परिवृत निज सोध सम् प्राप्त हुआ।

दूजे दिन देवी पद्मावती ने शीलवती को मर्दंग स्नानादि करा कर केश वेश भूषण शृंगार करा कर नृप पास सभा में चरण प्रणाम करने को प्रेषित को दासी वर्ग परिवृत कन्या ने पिता के चरण अरविन्द में आकर नमस्कार करा राजाने उत्संग में निवेसितकर पृच्छाकरी पुत्री किसकारण सभामें समागत हुई कुंवारी ने कहा आप के पादार्विन्द को नमने के लिए माता ने भेजी राजा ने विचारा यह वर योग्य हुई इस वास्ते देवी ने प्रेषित करी तो निश्चय अब क्या मेरी अग्र महेषी आत्मज एक तनुजा है। इस के लायक वर कौन है। यदि योग्य वर न मिले तो आजन्म दुखी हुवे। इस वास्ते पुत्री को पुछा करू राजा ने शीलवती कन्यासे कहा पुत्री समर भीरु वर वरेगी या विराग्रणी को वरेगी। पुत्री ने कहा आप ही जानो मुझे क्या कहना है नृपने कहा पुत्री मैं मेरी इच्छा से आग्रह करता हू। पुत्री ने कहा तो काल मेघ मल्ल को जीते वही मैं ने वर वरना है। राजा ने सोचा मेरी पुत्री बल अनुरागनी है ऐसा कौन समर्थ है। न पवथा नप कुमार इस कार्य में। राजा बोला पुत्री काल मेघ को जीतना

नर विक्रम का लग्न के लिए प्रस्थान।

प्रचूर करी तुरग सुभट से परिवृत अपने कुंवर को नृप ने प्रेषित किया उन के साथ कवर काल क्रमतासे हर्ष पुर नगर समीप करा राजाने ज्ञात हुआ वर्धापन के लिए प्रयत्न से नगर मुखे वसाग्र के ध्वज चिन्ह भट वधाया कुशल नरों ने पुष्प छटा टोप सुन्दर मार्ग विहीत किया। प्रवर पुष्प चिस करे भ्रमर गण मुहुर २ शब्द करते भ्रमण करते हैं। द्विक तृक चतुष्क चर्चर मार्ग मिले वहा रमणिक नृत्य गायन होते हैं। स्थान २ में कुसुम की दाम पच वर्ण पुष्पों की लम्बाय मान विचित्र लटकाई है। सप्त भोमिए रम्य भवन निरुपित करा कुमार वास्ते। सतस्तम्भ कलित चन्दन रस से प्रशस्त स्वस्तिक अलिखे। इस प्रकार हर्ष वस अनेक प्रकार सुन्दराकृति पथ करा। इस ही अन्तर में प्रधान पुरुषों ने आ कर नराधिप को प्रणाम कर कहा हे देव पुर समीप नर विक्रम सैन समागत हुए। इस वास्ते वधाओ आप कवर को। राजा कुमार का कुशल उदत सुन कर तत ऊची करी विजय विजयती ध्वजा सहस्र सहित चतुरग सैना समेतसित हस्ती स्कधाधि रूढ़ हो कर प्रति पुर्ण चन्द्र मडल सम छत्र धराते हुए कु वर सन्मुख नृप निर्गत हुआ। क्षणांतरे कु वर को देखा समालिगन करा विशेष प्रणत भाव से शरीर की आरोग्यता पुछी कुंवर के शरीर के सस्थान श्रो देख कर राजा ने विचारा काल मेघ का निश्चय विनाश हो गा। वाहुवल फटा टोप आडम्बर अथ मुहर्त मात्र कु वर के सग अनुगमन कर पूर्व नियुक्त निज २ स्थान कुंवर के परि कर प्रेषित करे कु वर को भी पूर्ववर्णित प्रशाद पर विमुक्त कर चतुरग सैना योग्य खाद्य भेजा। कु वर वास्ते प्रचुर व्यंजन भक्स भोजन प्रेषित करे। तत् कालो चित कृत्यकरे प्रधान पुरुषों को दिन के पश्चिम समय आह्वान कर कहा मो जाकर मेरी सुता यल रागणी को कहो कु वर प्रख्याती । काल मेघ मल्ल को अवश्य जीते गा। निज सामर्थ्य कर जो देव आप की आज्ञा है ऐसे सेवक जन कह कर राजकुमारी के समीप जा कर कु वर की ख्यति कर सर्व निवेदित करी तत द्वितीय दिवसे मल्ल युद्ध अखाड़े में बुलाए नगर जनों को। मच वद्ध किए परम कोतुहल मानते मनुष्य आए नगर जन मिले मच पर सभ्र ते वर नरपति स्थित हुआ। चेटि चक्रवाल सहित एक प्रदेश में मच पर आरूढ हुई शीलवती नृप सुता प्रफुल्लित फुल मालाकर में लिए अ गरचक चौफेर रहे रक्षाके लिए। मानोमेघ

कार्य सह विशेष करे। परस्पर में प्रणत भाव उत्पन्न हुए अन्य दिवसे कुवर ने देव सैन नृप के पास प्रधान पुरुष अपने भेजे। निज स्थान गमन करने के आज्ञा निमित्त उन्हों ने कु वर के प्रयान करने की प्रार्थना करी तत देव सैन नृप ने पुनरपि कुमार का सन्मान किया। श्रेष्ट वस्तु समर्पन करके गमन योग्य दिन निरुपण किया। अनुगमन निमित्त दण्डनायक नियुक्त किये। अथ प्रशस्त दिव शे स्वसुर प्रमुख ने उचित कार्य कर कुमार को चतुरंग सेना सयुक्त निज नगराभिमुख प्रस्थान करने को आज्ञा दी अनेक दासी वर्ग अलकार विभूषित कुमार पिछे लषमो वत् नृप पुत्रो चली। राजा ने अपनी पुत्री से जैसे शिक्षा दी।

भजन - ऐ सलोने श्याम सुन्दर मैं पड़ी मझधार में॥

टेक पुत्री कुल में मर्याद रखाया करो, सत्संग में जी को लगाया करो। कुसगति को त्याग कर के, शील शुद्ध निज पालिये, सन्मान कर निज गुरु जनों का, अविनय कर मत चालिये, सास ससूर की सीख मनाया करो। पुत्री १ अनुशरण कर के न्याय मार्ग, मित मधुर भाषी तू रहे, कुल देव सम निज पति मानी, सेवीका वन सुख गहे, नयन वैन से प्रेम जीताया करो २ देव अरिहन्त सिर धरो, गुरु पच महा व्रती धरो, विनय भक्ती दान देकर, सेवा शुद्ध भावे करो, निश्य शिक्षामे प्रेम लगाया करो। ३ दान शील तप भाव च्यारों, मुक्ति मार्ग सेवना, प्रमाद पांचों त्याग के, दया धर्म आदि लेवना, भव सागर पार कराया करो। ४ राज्य ऋधि देख कर, गर्भ वश होना नहीं, निज परिवार का आदर करो, दुख दर्द में सेवा गहो, परिचर्या सन्तोष उपाया करो पुत्री। ५

नृप ने कुवर से कहा शील वती मेरे एक ही सुता है मुझे इष्टा है। इसे आप तनु छाया सम सहचारी बना कर रखना जैसे दोनों का प्रेमानुकूल कृत्य बने दाम्पत्य पन में दुख नहीं हो। ऐसे शिक्षा देने के बाद राज घूया गद २ स्वर से गद्गद गलित हो उठो और राजा राणी पुत्रो विरहाग्नी में दुमित शरीर हुआ। कुमार के साथ गमन हो कर निज नगर अभिमुख चले। अनेक ग्राम नगर नग कानन देखते हुए मेदनी को साधता हुआ विषम पल्ली के पास भिल्लाधिपति प्रयटन करतापूर्व नीतिमे अवलोकन करता हुआ तापसजन अनवरत घृत मधू औषध का होम से धुम्र पटल नभ में उछलता मेह की शका

नगर को हस्ती का उपद्रव ।

प्रधावित हुआ । कुम्भ स्थल से हाट गृहों को ढाह रहा है । अति कठिन प्रहार कर विघाती करे (ढाये) ऊंचे प्रकार अनि वेग कर्ण ताल पत्र सम चला कर विद्रवित किए पक्षी गण (अति रभस) जल्दी प्रधावन कर रथ पक्ष निकटसेल को चलाय मान किया दृढ़दन्त प्रहारकर अटारियोंको ढाई कर घात तथा दन्त प्रहार कर अनेक जनों को उत् पिड़न कर निपादित करे सर्वस्थ भीम यमसम भ्रमण कर रहा है कल्पान्त काल के समय सम घोर शब्द उठ रहा है । महोच मन्दिर श्रेणी मथन करते त्रिक तृक चतुष्क चर्चर मार्ग में समुच्छलित हुआ । जन समुह का आक्रन्द रव नरपति ने पूछा अरे नगर में शोर कैसे सुन रहा है लोकों ने कहा हे देव आप का पट्ट हस्ती नगर में भ्रमण कर तेष नेष कर रहा है । कुमर आदि वीर पुरुषों को आदेश दिया हस्ती ग्रहणकरो परंतु शस्त्र घात कर मत मारना कुमर प्रमुख उस के सन्मुख गये हस्ती वस में आवे ऐसा कोई उपाय समझ में नहीं आया । इसी अन्तर में पूर्ण मास वाली कुलवती बहु गुरु गर्भ भार से इधर उधर चरण पड़ते हैं । प्राण भय मे कापती है शरीर यष्टि । ऐसी को गज ने आती देख कर सूंड उलालता हुआ पवन वेग सम उस के सन्मुख धावित हुआ । उस स्त्री ने हस्ती र स भरा आता देख कर आक्रन्द स्वर कर पुकारने लगी हे माता तात भ्रात्री हे नाथ मेरी उपेक्षा मत करो मेरी रक्षा करो यह करी मुझे वधने को आ रहा है । अहो प्रेक्षक लोकों निष्करुणा करीरव की प्रति स्खलना करो (हटाओ) नि शरण निर्त्राण हू । मेरी रक्षा करो कोई महा पुरुष परोपकारी वीर माता का रज स्वी और पिता का ओज से ओज स्वी सहसात दुख से बचाओ यह दीन करुण वचन कह कर मूर्छा पा कर अक्षि उन्मीलित् धसक कर मही तल पर पड़ी । वह करी वर रोष भरा उस के पास आया देख कर कुमरने विचारा अशरण युवती की उपेक्षा करना वीर क्षत्रीयों का कार्य नहीं । यह विना शस्त्र वस में आने का नहीं इसे मारना ही राज नीति युक्त है । पर नृपाज्ञा का अवेहलना है । परन्तु जो कुछ होगा सो देखा जाये गा रक्षा करना क्षत्रीय धर्म है । एक तो अबला दोयम पूर्ण गर्भवति और मूर्छागत और उन्मीलित अक्षी से धरती पड़ी हुई द्वितीय पक्ष जय कुंजर अतही प्रिय और राजा की आज्ञा है शस्त्र से नहीं मारना विषम कार्य में पड़ा हु । अथवा चाहे तात रुषो जो होवे सो करो

नृप कुमर को देश निकाला ।

मार कर कैसे मुझे सापेक्षता और पुत्र प्रकाशक कहा जावे । ५ पहले भी मैं ने अकेले ने ही पृथ्वी मंडल की रक्षा करी तो वैरियों से अब भी रक्षा करूंगा ६ जो ऐसा अनर्थ कर निश्शंकता पूर्वक विश्वस्थ (शान्ति के साथ) वस रहा है । वह निश्चय मुझे भी मार कर राज्य को हरेगा । ७ ऐसे नर पति के कहने पर निश्चय उपालम्भ पाकर दुर्मन गत राज पुरुष कुमर समीप गए कुमर को प्रणाम कर मौन पने ही निविष्ट हुए । एक स्थान पर कुमर उन्हें प्रलोकन कर हसत् हस कर बोला भो महानु भावो क्यों उद्विगन दीख रहे हो कहो यह क्याकारण है प्रशोक सोनिरुद्ध सुरसे रहे फिरदीर्घ निश्वास लेकर दु सह विरह व्याकुल आसू प्रवाह वहाते हुए दोनों आखे मसलते हुए कुमर से कहा अहो सिर शेखर निमग्न हुआ क्या कहें कुमर ने कहा कैसे पुरुष कहने लगे तुम्हारा दीर्घ काल दु:सह वियोग होगा जिस से इंगित आकार कुशल पन कर उन के अभिप्राय को जान कर कुमर बोला तात क्यों कोपे निर्विषय क्यों किया। (देश निकाले का) आज्ञा देते हैं राज पुरुषों ने कहा आप देव दुर्लभ हो कैसे कठोर अक्षर कहें आप स्वयमेव जानते हो जैसे वर्तमान काल यहा प्राप्त हुआ । तब वस्त्र पान सुपारी युक्त राज पुरुषों का सत्कार कर स्वस्थान को प्रेषित किये । कुमर ने निज सेवकों ने बुला कर कहा अहो महानु भावो वारन के सिर को हनने पर नृप कुविकल्प से विचार कर मुझे देश निकाले की आज्ञा दी है तो इस वास्ते निज २ स्थान जाओ अवसर में फिर बुलाए जायें गे। सन्मान समर्पण कर प्रेषित किए देवी शील वती से कहा हे प्रिय तुम्हें भी अपने पिता के गृह सिधाओ प्रस्तावे पुनरपि बुलाई जावेगी । साक्षणमपि वियोग दुख सहने में समर्थ नही कालिन्दी के जल सम नैनो से नीर प्रवाह वहा रही है । कुमर ने मधुर वचनों से उसे धैर्य दी परन्तु वह वियोग दुख सहने को तैयार नहीं तब कुमर ने कहा प्रिय प्रदेश में अनेक दुर्ग मार्ग आते हैं तू आजन्म से सुख में रही लालित पनमें तुम्हारा शरीर दृढ़ नहीं कष्ट सहने में योग्य शरीर की शक्ति नहीं जिस से युगल बाल्य युक्त परिभृत इस वास्ते सर्वथा संग गमन करने से विरक्त हो मेरे पर अनुग्रह कर के यह अवसर नहीं हट करने का शील वती ने कहा आर्य पुत्र मेरे पिता ने आप को विदासमर्पित करते क्या उपदिष्टकरा था कुमरने कहा मुझेयाद नही शीलवतीने जल्पित करा

कुमर की गवेपणा ।
करते नराधिप को नहीं रोके, ऐसे मन्त्रियों के कहने पर राजा के चित्त में सन्ताप सजात हुआ निज दोप के अभ्युपगत हुआ (सन्मुख) तव राजा ऐसे कहता हुआ ८ जो मैं ने विना मन्त्रण करे ऐसा अपराध किया वह सहो कोप में भरे हुए को मुझे युक्ता युक्त विचार न हुआ। जैसे तुम कहते हो कोई दोप होने पर भी निज पुत्र को ऐसे परित्यक्त नहीं करे। इस वैर छदा मुझे लक्ष्मी से छला १० जो तुम्हें इस दोप से मन्त्री पद को छोडते हो निर्लेप स्त्रा मो भक्ति युक्त की ऐसी मति होती है ११ केवल एक पुत्र राज्य समर्थ विदेश में गया तुम्हें भी मेरी उपेक्षा करते हो यह उभय उपेक्षा मैं सहने में समर्थ नहीं १२ तो साप्रत राज्य की निगरानी रखो राज्य कार्य की चिन्ता करो और कुमर की सर्वथा प्रयुक्ति करो (निगाह) तुम लोकों का रोस इतना ही प्रयाप्त है १३ एवम् बहुत आग्रह करने पर मन्त्री जन ने राजा का कथन स्वीकार किया। सकल दिशाओं मे तुरगा घिरूढ श्रेष्ट पुरुपो का निकर प्रेपित किया। कुमर की खवर करने के लिए सर्व स्थान जाकर यात्रियों ने पूछा करी परन्तु किसी मे किस दिशा मे गमन करा कोई वारता विज्ञात नहीं हुई तत कतीपय वासर वीतने पर जहां तहा गए स्थानों से अकृत कार्य ही निवत हो कर सर्व ने सभा निविष्ट मन्त्री जन समेत नरेन्द्र को कह दिया करतल से गया हुआ। चिंता मणी रत्न पुनरपि कदापि नहीं पाता है राज्य लक्ष्मी अन्याय तथा कुदंड की ताड़ना करी पुनरपि मन्दिर मे रहे नहीं ऐसेही विना कारण गाढ़ा अपमान करने पर सत्यपुरुप वापिस नहीं निवर्ते (आवे) राजा ने कहा जो हे मन्त्री पहले ही नीति वताते तो यह कार्य नहीं करता मन्त्रियों ने राजा से कहा आप रोप करते ही नहीं तो हम ने कहने का समय नहीं आता युक्त कार्य होते कार्य विगड़ने पर मनुष्य वुद्धि का विस्तार करता है वैसे पहले विचार ले तो कार्य प्रयास क्यों नहीं होवे। १

धन्य हैं उन्हें जो वुद्धि विभव से जान कर वस्तु स्वरूप को जाने पहले ही अपने सर्प सम वदन को सुग्राहित करे वस में करे २ राजा ने कहा अहो मन्त्री सत्य है यही शरीर का सनाथ है यान विना दूर पथ गामी नहीं होवे ३ मन्त्री ने कहा जिस विधि देव ने कुमर का वियोग दिया वही कुमरको शीघ्रता से लायेगा। एवम् चिर काल पश्चाताप कर पुन सेवक पुरुषोंने कुमर प्रेषणार्थ

वणिक का दम्भ ।

दानेन कीर्तिर्भवतींदु शुभ्रा, दानात्पर नो वरमति वस्तु ॥

शील वती ने सहर्ष उस वणिक को माला समर्पित करी वणिक ने विनययुक्त नर्म वचनों से कहा भद्रे इस दिन से आरम्भ कर यह माला अन्य किसी को मत देना स अधिकतर मूल्य में भी अह निश्चय ग्रहण करूं गा । यह प्रार्थना ह शील वती ने भद्र भाव मे विनती मान ली दानों अपने २ गृह गए एवम् प्रति दिन वह उस की पुष्प माला ग्रहे शील वती भी अधिक द्रविण लोभ से उस ही को देवे अन्यदा उस वणिक ने प्रदेश गमन निमित्त अनेक विविध क्रियाणे के भाड भरे भाड यान पात्र में स्थापित करे समुद्र तट पर हैं। आर शील वती ने ह्लामी वचनों से कहा हे भाग्यवती तुझे परिश्रम तो होगा परन्तु मेरे पर कृपा कर मैं कल समुद्र मे प्रदेश गमन करू गा मेरे शुभ शकुनों के लिए तू अमुक स्थान समुद्र पर आ कर कुन्द नव मालती, पाटल, मुक्तक, चम्पक, गुलाब केवड़ा, केतकी आदि के फूलों की विविध माला बना कर मुझे समर्पे गी तो मैं तुझे चतुर्गुण मूल्य दू गा । स्त्री ने हर्ष हिये से प्रतिपन्न करा सरलता से और उस के कपट का परमार्थ नहीं जाना निर्दिष्ट स्थान में समग्र प्रकार की माला ग्रहण कर द्वीतीय दिन शे शालवती वहीं गई वणिक ने देखी उसे यान पात्र मे अधिरूढ़ हुए को कुसुम माला लेने निमित्त उस ने हस्त प्रसार किया स्त्री ने भो माला समर्पन करने को मृनाल सम कामल भुज लता को प्रलम्बायमान करी व्यापारी ने हर्षाकुल माला ग्रहणकर शीलवती को भी यान पात्र में खींच कर उपरि भाग में बैठाई इस ही अन्तर में मगल तूर बजाए प्रतिष्ठित प्रवहन को विमुक्त करा (बन्धन से छोड़ा) सित पताका हिला कर जहाज गाडिर धनुर्य का बाण शीघ्र विमुक्त करे अर्थात ऐसे यान पात्र चला इत नर विक्रम कुमर शील वती के आगमन काल से बहुत देर होने पर उद्विग्न चित्त कर इत तत शील वती को प्रलोकन करने में प्रवृत हुआ । उसे अप्राप्यमान पन मे कुमर ने प्रतिवेशिकायों(पडोसीयों)को पृच्छा करी फिर राज मार्ग अवलोकन करा सम्यक प्रकार त्रिक चतुष्क चर्चर । मार्ग अवलोकन करे सकल देव कुल भवन कानन बाग बगीचों को देखे पाडल माला कार को वार्ता निवेदित करी उस ने भी सर्वादर पने शील वती को सर्व स्थान में गवे पित करी कहीं भी प्रवृत्ति (खबर) अप्राप्त होने पर शीघ्र पने निज त्रियनो

नर विक्रमराज्याभिषेक ।

अन्य जन से भी सुखे वसूं ।

इस ही अन्तर में प्रत्यामन्न वर्ती जय वर्धन नगराध पति कीर्तीवर्म नामे नरपति अनिवर्तक रूल वेदना से अपुत्रस्वही सहसात् पचत्व को प्राप्त हुआ तत सामन्त मन्त्री आदि लोक मिले पच दिव्य प्रकट करे राज्यारिह पुरुष के लिए सर्वस्थ मार्ग में प्रवर्ते सणातर में नगराभ्यन्तर कोई राज्य योग्य पुरुष अप्रेक्षते वाहिर अवलोकन करने को हस्तीनि आदि पंच दिव्य नगर से निकले जाने में प्रवृत्त हुए जहा चितातुर नर विक्रम कुमर बैठा है वहां अथ तत् अग्रगामी प्रचन्ड सू ड़ादन्ड ऊचोंकर वेगसे प्रवर कु जरको कुमर आता देखकर एवं विकल्प करा पूर्व अभ्यर्थित दैव(कर्म)स्मींहित करनेको यहां लाया वरना सू ड को उलालता हुआ हस्ती यहां क्यों आवे१ अथवा शीघ्र यह मेरे मन वा छित् कार्य सिद्ध् करने को सुव तथा स्त्री का विरह दुख से व्यंवछेद करने को देव ने प्रकट करे २ अथ गज गल गर्जारव कर निज पृष्टि पर कुमर को झट स्थापित कराकर अग्र भागस३ हयनें हेसित शब्दकरा जयतूर रव सहसात् प्रकट हुआ। सामन्त मन्त्री लोक परिवृत नगर में प्रवेश करा ४ नगर में प्रमोद हुआ। पूर्व अप्रणत पार्थिपा ने भी आकर प्रणाम किया नर विक्रम कुमर ने सर्व राज्य को स्ववस किया ५ नरसिंह नृप मे भी विशेष वृद्धि प्राप्त हुई गज अश्व रत्न भंडार विविध विषय क्रिडा शक्रेन्द्र वत् विलसता है ६ केवल दहता सुतों का दुख हृदय में सल्य तुल्य खटकता ह। नृप को विरह दुख दुस्सह अहो निशि हो रहा है दीर्घ रथोरथ व्याति करसम,७ अन्यदा जैवर्धन नगर के समीप उद्यान में अनेक शिष्य परिवार परिवृत सिंह सम दुर्धरिस, सूर सम तम प्रसार निवृत किया, चन्द्र वत् सोम शरीर, मन्दिर गिरि वत धैर्य, जात्य कनक उप परिक्षा षम है। दूर विवर्जित कर आत्मा क अन्तर शत्रु क्रोधादि को पचयाम (महा व्रत) धारण करे सर्व जगत जीवों के रक्षक क्षमा दंड लषय है मन समि ति व्यापार में प्रसारा है सदा प्रशात चित्त राहण गिरि की भूमि सम ३६ गुण मणि रत्ना के धारक तथा चारित्रिमम बुद्धि के निधान प्रत्यक्ष धर्म राशि है। त्रिभवन में दीपक उप शिव पथ दिखलाने मे और स्वार्थ वाह सम पथ पर चलाने में समर्थ निज कर्म तरू को कुठार सम काटने वाले दृढ कदर्प के दर्प रूप सर्प का विष को हरने में मणि वत् स्वय समय पर समय प्रचारक सिद्ध

सम ज्ञान नदी जल के धारक छोड़ो है पथ प्रदर्शक बहु बन् जिन चंचल मन करंग को बांधने में पाश सम मिथ्यात्व अज्ञानरूप मय समुद्र निपतित जीवों को वाविस्व प्र द सर्व पंचाचार का एकाधा भरा हुआ पात्र पात्र को तारने में व विश्वास समर्थ यति धर्म धारने में असमर्थ प्राणियों को श्रावक धर्म में संस्थापते हुए यति धर्म तथा सिद्धांत के प्रसिद्ध ज्ञाता अनुक्रमे जिन संस्तव कीर्तन पूजन करते हुए ग्रामानु ग्राम विचरते समन्तभद्रादि प्रधान आचार्य पा कर समय व्यतीत हुए। नगर में प्रसिद्ध हुई अनेक गुणों के धारि आचार्य है सुन के आने की। अतः नागरिक भाराधना कर मन निर्मल भाव सहित गुरु तथा वंदन भाव करने तथा धर्म सुनने के निमित्त भिन्न २ अभिमान का विसर्जन कर दर्शन करने को समागत हुए। मन्त्री सामंत श्रेष्ठि सेनापति सार्थवाह इंद्र नायक प्रमुख नगर लोक बहुत आए गुरु चरणों में नमस्कार कर विधिवत हुए यथा स्थान में पधारे पद पर पूर्ण भक्ति गुरु कर्म महान ज्ञाता के द्वार से अन्य आत्मा को करुणा मय जल दृष्टि सम दृष्टि से सब सत्वों को देखने थोर दर्शिकेसम मधुर वाणि से धर्म देशना देने लगे। जैसे कुशाग्र जल बिंदु चंचल से इस देह जीवन चंचल है सुर राम धाम चंचल (इन्द्र धनुष) सम सब में शरीर मन विषय होवे। कुटम्ब प्रेम तृण गिरी के शिखर से सरिता निकली सरितावत् तरल है (चपला है) चपल बहने वाले है। अन्यो भी कुलटा रंगे के प्रेम सम बदलने वाले है २ महा समुद्र की भयानक भयानपने परिवर्तित तरंग सम प्रवर्तन शील है। शरीर में अनेक आपदा विपत्ती पड़ती है २ अनेक सन्धि बंध मंत्र तंत्र दिव्य औषधि विविध उपाय करने पर भी देह का अवश्य विनाश होता है विष्ण विषय सुख भोगते हुए विषफल्ली सम दुःख देते हैं। १ मिथ्यात्व मोह से मोहितमति कर जो पाप करता है वह भव भव पर परा में भोगते हुए दीनता छूटती नहीं लगते २ पिता पुत्र कलत्रादि स्वजन के कार्य में बहुधा प्रवर्ति भी परलोक में गमन समय वह कोई त्राण शरण नहीं होवे। १ जरा का वज्र शरीर पर पड़ने से सर्व शरीर जर्जरित होता है जैसे वणी की वच कारन पर तथा राजा का राज हरने पर इस वास्ते भो भव्य जीवो जिन देव दर्शित धर्म पर प्रेम करो ज्यों जरा मरणादी की मार से बचो। ७-८ परलोक गमन करते धर्म सखाई बिना जैसे महा रण में मध्यादि संग बिना बिना

दुखी होता है ऐसे परलोक में क्लेश पाता है गुरु देव कहते हैं यदि सौख्य के कामी हो तो भोगों को छोड़ कर वीत राग भाषित वचनों पर समुद्यत हो १० ऐसे ससार असार दिखाने से अनेक नर नारी प्रतिबोध पाये द्वितीय दिवशे नर विक्रम नरेन्द्र ने आचार्य का आगमन सुन कर चतुरंग सेना से परिवृत भार्या सुत का सम्प्रयोग पूछने को समागत हुआ ।

नृप सूरी को वन्दना कर उपविष्ट हुए । नृप चिंतन लगा अहो इन्हों की भुवन आश्चर्य कारक है रूप रिधि वचन वृष्टिसम सजल घनघोषरव सम । सुन्दर सर्व लक्षण सम्पूर्ण देह है प्राणिगण को रति उपजाने वाले विमुक्तकाम क्रोध आदि शत्रु तम रहित, चन्द्र वत सौम्य, दिनकर सम तपतेज, रत्नगिरी सम आत्म गुण विभव वन्त, सागर सम धैर्यवान १ भूत भव्य भविष्यत की वार्ता इन से छिपी हुई नही तो मेरे मनोर्थ गत निज दहृता सुत आगमन की बात का निश्चय करूं २ राजा प्रस्ताव उपलब्ध कर प्रश्न करा भगवन् मेरी मति में निश्चय है कि आप तीनों काल की बात जानते हो तो मेरे पर कृपा कर भार्या पुत्र का समागम कब होगा गुरुवर ने फरमाया धर्मोद्यम करते हुए तदनतर अशुभ कर्म का क्षेयोपशम होने पर होगा । राजा ने कहा प्रभो मैं जानता हूं धर्म से पाप का क्षय होता है पुण्य बन्ध होता है उस से सर्व दुख नष्ट होते हैं परन्तु चिंता मय जीवन में धर्मोद्यम नहीं होता । चित्त निरोध सर्वापेक्ष है धर्मलक्ष हमारे जैसे को साधित करना कैसे सुल्लभहो ये तो सर्वथा प्रशाद करो अयर उपाय कहो गुरुने कहा यदिऐसे हैतो साधुजनकी नित्त सेवाकरो यही वांछित कार्य का निश्चय परम उपाय है जिस से निबिड़ कर्म दूर होवें । आत्मा ने दुर्गतिसे प्रभेदो शीघ्र कल्याण वल्लो विकसित होवे दुःख शीघ्र नाश करे लक्ष्मी अपने पास में वांछता है परिसपण(वृद्धि)पन में जो सकलका प्रभास होवे मुनि जन की सेवा से क्या २ सुख को प्राप्ती नहीं होवे । तब रोगी जैसे वैद्योपदिष्ट औषधि, पथ परिभ्रष्ट को सुमार्ग दिखायें तृष्णा अभिभूत को निर्मल सलील प्रतिपूर्ण सरोवर निवेदन जैसे स्वीकार करे वैसे राजा ने ससर्ग अभ्युपगत इव गुरु वचन माने गुरु को प्रणाम कर नृप स्वस्थान गया इत वह दोनों नृप पुत्र नदी कुले रहे तृषाभूख से व्याकुल यावत पर्णांतरे वहा तिष्टे तब एक गोकली दधि नगर में विक्रय कर उस ही प्रदेश में समागत हुवा ।

दान देना इत्यादि क्रीड़ा करना प्राकृतिक सुतों की एवम् विध चेष्टा नहीं होती तथा सर्व वस्तु में तुम्हारे दर्शन निमित आता था जब यह दोनों नरेन्द्र भवन आने को दर्शन कराने को बहुत प्रार्थना करते थे केवल मैं ही व्यापतिकर विशिष्ट वस्तु देकर दृष्टि से अदृष्ट होकर यहा आता था । अब भी बहुत आग्रह करने पर मेरा साथ अमुक्त करते समागत हुए अहो महानुभव कर हे महा राजा ऐसे शक्ति शाली मेरे पा कैसे रहें राजा चित्र पा कर परम प्रमोद 'अ ग में उत्साह भरा राजा ने प्रशाद कर गोकुल स्वामी को गोकुल ग्राम सहित ग्राम सत का स्वामी साशन करने के लिए बनाया प्रभूत वस्तु तम्बोल आदि दे कर सत्कार सन्मान कर स्व स्थान प्रेषित किया स्वयम् भी पुत्र युगल परिवृत आचाय समोप गया परमादर म व दन कर गुरु से निवेदित करें पुत्रों का समागम वृताव । आचार्य ने कहा महा राजा हम ने पूर्व कहा था उसे समरण करो राजा ने कहा भगवत् आप के नाम का भी समरण करता हू । गुरु ने कहा महा राजा यह कार्य तो क्या है गुरजन की सेवा करने से ऐसा कोई कार्य नहीं जो सिद्ध नहीं हो राजा ने कहा यह अवितथ्य है प्रत्यक्ष उत्पन्न का क्या कहना है देखो अब एक दहता दुख विच्छेद हो गुरु ने कहा जल्दी मत करो गुरु के वचन प्रतिवज कर प्रणाम कर सर्वादर म गुरु को राजा स्व स्थान गया । इन वह वेहिल नामे नावा वनिक अनुकूल पवन से प्रेरित हो कर शीघ्रता से यान पात्र चलने लगा । समुद्र में शील वतो तथा विध अदृष्ट पूर्व व्यति कर अवलोकन कर के विलाप करने लगी हा प्रिय प्राणनाथ कैसे ऐसे दुख विषम आपदा आपदी ऐसे कहकर जैसे वज्र प्रहार करनेपर पड़े ऐसे मूर्छा प्राप्तहुई उन्मिलित अक्षी हुई परसु से छेदी चम्पक लता पड़े ऐसे यान पात्र की भूमि तल पर पड़ी पासवर्ती पुरषों ने सम्यक्त प्रकार आसास्वना कर शीतल उपचार करे क्षणांतर में चेतना लब्ध हुई पुत्र पति वियोग से अत्यन्त व्याकुल हुई नैनों से जल प्रवाह बहने लगा । विलाप करने लगी कथम् हे नाथ प्राणेश्वर अपनी प्राण वल्लभा की कैसे उपेक्षा करते हो हे देव तूने निज स्वसूर पशु हस्ती के लिए निज पुत्र पोत्र तथा पुत्र वधु की उपेक्षा करी देश त्याग कराया क्या आज भी मुझे देश त्याग कराते हो हे नाथ निज कांता की शीघ्र वहार करो क्या सिंहनी को गीदड़ पत्नी बना सकता है । अपितु नहीं हे कुलदेव तुम भी क्यों सभाल

वत् सेवा करो ऐसे कहे तव जीव तव्य हतास उस वणिक ने सर्व प्रतिपन्न करा अत्यन्त भय वश हुए को तथा तू यदि सुख चाहता हैं तो देवी ने कष्ट सहरण किया अदृश्य हुई अथ अनुकूल पवन हुआ यान पात्र मार्ग सलग्न हुआ कर्ण धार रहे पुरुष हर्षे वह नावा वणिक परितुष्ट हो कर सर्वादर से शील वती के पादार्विन्द में पड़ा निज दुश्चरित्र के अपराधको क्षमा याचनाको सासति सुमन कर कहने लगो मेरी वात सुन निज पति के पास शीघ्र पहुँचा वणिक ने कहा माता जो शोक मत करो ऐसे करूगा जो आपका प्रियतमूसे शीघ्र मिलाप होवे विनय भक्ति कर भोजन कराया निरूप द्रव निमित्त एक उपरि स्थान एकात कराया तव प्रति दिन मातृ कह कर आप ह देव गुरु स्वामोवत् पूजनीय हो। यों मिष्ट वचनों से वस्त्र भोजन औषध भेसज कर सम्यक प्रतिचर्या(कार्यकर्ता) हुवा तोरको प्राप्त हुआ निज क्रीयाणा विक्रयकर भूरीअर्थ सम्पदा सचय पाया वहा से अपने कार्य से निवर्तित हुआ वह निज नगराभिमुख प्रयाण किया अन्तरे आते हुए अन अनुकूल पवन प्रसार हुआ जय वर्धन नगर परिसर(पास में) तट पर लगा प्रतिकूल वायु के कारण तव लगर विमुक्त करे सित ध्वज नोचे करे यान पात्र से नीचे उतर कर अपने सेवक परिवार से परिवृत वह नावा वणिक विचित्र प्रकार महर्व प्राभृत ग्रहण कर नर विक्रम नराधिप के दर्शनार्थ गया परन्तु तोर भये से प्रतिहार ने नृप को निवेदित करा नृपाज्ञा से राज भवन में प्रविष्ट हुआ राजा को देखा उपहार समर्पित करा भूधव ने सन्मान करा। तव समुद्र लघन व्यतिकर परिनिवेदन करने पर तट नगर राजा को ःतरूप वार्ता कथन कर निज कृत गुण दोष पढ़ने के कारण नृप समीप स्थित ःहा एक पहर इस अन्तर में प्रणाम कर विज्ञप्ति करी हे देव प्रवहण सुना है ात्री आने वालो है तो मुझे अनुज्ञा करो गमन करने की राजा भी निज प्रिया वियोग विधुर आज यह निश्चय दोर्घ निशा में विनोद कारी हुआ। ऐसे परिचिंतन कर राजा ने कहा भद्र विश्वस्थ यहीं रहो निज श्रेष्ठ पुरुषों को रक्षा निमित तेरे यान पात्र पर प्रेषित कर दूगा। हे देव जैसे आप की आज्ञा है। कह कर प्रतिपन्न करा उस्मे राजा ने श्रेष्ट रक्षक पुरुषों को वहा भेजे प्रवहण रक्षार्थ इस ही अन्तर में दोनों कुमरों ने उत्थित हो कर प्रार्थना करी यथा तात हमें प्रवहण पूर्व देखे नहीं हम ने वहुत आश्चर्य है तत् दर्शन में तो हे तात

नृप का शीलवती से मिलाप ।

कर कुमरों के परिजन ने अथ दिन कर उदय हुआ परिजन मध्य से एक पुरुष त्वरित जा कर नर विक्रम नृप को निवेदन करे हे देव आप का दइता तथा कुमर इम नावा वणिक के यान पात्र में वर्तते हैं उस वाणिक ने हर्ष भर हृदय से सविस्मय नृप ने पूछा भद्र यह क्या वृतात है उस ने भी सजात भय से कहा हे नरेन्द्र यदि मुझे अभय प्रदान वितरित करो तो जैसे विता तैसे वृतात कहू प्रार्थना भूपति ने प्रति पन्न करी तत प्रथम अनुराग वश पच दिनारदान से ले कर यान पात्र आरोपण आक्र द अशन त्याग देवी उप द्रव ॥ देवी कथन स्वीकार कर यहा जैसे आया सर्व वृतात कहा नरपति आश्रु त कर समग्र धन यान पात्र सहित निर्विषय करा देश वहार निकालने की आज्ञा करी शीलवती को करिणी परिस्कधगत सिरपर छत्र धरते चमर ढालते नगर व्यति क्रमते पद पद पर नगर नर नारियों का सत्कार सम्मान को प्रतीच्छते स्थान २ पर दीन अनाथ को वस्त्र कनक दान देते परम विभूति से प्रवेश कर निज मन्दिर में प्रवेश कराया नगर में अष्टानिक महोत्सव कराया मर्दन स्नान विलेपन करने के वाद सित महर्व वस्त्र धारण करे सुत युगल परिवृत प्रमोद भर निर्भरांगी शील वती से पुरत नृप पूर्व अनुभूत कथा का अनुरागो ने पूछा कैसे हरण प्रमुख वृतात है प्रिय शील वती ने प्रारम्भ किया । राजा सुन रहा है माला वेचन गई व्यापारी प्रलोभ दे कर सागर तट बुला कर माला देते कर पकड़ कर ऊपर यान पात्र में खींची यान पात्र के लगर खोल कर चलाया चारों आहार का त्याग शील वती के सानीधता के लिए देवी का समुद्र में उत्पात और आकाश वाणी माता सम मस्कार जय वर्धन नगरा गमन से पहले पवन प्रतिकूल होना यान पात्र का ठहराना और पुत्रों का निज कथा कहनादि सकल कथा सुनाई मुभग सुन कर अत्यन्त हर्षित होना शील वती पाटल नामे माला कार के उपकार की स्मृती सच्चरित्र तथा उपकार को याद कर राजा ने कहने लगी हे स्वामीन् कैसा प्रिय मित्र स्नेह वान नि स्वार्थ परोपकारी सदाचारी पाटल है । ऐसा और मनुष्य देखने में नहीं आया राजा ने कहा देवी सत्य है शील वती ने कहा हे नाथ प्रसाद करो लक्ष्मी प्रदान कर उस महानु भाव का प्रत्युपकार करना ही विभूती पाये का सार है वरना लक्ष्मी तो सध्या रग सम चचल और नाश धान है यत मालिनीच्छद ॥ प्रथम वयसिपीत तोय मल्प

नृप को गुरु धर्मोपदेश ।

सूर्य बोधित करे ऐसे आचार्य भव्य कमल हृदय को प्रति बोध देते वचन किर-
णों से ॥ काल क्रम मे विचरते जयती नगरी को प्राप्त हुए नगर बाहिर चपक
नामे उद्यान में अवग्रह अनुज्ञापित करा कर सद्धर्म कार्य उद्यत मति यति जन
संयुक्त स्थित हुए नगर में प्रसिद्धि हुई सिद्धांत विसारद आचार्य यहां आये ।
इति तब नागरिक जन गुरुको वन्दन करने आए चतुरंग सेना अं तेपुर परिकर
युक्त नर सिंह नृप सूरी समीप आ कर महत्व सादर कर उत्तमांग मडली
पाद पृष्ट के लगा कर सर्व मुनि जन सहित गुरु को प्रणाम कर धरनी पट्ट पर
सन्मुख उपविष्ट हुए । ससार असार रहस्य भरी धर्म देशना गुरु ने मोह
विध्वसनी शरू करी ॥ यथा चो तरफ सिंधु बलय निमग्न वट बीज वत् पाना
दुर्लभ ऐसा मानुष्यत्व को पा कर विचक्षण नर कौन प्रमाद करै (आयु)
कर्म क्षण मात्र जान कर शरीर विनश्वर हुवै ऐसे वल धन योवन में मूर्छित हो
कर लोक निर उद्विग्न कैसे हुए ॥ मन्दिर में हुत वाहु (अग्नि) ज्वाला माला
से जलते को देख कर कौन धीमान निद्रा करने की लालसा करे ॥ विदेशे
लक्ष्मी उत्सर्प (वृधि) पाने को सुखे गमन करता प्रयटन करे जो किंचित् समि
हित नहीं ऐसा दुर्ग अनन्त भय स्थान में कौन रहै ॥ सद्धर्म सबल विना इच्छि
त साध्य न पावे जो निज बुद्धि हत है वह स्थान २ पर सिदावें ॥ उस बल से
क्या कार्य है तथा धन से क्या काम है जो सद्धर्म मार्ग उपचारमें प्रयोग न करे
सर्वथा धर्म में यत्नाकरै प्रमाद परिहार कर जीव घात में निवर्ती दया प्रवर्ती में
सुख है ॥ सुत स्त्रियादि मोह सम्बन्ध हुए प्राणी पाप करते हैं । उस पाप से
सतह अधोगति में निपतित हुए ॥ अनेक लक्ष योनी में गेंद इव घब पावें ।
मार खावे वह क्या २ दुःख न प्रेषे तिक्षण अविचक्षण मति वाले ॥ तस्मात् ऐसे
जान कर यति धर्म सर्वथा समाचरे यह निश्चय तिव्र दुख जलन को धन वर्षा
सम उपशांत करे ॥ स्वर्ग अपवर्ग मन्दिरारोहन को नि श्रेणी दन्ड सरिस है
कर्म उद्भट वेल्ली विघाटन करने को तीक्षण धारा वाला एक ही कुल्हाड़ा है।
शीघ्र नि शेष सार निश्रेयस (मोक्ष) सुहस्ती पर चढाने वाला इस वास्ते अनु
सरे सम्यक सुशक्ति युक्त सत्व जो है ॥

नर सिंह नृप ने कहा भगवत् जो आप कहते हैं वह प्रव्रजा ग्रहुंगा ।
यावत् निज राज्य भार अर्पण कर स्वस्थ्य हो कर किसी जन को॥ गुरु ने राजा

से कहा अब मौन में तुम्हें एक ही हो यह कार्य तुच्छ है निर्विघ्न । जाओ जैसे हो
प्रयत्न से प्रसाद लाओ । अब गुरु को प्रणाम कर निज भवन में राजा अ
अनन्तर योग्य कार्य कर मन्त्रीयों को आह्वान करे निजाभिप्राय कहकर प्रमाण
करे इन्हीं अन्तर में पूर्व प्रेषित करे कुमर को अपर निमित्त भेज थे वह पुर
आ कर राजा को प्रणाम कर निवेदित कर नगर सैनिक भेजे के आरम्भ से क
वर्धन पुर का राज्य प्राप्त पर्यन्त तक सर्व कुमर वृत्तांत कहा तुष्ट हुआ कुम
पर्याप्त पुरुषों को विविध व अलंकारिक अर्थ प्रदान करा पुनि भार प्रमु
मन्त्रियों को कुमर को लाने को प्रेषित करे सकल प्रयाण करते हुए अब वर्ध
पुर को प्राप्त हुए नर विक्रम नृप को मन्त्री वर्ग के आगमन ज्ञात कर सपरि
अभिमुख गया वह विस्तार से नगर में प्रवेशित करे निर्विरोध जनक प्रति
पृच्छा की उचित समय में समागमन प्रयोजन कुमर को निवेदित करा अ
राजा प्रकर्षा अभिलाषी हैं तुम ने निज राज्य भार भार पन अभिलाष है
है ऐस अतः आप को लेने के लिए हम ने भेजे हैं । ऐसे सुन कर तत्क्षण ही बे
पुत्र को वहां उन वर्धन पुर के राज्य पर स्थापन कर समस्त निज स्वजनों
समेत नर विक्रम नृप शील वती तथा मन्त्री सम काल क्रम से चलते हुए अ
ती पुर परिसर(समाप)पहुंचे कुमरागमन जानके पर नर सिंह नृप चंपक माल
रानी संयुक्त बहुत दूर सन्मुख आए तथा दूरसे ही नर विक्रम कुमर जनक
माता आते हुए देख कर हर्ष प्रफुल्ल लोचन मे अश्विर से उतर कर मन्त्री
समेत सन्मुख आ कर जनक जननी के चरणों में विपतित हुआ नृप तथा रा
को पुत्र के चिर काल से दर्शन हुए ।

इस कारण से आनन्द मते अश्रियों से गाढा आलिंगन कर नि
वक्षस्थल में निवेशित किया शरीर को अपेक्षया पूजी बधावे नगर में प्रवे
कर निज मन्दिर में आए प्रस्तावे पिता माता ने नर विक्रम निजात्मज को अ
निर्गमन काल से लेकर सर्व बीती हुई व्याप्ति कर पूछा को कुमर ने समस्त क
कही तब चिर काल दर्शन समुद्भव सुख सन्दोह (समूह) अनुभवते कि
पय वासर व्यतीत हुए अन्य दिवसे नृप ने कुमर से कहा पुत्र एवं पुरुष अ
व अनुपूर्वी से परिपालन करना प्रजा को अल्प काल अब की वाञ्छा करू
इसी काल आवत में ने राज्य पालन करा इदानि (अब) तुम मैं से अधि

नरविक्रम कुमर को नृप की शीक्षा।

शरीर बल कर तथा पुण्य प्रकर्ष कर राज्य महा भार अपने विक्रम सामर्थ्यता कर तावत् अ गीकार करो कुमर ने कहा ।
हे तात इस अध्यवसाय से विरमो (विरक्त) हुवो तुम दर्शन का उत्सुक हो कर चिरकाल से अह यहा आया हू मैं अद्यपि इस वस्तु का पृथक होने का प्रस्ताव नहीं है। कतिपय वर्ष गृहमध्य वसो राजा ने कहा हे वत्स क्यों नहीं देखते हो उत्तमाग युगपत्समम उज्वल हो गया शरीर लष्ठी स्वयम् लष्टी को धारने में प्रवश हुआ क्या तू नहीं देखता है स्तोक प्रयास से ही दन्त पक्ति चलती है। लोचन युगल वस्तु आवलिका अवलोकन करने पर भी नहीं देखते शरीर में मल पड़ गए अथवा नहीं जानता कार्य सामर्थ साधनमें सन्देह होता है देहीमें ऐसे ही पश्चिम दिशा में अवलम्बित सूर्य विम्ब वत् शरीर तेज हीन हुआ रज नी बीतने पर शशि मन्डल तेज हीन फाका हो जाता है शरीर ऐसे हुआ पाहुर द्रुम पत्र वत् सूर्य उदय होता है वह अवश्य अस्थ होगा पुष्प फूलते हैं वह कुमलाते भी हैं। शरीर की लष्ठ (मनोहर) पूर्व शोभा भ्रष्ठ हुई आत्मा का प्राण (शक्ति) अवलोकन कर सामाग्री भी गृह में कैसे वसूं सो हे पुत्र प्रति बन्ध मुक्त कर मेरे वचन को प्रति पज कर (स्वीकार) धर्म सहायक बन तत नर विक्रम कुमर पिता का निश्चय जान कर पूर्व दुख भाक्रांत भोगे हुए याद नहीं करे लेप घड़ि को बज्र प्रहार से फूटे ऐसे हृदय फटने लगा पत्थर की करी हुई तथा काष्ट अथवा लेप तथा वह चित्र लिखित पूतली समचेष्टा रहकर जोर से रुदन करने में प्रवृत हुआ नर सिंह नृप ने कोमल वचनों से समा स्वासन करा बहुत अनुरोध करने पर राज्याभिषेक कुमर ने स्वीकार किया प्रसस्त दिन आने पर सर्व सामग्री सहित मन्त्री सामन्त मित्र प्रमुख महा जन समक्ष निज सिंहासन पर नर विक्रम को निवेशित करा स्वर्ण रूप्य आदि के एक सो जल भरे अष्ट उत्तर कलसों से महा विभूति से राज्य निवेशित करा राजा मण्डलाधिप पुर प्रधान लोक परिकर में नमस्कार कर सर्वादर से कहा हे वत्स यद्यपि विनय सत्यादि गुणमणि के महोदधि तुम हो तथापि किंचित् कहुंगा। यह राज्य लक्ष्मी मदान्ध करती बिना मद्य पान किये ही मद जनन है सूर शशधर कर प्रसार कोरण होते भी मद अ धकार असाध्य है तावत् कथमपि (किसी समय में भी)ऐसे न वर्तना कुल मलीन हो शशि सम कुल उज्वल को कलक न लगे

नन्दन नृप का वैराग्य ।

नेमहित करो (हनो) ८ नर सिंह राजर्षि कर्मक्षय कर मोक्ष पद प्राप्त हुए तस्य पुत्र नर विक्रम नृप राज्य द्रव्य भोग कर निज पद पर पुत्रको राज स्थापन कर ६ सम्यक्त्व सहित प्रयान्त काल जीवन पर्यन्त प्रव्रज्या पाल कर कृत दुष्कर तप चरण (संयम) महेन्द्र कल्प स्वर्ग में देव हुए १० हे नन्दन नृप पु गव यह पुरुष सिंहका चरित्र तुमने परिकथित करा जो तुम्हें हमें पूछाथा ११ तुम्हें भी हे नरेन्द्र सुन कर तैसे ही धर्मोद्यम करो जैसे उत्तम पुरुष वीर्य करों ने यथा चिर काल से निर्दर्शन करा। १२ इति नर सिंह नर विक्रम शील वती कथा समाप्तम् ।

ऐसे राजा सुन कर प्रव्रज्या ग्रहण करने के परिणाम हुए गुरु को विज्ञप्ति कर प्रवर्ते हे भगवन् आप महात्मा महा ताप से तपते हुए प्राणी को श्रुत धारा की वर्षा की क्षुधा पिड़ित को सुख खाद्य की आपन हो दुर्गति चक्र आकर्षित प्राणी की चिंता मिटाने को चिंता मणि हो गिरि गुफा के अ घ कार में आलोकन करना दुष्कर है उस में दीपक प्रकाश करता है जिन वाणि का प्रकाश जहां न हो वहा आप को वाणी रूप दीपक प्रकाश करता है नीर निधि में डूबते को द्वीप का आधार है ऐस भववारिधि में आप द्वीप वत् हो विकट अटवीमें पड़े हुए पिड़ित प्राणीको प्रशस्त स्वार्थनाथ सुखीकरे ऐसे ससार अटवीमें सयोगवियोग सारीरिक मानसिक रूपस्वापद पशुओंके बचानेमें स्वार्थ वाह हो महा कथा कथने वाले चक्षु वत् पथ प्रदर्शक हो स्व समय प्रमुख परम प्रभु हो करुणा युक्तभवन हो यह ससार प्रवाह अनादि अनवदग्र मिथ्यात्व रूप जल परिपूर्ण भवाधि है मोह महा आवर्त दुस्तर है निरन्तर पुनर भव जन्म मरण रूप कल्लोल की माला से आकूल है कषाय कलुष रूप पक स सकुल तट है विविध आतक रोगादि नक्रचक्र से आकूल है। विचार गोचर उत्तीर्णको आच्छादित करनेको अज्ञान रूप तीमिरसे भराहुआ है प्रकृति दुग्राह्य मध्य है जिस का प्रकृति से रोद्र है प्रकृति निपाक दारुण है प्रकृति निर्गुण है प्रकृति क्लेश आत्मा को दुख सक्षोभ का कारण है समाम वत् सर्वथा चिंतवन करते भी रोम राजी को पार परम भय जनक है ऐसा भव समुद्र है इस को पार करने वस्ते निर्बंध प्रव्रज्या रूप यान पात्र सुबद्ध है ज्ञान दर्शन विधि से सच्छादित किये हैं छिद्र सम्वर रूप वज्रलेप से रोक दिये हैं तपरूप पवन के वेग से चलती हुई दुर्ग मार्ग में भी क्षोभ है विविध दया क्षमादि वस्तु से भरी हुई प्रतिपूर्ण

अणुकय जणाण ग्गह भावम्, सम्म पसस तां ॥ ४
करुणा अत्यधिक गुरु पंच विध आचार धारने में धीर अनुवाक्यों से
र मनुष्य मात्र पर अनुग्रह सम्यक प्रकार प्रममा करता हुआ। ४

सद्धम्म सिढिल चित्ते, सत्ते धम्मे थिरि कर माणे।
परियाय पनुह थेरे, उववूह तोय भयवते ॥ ५

शुद्ध धर्म में अस्थिर चित्त वाले सत्व प्राणी को धर्म मे स्थिर करने
ाले परियाय स्थविर श्रुतस्थविर वय स्थविर उप ब ह मे सेवा साहयता
करता हुआ भय श्रुत करने वाला मुनि। ५

स समय पर समय, परूढ गाढ सगय सहस्स।
निम्महणे सुस्सु सतो, निच्च बहुस्सुए साहुणो पवरे ॥ ६

स्वय समय जिन वाणी सिद्धात पर समय अन्य दर्शन के शास्त्र प्रवर
बद्धान हजारोंसमय के हरने वाले ऐसे बहू श्रुति की साधु की नित्य प्रवर सेवा
करता हुआ।

माम दुमाम तिमा साई, विविह तव कम्म करण पडिबद्धे।
विस्सामणा इणा, तहतवस्सिणो पढिचर माणो ॥ ७

माम तमणादि विविध प्रकार तप करने मे प्रतिवद्ध है उन को विश्रा
मणादि तथा तपस्वी की प्रतिचर्या करते हुए। ७

अगाणग सव्वे, सुय मि सव्वन्न निक्छियत्थमि।
अणव स्यग यचित्तो, तयन्थ परिभावणचित्ते ॥ ८

अग सूत्र अथोत उपाग मूलच्छेद प्रकीर्ण कादि श्रुतमें सर्वज्ञ पुरुषों
के द्वारा निश्चय अर्थ में अनवरत निरन्तर गत चित्त उन्हीं में ही ध्यान है
तार्थ परिभावना मे उद्यान ह। ८

ततत्थ सद्दहाण, समण पवर वत्थु मि।
सकाई दोस जाल, परिहरमाणु पयत्तेण ॥ ९

तत्त्वार्थ श्रद्धानमें प्रधान सम्यक्त्व प्रवर वस्तु में संकादि दोषों का
जाल को परिहरता हुआ प्रयत्न वन्त ह। ९

नाणाईण उवयार पमुह, विणयमि बहु विगप्प मि।
अइयार पर परव वज्जतो निवुण बुद्धिण ॥ १०

आदि साधु यह दसों की व्यावच्च करने में वर्ते। १६

ए सिपि तहाविह आवयव सजाय दुत्थ चित्ताण।

ओसहदाणाईहि समाईभाव च जणमाणो १७

यह उपर कहे हुये आचार्यादि को तथा विध आपद वस होने पर व्याकुल चित्तवन्त को औषधादि दान से समाधि भाव उपजाता हुआ। १७

अक्खर गाह मिलोग मेत्तेय मव्वया अपुव्व सुय।

अहिगय सूत्तत्था विहुसुयाणु रागेण पढमाणो॥ १८

अक्षर अकार आदि पद चतुर्थ भाग गाथा दिक का तथा विभक्ति जिस के अन्त में हो गाथा आयच्छदादि श्लोक अनुष्टप आदि जो अपूर्व श्रुत है अधिगत सूत्रार्थ को भी श्रुत अनुराग कर के पढ़ता हुआ। १८

भत्ति तह बहुमाण तद्दिट्टत्थाण सम्म भावणय।

विहिगहण चिय निच्च सुयस्सम्म पया मितो॥ १६

भक्ति तथा बहुमान यथार्थ देखे हुये से अपनी आत्मा में अनुभावते विविध ग्रहण करने में तत्पर निरय श्रुत का सम्यक प्रकाशित कर प्रभावना करता हुआ। १६

भव्वाणधम्मं कहणेण पई दिन्न पव्वयणु म इ परम।

सोयवाय माहणेणय कुणमाणो सुद्ध चितसा॥ २०

भव्य जीवो को धर्म कथा कथन कर के अच्छी तरह प्रति दिन प्रवचन उन्नति साधन कर के करते हुये शुद्ध चित मे। २०

ग्याता सूत्र अध्यन आठमे पाठ तथा वृतिमे कहे। इम्मेहियणा कारणे हि आसेविय बहुली कएहि तित्थयर नाम गोय कम्म निवत्तेसु अरहत सिद्ध पवयण, गुरु, थेरे, बहुस्सूए, तवस्सीसु वच्छल याइत्तेसि, अभिक्खणाणोवओगेय। १ दसण विणोए, आवस्सएय सीलव्वयेय निरयारे खणलव तव च्चियाए वेआवच्चे समाहीए, २ अपुव्वणाण गहणे सुय भत्ती पवयण पभावणेय, एहि कारणेहि, तित्थयरत्त लहय सोउ।

यह बीस कारण कर के आसेवित किये घनी वार तीर्थ कर नाम गोत्र कर्म निस्पति किया। अर्हन्त १ सिद्ध २ प्रवचन ३ वृतिमे (तत्र प्रवचन श्रुत ज्ञान तदुपयोगा अनन्य त्वादा साघ) प्रवचन वह यहा श्रुत ज्ञान तेहना अनन्य उपयोग के कारण यिकलपे चतुर्विध साघ ३ गुरु धर्मोपदेशक स्थविर

तत्व रहस्य ।

विंसतिम् प्रिय मित्र चक्रवर्ती जन्म ततः महा शुक्र चतुरविंसतिम् जन्म तत पंच विंसविम् नन्दन नृपति जन्म षष्ट विंसतिम प्राणत कल्प जन्म अमुना प्रकारेण षष्ठ विंसति जन्म समाप्त ।

अथ वर्द्धमान् श्री महावीर देव का सप्त विंसत्यम् जन्म अधिकार सम्यक प्रकारेण कथयते श्रूयताम् स्वस्थ चित्तेना ।

जैन धर्म के शास्त्रों में छ आरे माने गये हैं । प्रथम चार कोटा कोटी सागर का सुखमासुखम १ द्वीतीय तीन कोटा कोटी सागरोपम का सुखम नामे २ तृतीय सुखम दुखम जिस में चौरासी लक्ष पूर्व और तीन वर्ष सार्ध अष्ट मास बाकी रहे अब श्री ऋषभ देव भगवान का जन्म हुआ था उन्हों ने मनुष्य की नीति रहन सहन खान पान आदि की और पुरुष की ७२ कला । स्त्री की ६४ कला का ज्ञान सिखाया था राज्य नीति व्यापार नीति कृषि नीति आदि कर्म प्रधान रचना बता कर तथा सिखा कर ८३ लक्ष पूर्व तक राज्य कर फिर दिक्षा ले कर एक सहस्र वर्ष छद्मस्थ रहे तीन ज्ञान युक्त फिर केवल ज्ञान प्राप्त किया । राग द्वेष रहित हो कर आत्म कल्याण का रास्ता बता कर चार तीर्थ स्थापन किये साधुधर्म पुरुषोंका प्रथम तीर्थ १ साधवी धर्म स्त्रीयोंका दूजा तीर्थ २ श्रावक कहो चाहे उपासक धर्म जैन वाणी में श्रमणों की उपासना करे धर्म को श्रवण करे इस वास्ते श्रमण उपासक श्रावक धर्म पुरुषों का ३ श्रमणोपासिका श्राविका स्त्रीयों का धर्म ४ यह चार तीर्थ भवसागर को तिरने के लिए जगम तीर्थ स्थापित किये साधु साध्वी का पंच महा व्रत जिस को पंच याम भी कहे जाते हैं । अहिंसा १ सत्य २ अस्तेय ३ ब्रह्मचर्य४ अकिंचनता ५ निर्ग्रन्थ धर्म जिन के कोई ग्रन्थ धन नहीं इस लिए जैन धर्म को निग्रंथ धर्म कहा जैन शास्त्रों में जिस ने राग द्वेष जीत लिये वह जिनेश्वर देव है इस लिए जिनेश्वर भगवान कहते हैं अर्थात् किसी व्यक्ति का ही भगवान नहीं मानते जिस व्यक्ति में रागद्वेष न हो- वही जिन भगवान हैं चाहे एक व्यक्ति ने जन्म लिया- वह उस ही जन्म म भगवत पद प्राप्त करेगा । परन्तु जहा तक उस व्यक्ति न रागद्वेष आदि शत्रुओं को नष्ट नहीं किये वहा तक वह जिनेश्वर भगवान का स्वरूप यथार्थ उस में नहीं गृहस्थ में कुमर पद राज्य पद, वासु देव पद बल देव पद चक्रवर्ती पद, का

जैन धर्म की पुरातनता।

आरम्भ परिग्रहादि से विपरित कर्मों का आरम्भ करते हुए काल क्रम से धर्म आचरण करने के लिए शिक्षा दी। एकान उपाशात सर्व जीवों के मित्र करुणावन्त धर्म धर्य यशकर प्रजा को आनन्द देने वाले मृत्यु को रोक कर गृहस्थ अवस्था में लोकों ने नियमित किये।

तथा अग्नी पुराण अध्याय १० नाभीस्व जन यत्पुत्र मरुदेव्या महा द्युति ऋषभ पार्थिव श्रेष्ट सर्व क्षत्रस्य पूर्वज ४० ऋषभात भरतो जग्ये, वीर पुत्र शताग्राज सोभीगिष्याप्य भरत पुत्र प्राव्राज्य मारिथत ४१ हिमाह्वा दक्षिण वर्ष, भरताय निवेदयत तस्माद् भारत वर्ष, तस्य नाम्ना विदुर्बुधा४२

नाभि नाम राजा के मरु देवी महा द्युति वन्त से ऋषभ देव राजाओं में श्रेष्ट सर्व क्षत्रियों में पूर्वज ४० ऋषभ से भरत उत्पन्न हुआ शतपुत्रों में वीर अग्रसर भरत को राज्याभिषेक कर ऋषभ प्रव्रज्या में स्थित हुए ४१ हिमाचल से दक्षिण की बाजु भरत को निवेदित किया। इस वास्ते भारत वर्ष कहलाया उस के नाम से भारत है। विद्वज्जनों ने कहा। ४२

इत्यादि त्रितीय आरे तीन वर्ष सार्ध अष्ट मास बाकी रहे जब ऋषभ देव अष्टा पद कैलाश हिमालय का एक हिस्सा है उस पर छ (षट)दिनका अन शन कर समाधि लगा कर आत्म समाधि में लीन हो कर मोक्ष को प्राप्त हुए फिर तीन वर्ष सार्ध अष्ट मास बीतने पर चतुर्थ आरा लगा एक कोटा कोटी सागरोपम का जिस में से बयालिस सहस्र वर्ष कम इस काल में अजित आदि त्रेविसति तीर्थ कर हुए जिस में अन्तिम तीर्थ कर महावीर देव से पहले एकादस चक्रवर्ती हुए। भरत चक्री के पीछे पार्श्व नाथ भगवान से पहिले नव वासु देव हुए श्री श्रेयांश नाथ भगवान अग्यारवा तीर्थ कर के समय मे त्रिपृष्ट प्रथम वासु देव जो महावीर भगवान का जीव १८वा भव वर्णन जो इस चरित्र में लिख चुके है और अचल नामे बलदेव के बाद में अष्ट वासुदेव हुए अन्तिम कृष्ण वासु देव बल भद्र बलदेव हुए २२वा नेम नाथ भगवान के समयमें इनके पिता वसुदेव के पुत्र और नौ वासुदेव के नौ प्रति शत्रु प्रति वासुदेव हुए। प्रथम अश्वग्रीव अन्तिम जरासिंध और इन के वक्त में नौ नारद भी होते हैं चौथे आरे में एकादश रुद्र भी हुए है। तीर्थ कर चक्रवर्ती वासु देव बल देव प्रति वासु देव उक्त त्रिषष्ठी, श्लाका पुरुषों का चरित्र का महा काव्य हेमचन्द्र

अन्तर मुहुर्त का काल लागता है चवन काल सूक्ष्म काल है चवन कीया केवाद भी जानते थे में यहा उत्पन्न हुआ। देवानन्दा ब्राह्मणी सुख शय्यामें सुती हुई को अर्ध रात्री के समय चतुर्दश महा स्वप्न गज वृषभादि उस वक्त अदृष्ट पूर्व महा स्वप्न को देख कर अर्ध प्रमिला से जागृत हुई और महा हर्ष प्रमोदवन्त हो कर ऋषभ दत्त ब्राह्मण अन्य शय्या पर सुते हुए थे वहा पर आ कर हस्त स्पर्श आदि से जगा कर शिष्ट चतुर्दश महा स्वप्न कह कर सुनाए ऋषभ दत्त ने स्वप्न फल विचार कर कहा हे प्रिय धन लाभ तथा पच प्रकार के विषय सुखों की सामग्री और निरोगता प्राप्त होगी। ऋग वेद, यजुर्वेद, साम वेद अथर्व वेद चार वेद में विदु ससार प्रसिद्ध पुत्र लाभ वो प्राप्त होगी ऐसे सुन कर विकल्प रहित सन्तोष सहित अपनी शय्या पर गई सुखसे गर्भ को वहाती हुई रह रही है। गर्भ में आए उसी दिन से धन धान्य दो पद चौपदादिक की वृद्धि होती रही मघ उन्नत हुआ और आकाश में हस मडराने लगे। भगवत श्री महा वीर को देवानन्दा की कुक्ष में रहते द्वाअष्टति दिन बीते। ८३ मीवें दिन सौधर्म कल्प निवासी सोधर्मेन्द्र सुधर्मी सभागत द्वात्रिंशत लक्ष विमाना धिप चतुअर्सीति सहस्र सामानिक देवता इन मे चतुगुर्णा आत्म रक्षक देवता जो पुलिस्वत समझने त्रयत्रिंशत् देवता सहित सोम यम वरुण वैश्रमण ये पूर्व दक्षिण पश्चिम उत्तर दिशा के चार लोक पाल सहित तीन परिषद् देव तथा देवियों के और अनेक देव देवी सहित बैठी हूए जम्बूद्वीप भारतवर्ष को अवधि ज्ञान से अवलोकन किया जैसे हस्त तल पर मुक्ता फल को देखे तैसे दक्षिण महानकुडन पुर में ऋषभ दत्त की देवानन्दा ब्राह्मणी की कुक्षमें भगवत चरम तीर्थ कर को देख कर आनन्द से विकसित नयन कमल हुए समस्त शरीर की रोमराजी हर्ष के वश खडे हुए सभ्रमता से स्वय स्थान से चलित कटक तुटित केडर किरी अर्थात मुकुट कुडलादि भूषण लक्षण सींहासन को मुक्त कर पाद पृष्ट से उतार कर वैडुर्यहरित रत्न अरिष्ट कृष्ण रत्न तथा रक्त रत्नों से मडित (पादुका) पेरों से निकाल कर एक शाटिक वस्त्र का उत्तरासन कर निलाट तट दुर कर सपुट चढा कर सप्त अष्ट पद तीर्थ कर के अभिमुख जाकर दक्षिण यानुजमीन पर स्थापित कर वामेगोडे को जमीन से चार अगुल ऊचा कर तीन बार मुद्ध शीश को महि पर लगा कर मस्तक पर अजलि कर भक्ति

भगवत त्रिशलादेवी की कुष में

गिनी को छोड़ कर आप कहा चले गए हे करुणाकर मेरे पर निस्करुणावत क्यों हुए परन्तु यह कहावत सत्य है [तथापि पत्र त्रितिय पलासे] इस ही ई जम्बूद्वीप दक्षणार्ध भारत में वर्तमान.विहार प्रान्त में, वैसालियापुर का ही हिस्सा उत्तरक्षत्रीय कुण्डनपुर सन्निवेश था विचित्र प्रासाद सहस्रों कर आकाश को अवरुद्ध किया है अनिन्द कर परिपूरित उस नगर में मानो कांटे तो कमल नाल पर है कुटिलपन कोदन्ड उपर है निष्ठुरपन पयोधर पर है मित्र विरोध रजनी के है बन्ध [मारवणी]कुमारी पर है वहा सत्य भाषी प्रियवद करुणा पर वैश्रमण समान अनवरत दान रसिक कल्प वृक्षवत सारद् सलिलवत अकलु-षित लोक जहा वसते हैं वहा चारों दिशा में अरहट है घटी मुख से जल सिंचन कर रहे हैं सर्व ऋत में फल देने वाले अनेक तरुगण जाम्बू आम्र नींबू मतगादि फल दने वाले गुलाब म.ग.१ ा जुई आदि लतायुत नन्दन वन सम मनोहर बाग हैं लक्ष्मी का सकेत स्थान त्रिविध आश्चर्यवन्त लीलावन्त भवन है धम का मुख मडन है वसुन्धरा रमणी का पति वहा पुरीन्दरवत दान में धनपति लोक पाल सम मर्यादावन्त जलधिवत अनेक नरेन्द्र मडलि माला नमसित क्रमकमल है जिस के भुवन प्रसिद्ध सिद्धार्थ नामे राजा राज्य कर रहा है उस राजा क मदन की रति! मधुसूदन की लक्ष्मी ऐसी त्रिशलादेवी नामे रानी है यथार्थ अभिधान धारी नन्दी वर्द्धन नामे पुत्र है सुदर्शना नाम पुत्री है आश्विन् कृष्णा त्रयोदशीके अर्धरात्रि समय उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्र चन्द्र साथे योगवन्त है कोमल हसवस्त् उज्जवल वस्त्र सुन्दर प्रछादित शय्या पर सुख से सोती हुई त्रिशलादेवी को पूर्व जो गर्भ था देवानन्दा की कुख मे सक्रामित कर दिव्य शक्तिवन्त हरिणगमेशी देवने अशुभ पुद्गल अपनयन कर शुभ पुद्गलों का सचार कर भगवत को त्रिशला देवी के कुख में मुक्त कर नमस्कार कर के जहा से आया वहा गया।

इति श्री सज्जैन वीर मार्गीय मुनि ऋषि रामेण विरचिताया बृहत् हिंदी भाषायां भगवत श्री वर्धमान जीवन चरित्रस्य तीर्थ कर गोत्र प्रति बधनामन द्वितीय प्राभृत समाप्तम् ॥

नोट – गर्भ सहरण श्री जैन दीगम्बर नहीं मानते पहले से ही त्रिशला देवी की कुख से अवतरित मानते हैं।

शुद्धी पत्र

प्रथम कालम में पृष्ट संख्या, द्वितीय कालम में पंक्ति संख्या और तृतीय कालम में शुद्ध शब्द हैं।

प्रस्तावना में

१ १४ मासा
२ ११ मूलक
२ १६ मूलक
२ २० दीपक
४ १३ भारद्वाज,
८ १३ जन्म

भूमिका में

७ २६ प्रश्न व्याकरण
८ २९ आचार संहिता
८ २५ आद्य स्रोत

अणुक्रमणिका में

१२ १० प्राणत कल्प
१२ २१ श्री ऋषभ

प्रथम प्राभृत में

१ ४ महाव्रत
७ १ त्यक्त
१० १४ पाद पोप
१२ १९ देशना से
१४ १८ लोकों के
१३ १८ सुरलोक
१६ ५ अनङ्ग
१९ १ नाक
२० २२ कुमार
२१ २८ नहीं
२३ १५ आदेश
२५ ६ रहीत
२६ १० मोहम्मो
२८ १ साधु को
२९ १६ अत्वरित
२९ १९ ऐषणा
३० १ इसने में
३० ४ हर्षित
३० १६ देखकर
३० १९ निष्कारण
३० २८ सूत्रार्थ
३१ ३ युक्तायुक्त
३२ ७ पद्मराग
३२ १८ भाग
३२ २७ नृप
३५ १७ देवियों
३५ १६ श्रेयो
३५ २० श्रमण
अतिरेक धन
३५ २१ ईश्वरित्व
३५ २८ सर्वादर से
३६ २५ बैठा है।
३८ २१ कहने पर
३९ १० यौवन वय में
३९ १८ याद नहीं
४० २ वादित्रादिरव नहीं आते
४१ ७ अगम्य है
आपदा
४१ ८ पुत्रों
४२ ६ कविश्वरों से

५९	०८	परिधाये
५९	२१	वृतात
६०	२०	आकर्णित
६२	२	सार्धबारह कोटी स्वर्ण
६१	२१	अध्यन
६२	२२	कुछ दिन
६२	२६	कृपि
६२	२४	स्त्रिलाकार
६३	७	भर्तृ
६४	७	आनन्द
६४	२४	तरणवत
६४	२६	माघवई
६६	१३	शस्त्रों
६६	२४	महापुरुष
६७	२६	स्वर्ग
७०	१५	यौवन वय
७२	१	चित से
७२	९	शरीर परिवार
२७	२५	जाई दोसेक्क
७५	५	पारणोणां
७५		सुत्तथ्य
७५	८	छंडिदं
७५	२७	प्रवर्त्तने
७६	१	सामर्थ्यता
७६	२१	मव्यजन
७६	२२	पोटिलाचार्य
७६	२१	भव्यजन
७६	२८	परिवार
७७	३	आनन्द
७७	२१	ईश्वरता
७८	४	खोरजी
७८	२२	प्रीति
७८	२४	ईम

द्वितीय प्राभृत में

१	३	द्विजा
१	१०	कमल
१	१०	शक्रोपम
२	९	भम्भा भेरी
३	२५	नृप
४	७	देशाधिप
४	२७	प्रशाद
५	१९	सहस्त्र
५	२६	द्वितीय
६	१५	प्रस्तावे
७	१	तुलते २
७	१५	नराधिप
८	५	पुरुषों ने
८	१४	सह
८	१४	मत्तामातग
८	१९	आपनेभी
९	१६	ग्रहण
१२	२५	कोई भी
१३	८	लघुबन्ध वने
१३	२३	मृत्यु त्यु
१४	१८,	नारियल
१४	१६	मत्त कुन्द
१४	२६	भृष्ठ
५	१	विशेष
१५	२८	तिथि
१६	१	उद्वहता
१६	२	अष्ठोत्तर
१६	२३	भद्र
१७	४	समाणागण
१७	२८	प्रशाद
१८	१९	उपशोभीत
२०	१५	देकर
२०	१८	चम्पक माला
२०	२३	हुवा
२०	२५	बालवादि
२०	२६	हुआ
२०	२६	पूर्ण
२०	२७	प्रसूत
२१	१७	अवसरे

—ग्रन्थ छपाने में द्रव्य सहायक—

१- ला० रामसिंह कटेमरिया रु० १०१ मो० पडाव महाजनान रो०
२- ला० मनोहरलाल रतीराम रु० २५ अनाज मण्डी रोहतक
३- ला० वैजनाथ रु० ५० भिवानी वाले काठ मण्डी ,,
४- ला० नन्दकिशोर रु० २५ बाहर वाले कचहरी ,,
५- मातूराम रु० ३० बोहर वाले पडाव मोहल्ला ,,
६- ला० सीताराम हीरालाल रु० ५५ कवाड़ी अग्रवाल ,,
७- ला० हुकमचन्द रु० १२-८ अग्रवाल गोहाना
८- ला० प्रीतमचन्द रढानिया रु० १० दिल्ली
९- ला० सत्यनारायण रामसिंह रु० ५० अग्रवाल नलवा वाले
१०- ला० दरबारीलाल रु० ३१ अग्रवाल नलवा वाले
११- ला० जवाहरलाल पसारी रु० २५ अग्रवाल जि० हिसार
१२ ला० महीराम जैन रु० १५ कलानौर वाले जैन
१३- ला० फूलचन्द जोगीराम रु० २५ ,, ,,
१४- ला० किदारनाथ की पत्नी रु० ३७ ,, ,,
१५- ला० भिखूराम नाहनाराम रु० ७१ ,, ,,
१६ ला० निहालसिंह रु० ३१ ,, ,,
१७- ला० महीराम की पुत्री माया रु० १० ,, ,,
१८- बशीलाल रिछपाल की पत्नी रु० १० ,, ,,
१९- ला० बनारसीदास आत्माराम रु० ३१ ,, ,,
२०- ला० रणबीर पसारी रु० २५ बेरी वाले
२१- ला० कालूराम जैन रु० ४५ कलानौर वाले
२२- ला० रामेश्वरदास जैन रु० २० कलानौर वाले
२३- ला० सुन्दरलाल जैन रु० २१ कलानौर वाले